पलाश

अंक 05, जनवरी 2025

जलवायु परिवर्तन

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT LUCKNOW
www.iiml.ac.in

पलाश
PALASH

© पलाश - पंचम अंक - जनवरी, 2025

संपादक
प्रोफेसर माया कान्त अवस्थी, कृषि व्यवसाय प्रबंधन

सहयोग
एम. के. सिंह, हिन्दी अधिकारी (प्रभारी)
विश्वनाथ सिंह, हिन्दी अधीक्षक

प्रकाशक
भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
प्रबन्ध नगर, आईआईएम रोड, लखनऊ
पिन 226 013, उत्तर प्रदेश, भारत

संपर्क
संपादक, पलाश
भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ
प्रबन्ध नगर, आईआईएम रोड,
लखनऊ 226013, उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाषः 0522-6696965
ईमेलः hindi@iiml.ac.in
वेबसाइटः www.iiml.ac.in

'पलाश' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं।
संपादक एवं संस्थान का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की गृह पत्रिका 'पलाश' बिक्री के लिए न होकर
केवल आंतरिक वितरण के लिए है।

संदेश

प्रोफेसर अर्चना शुक्ला
निदेशक

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की स्थापना वर्ष **1984** में हुई थी, जिसने **27** जुलाई, **2024** को **40** उल्लेखनीय वसंत पूरे किए। चार दशकों की अवधि में, संस्थान ने न केवल देश, बल्कि पूरे विश्व में एक उत्कृष्ट व्यावसायिक शैक्षणिक संस्थान के रूप में अपनी उपस्थिति को सुदृढ़ किया है।

पिछले दशकों में, संस्थान ने विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्षेत्रों में निरंतर प्रगति की है। वर्ष **2023-24** में सभी पाठ्यक्रमों में स्नातक करने वाले कुल छात्रों की संख्या बढ़कर लगभग **850** हो गई है, जिसमें सकारात्मक रूप से छात्राएं **29%** हैं। परिवर्तित होते वैश्विक व्यावसायिक रुझानों को दृष्टि में रखते हुए, आईआईएम लखनऊ ने विश्वस्तरीय शिक्षण प्रतिष्ठानों के साथ साझेदारी की है। संस्थान ने दो नए केंद्र – लोक नीति हेतु केन्द्र और रेखीः आनंद के विज्ञान हेतु उत्कृष्ट केन्द्र की स्थापना की है। संकाय द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों की संख्या **2023-24** में बढ़कर **142** हो गई है, जिसमें लगभग एक तिहाई प्रकाशन, उच्च प्रभाव वाले जर्नलों में हुए हैं।

संस्थान ने अग्रणी वैश्विक शैक्षणिक केन्द्र के रूप में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को बनाए रखा है जो विभिन्न संगठनों के वैश्विक रैंकिंग में स्पष्ट रूप से दृश्यमान है। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ एएमबीए और एएसीएसबी (प्रतिष्ठित वैश्विक श्रेणी प्रदाता संगठन) द्वारा विशिष्ट दोहरी मान्यता प्राप्त संस्थान है।

तेजी से परिवर्तित होते इस सूचना प्रौद्योगिकी के समय में, राजभाषा हिन्दी भी वैश्विक पटल पर उल्लेखनीय रूप से प्रगति कर रही है। तकनीक भौगोलिक दूरियों को कम करने के साथ ही भाषाई दूरियों को भी मिटाने का कार्य कर रही है। ऐसे में, लोकप्रिय भाषा के रूप में हिन्दी भी विभिन्न कार्यक्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति के माध्यम से प्रगति करते हुए, उस क्षेत्र विशेष को सुगमता प्रदान कर, उनकी प्रगति के मार्ग को प्रशस्त कर रही है। हमारे संस्थान की पत्रिका-पलाश भी पांचवें अंक के साथ, निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है और राजभाषा के प्रति सृजनात्मक योगदान के लिए सदैव तत्पर है। हमारी ओर से पलाश, अंक-5 के सभी योगदानकर्ताओं को बधाई।

शुभकामनाओं सहित।

संपादकीय

प्रोफेसर माया कान्त अवस्थी
कृषि व्यवसाय प्रबंधन

भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म और दर्शन ये पांच विधायक तत्व मिलकर राष्ट्र निर्माण का कार्य करते हैं। इससे मिलकर अस्मिता का निर्माण होता है जिसे अभिव्यक्त करने के लिए भाषा अपनी भूमिका का निर्वहन करती है। अतः राजभाषा हिन्दी का प्रश्न भाषा मात्र का प्रश्न न होकर हमारी अस्मिता का प्रश्न है। वहीं, हिन्दी का विषय व्यक्तिगत के साथ ही, राष्ट्रीय भी है।

आज हिन्दी का समावेशी रूप हम सभी के सामने है कि किस प्रकार से व्यवसाय, विज्ञान, अर्थशास्त्र और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। हिन्दी में मौलिक शोध, इसे और अधिक समर्थ बनाएंगे, जिससे वैश्विक स्तर पर हिन्दी की स्वीकार्यता को बढ़ावा मिलेगा। प्रत्येक नया विचार जिसका माध्यम हिन्दी होगी, वह निश्चित रूप से इस भाषा को समृद्ध बनाएगा।

पलाश के पांचवें अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। आप सभी के सहयोग से, पलाश पुरस्कृत होने के साथ ही, एक सार्थक रूपरेखा ग्रहण करती जा रही है। पलाश के प्रथम अंक से ही, यह मन्तव्य स्पष्ट था कि हमारी पत्रिका विभिन्न विधाओं में गद्य व पद्य के माध्यम से सृजनात्मक संवाद करेगी। इसके साथ ही, कोविड-19, भाषा, नारी शक्ति और योग से स्वास्थ्य जैसे प्रमुख विषयों पर विशेषांक के माध्यम से सार्थक व वैचारिक हस्तक्षेप का प्रयत्न पत्रिका द्वारा किया गया। यह विस्तार आप सभी के सहयोग से सार्थक हो पाया है।

इस पत्रिका के लिए मूल्यवान सुझाव तथा योगदान हेतु आप सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

हार्दिक धन्यवाद सहित।

संदेश

कर्नल संजीव बख्शी (से.नि.)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

राजभाषा नीति में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हमारा संस्थान निरंतर सकारात्मक प्रदर्शन कर रहा है। जनवरी, 2023 और दिसम्बर, 2024 में माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप-समिति के निरीक्षण बैठकों में, संस्थान ने अपने किए गए कार्यों के आधार पर सफलतापूर्वक प्रतिभागिता की। नराकास की बैठकों में भी पलाश को सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही, राजभाषा से संबंधित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हिन्दी अनुभाग के कार्यों पर संतोष व्यक्त किया गया है। संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी पखवाड़ा, तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, तिमाही राजभाषा कार्यशालाएं व अन्य कार्यों को निरंतरता के साथ किया जाता है।

कार्यालयी कार्यों में द्विभाषी अभियान के सहयोग से, हमने विभिन्न राजभाषा कार्यान्वयन लक्ष्यों को प्राप्त किया है। इसके साथ ही, यह आशा करते है कि आने वाले समय में हमारा संस्थान शेष लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में सक्षम होगा। इसके लिए संस्थान, समस्त कार्य बल के सहयोग का आकांक्षी है, क्योंकि हिन्दी का कार्यान्वयन हम सभी का साझा दायित्व है।

इसी क्रम में, संस्थान की हिन्दी पत्रिका- पलाश, अंक-5 का प्रकाशन संस्थान समुदाय के सहयोग से किया गया है। समुदाय के रचनात्मकता योगदान और हिन्दी भाषा के प्रति उत्साह व प्रेम का ही परिणाम है कि यह पत्रिका भाषा के विविध रंगों के साथ प्रस्तुत है। मुझे पूरा विश्वास है कि पलाश का प्रस्तुत अंक सुधी पाठकों की सराहना के योग्य सिद्ध होगा। इस अंक के साथ जुड़े समस्त सदस्यों को उनके विशेष योगदान लिए हार्दिक आभार के साथ ही, इस अंक के भी सफल होने की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

अनुक्रमणिका

1.	जलवायु परिवर्तन : कारण, दुष्प्रभाव और रोकथाम के उपाय	हिमांशु सिंघल, पी.एच.डी. 23012	1
2.	जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती	सुमित कुमार गुप्ता, कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक	4
3.	हमारी धरती	सुमित कुमार गुप्ता, कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक	7
4.	जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती	अंकित पाण्डेय, अधीक्षक	8
5.	जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती	अज़मी सलमान, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)	11
6.	जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती	ज़ोहरा ख़ातून, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित)	13
7.	कदम बढाएं : धरती बचाएं	धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)	15
8.	जलवायु परिवर्तन	पवन तिवारी, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)	16
9.	जलवायु परिवर्तन के कारण एवं दुष्प्रभाव	मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ सहायक	18
10.	जलवायु परिवर्तन	तृप्ति सिकरीवाल, सहायक	19
11.	जलवायु परिवर्तन	अंकित पाण्डेय, अधीक्षक	20
12.	जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती	धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)	21
13.	जैसी करनी, वैसी भरनी	तृप्ति सिकरीवाल, सहायक	23
14.	वर्तमान अवधि में जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय	जय कुमार ठाकुर, पीएचडी 24001	24
15.	धरती का श्रृंगार	ज़ोहरा ख़ातून, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित)	26
16.	जलवायु परिवर्तन और उससे निबटने हेतु प्रयास	अंजलि दीक्षित, शैक्षणिक सहयोगी (अनुबंधित)	27
17.	चंद्रशिला की चढ़ाई	प्रो. गिरीश बालासुब्रमण्यम	33
18.	धरा है मां का आंचल	अंकुर सिंह, कनिष्ठ सहायक	36
19.	जलवायु परिवर्तन	रामचन्द्र वरि.पुस्त. व सूचना प्रोफेशनल (अनुबंधित)	36
20.	बदलता मौसम	राम नेवाज, अधीक्षक	37
21.	जल	एम. पद्मावती, सहायक (अनुबंधित)	37

22.	आओ! पेड़ लगाएं	पवन तिवारी, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)	38
23.	धरती का करुण क्रंदन	अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित)	39
24.	हवा हूं, मैं हवा, अब बसंती कहां मैं	आशुतोष झा, पीएडी 24014	40
25.	समय का एक क्षण	रजत कुमार दलाई, पीजीपीएसएम 09030	41
26.	हलाहल	मेजर प्रणव पंत, डीजीएमपी	42
27.	बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं	अभिलाषा शंखधर पत्नी-अमित शंकधर, वित्त व लेखा अधिकारी	43
28.	आयोजन व गतिविधियां		44

हिमांशु सिंघल, पीएच.डी. 23012

जलवायु परिवर्तनः कारण, दुष्प्रभाव और रोकथाम के उपाय

जलवायु परिवर्तन जैसे जटिल मुद्दे को और गहराई से समझने के लिए कुछ अनुसंधान-पत्रों और वैज्ञानिक अध्ययनों के तथ्य शामिल करना अत्यंत आवश्यक है। इन अध्ययनों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन के कारण और प्रभाव किस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय असंतुलन से जुड़े हुए हैं। एक वित्तीय शोधकर्ता के रूप में मैंने इस निबंध में अपने विचारों को भी व्यक्त करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तावना : जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक चुनौतियों में से एक है। इसका प्रभाव न केवल पर्यावरणीय संतुलन पर हो रहा है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं पर भी इसका गहरा असर पड़ रहा है। जैसे-जैसे वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है, वैसे-वैसे जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही यह समस्या वैश्विक अर्थव्यवस्था, वित्तीय स्थिरता और दीर्घकालिक विकास के लिए भी चुनौती बन रही है। एक वित्तीय शोधकर्ता के दृष्टिकोण से, यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि वित्तीय प्रणालियों और निवेश की दिशा को भी प्रभावित कर रहा है।

विशेषकर 2021 में प्रकाशित इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की छठी आकलन रिपोर्ट यह दर्शाती है कि यदि जलवायु परिवर्तन के मौजूदा रुझान जारी रहे, तो यह वैश्विक तापमान में 1.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि का कारण बनेगा, जिसका प्रभाव वैश्विक उत्पादन और निवेश पर नकारात्मक रूप से पड़ेगा। इस रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन के आर्थिक और सामाजिक प्रभावों को गहराई से समझाया गया है। इसे ध्यान में रखते हुए, वित्तीय अनुसंधानकर्ताओं के लिए आवश्यक हो गया है कि वे जलवायु परिवर्तन को न केवल एक पर्यावरणीय संकट के रूप में, बल्कि एक वित्तीय जोखिम के रूप में भी देखें।

विषय विस्तार

जलवायु परिवर्तन के कारण, प्रभाव और रोकथाम के उपायों पर गहराई से विचार करते हुए, हमें उन शोधों और अध्ययनों का भी जिक्र करना होगा जो इसे वित्तीय और आर्थिक दृष्टिकोण से विश्लेषित करते हैं।

1. जलवायु परिवर्तन के कारण : जलवायु परिवर्तन के अनेक कारण हैं, जिनमें से कुछ को विभिन्न शोध-पत्रों ने विश्लेषित किया है। प्रमुख कारणों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जनः जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन है। 'वैश्विक कार्बन प्रोजेक्ट' द्वारा 2019 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार, कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर औद्योगिक क्रांति के बाद से 40% तक बढ़ गया है, और इसका प्रमुख स्रोत जीवाश्म ईंधन का दहन है। यह उत्सर्जन वायुमंडल में गर्मी को रोकता है, जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। इसके साथ ही, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी अन्य गैसों का भी वातावरण में योगदान है, जो मुख्यतः कृषि और पशुपालन से आती हैं।

औद्योगिकीकरण और शहरीकरणः औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। 'विश्व बैंक' की एक रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील देशों में तेजी से हो रहे शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरणीय क्षति में वृद्धि हो रही है। बड़े उद्योगों और कारखानों द्वारा उत्सर्जित धुएं और रासायनिक कचरे ने वायुमंडल को प्रदूषित किया है, जिससे जलवायु परिवर्तन की गति तेज हो गई है।

वनों की कटाईः वनों की कटाई जलवायु परिवर्तन का एक अन्य प्रमुख कारण है। 'एफएओ (खाद्य एवं कृषि संगठन)' की 2020 की रिपोर्ट के अनुसार, हर साल लगभग 10 मिलियन हेक्टेयर जंगल नष्ट होते हैं। जंगलों का विनाश न केवल वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड के अवशोषण को कम करता है, बल्कि इससे जैव विविधता का नुकसान भी होता है, जो जलवायु संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कृषि और पशुपालनः कृषि क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों और कीट नाशकों के अत्यधिक उपयोग से मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। 2020 में प्रकाशित 'नेचर' पत्रिका के एक अध्ययन के अनुसार, मीथेन का योगदान जलवायु परिवर्तन में तेजी से बढ़ रहा है, और इसका एक बड़ा हिस्सा कृषि और पशुपालन से आता है। इसके अलावा, पशुओं के मल-मूत्र से मीथेन का उत्सर्जन होता है, जो ग्रीनहाउस प्रभाव को बढ़ावा देता है।

एक वित्तीय शोधकर्ता होने के नाते मेरे लिए यह महत्वपूर्ण है कि जलवायु परिवर्तन के इन कारणों को वित्तीय प्रणालियों के जोखिम के रूप में देखें। जैसे-जैसे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है, वैसे-वैसे कंपनियों और सरकारों को अधिक लागत का सामना करना पड़ रहा है, जिसमें कार्बन कराधान, पर्यावरणीय कानूनों और नीतियों का पालन करना शामिल है। इससे वित्तीय अस्थिरता बढ़ने की संभावना होती है, क्योंकि इन नीतियों का पालन करना कंपनियों और व्यवसायों हेतु एक अतिरिक्त बोझ बन सकता है।

2. जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव : जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव न केवल पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनते हैं, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ता है। अनेक शोधों ने जलवायु परिवर्तन के विभिन्न दुष्प्रभावों को उजागर किया है, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:

तापमान में वृद्धिः आईपीसीसी की 2021 की रिपोर्ट यह दर्शाती है कि यदि वैश्विक तापमान में वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने से नहीं रोका गया, तो इसके कारण प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि होगी। इससे कृषि, जल संसाधनों, और वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। इस बढ़ते तापमान का प्रभाव न केवल पर्यावरणीय संतुलन पर पड़ेगा, बल्कि वैश्विक व्यापार और वित्तीय बाजारों पर भी इसका सीधा असर होगा।

प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धिः 'म्यनिख रे', एक प्रमुख बीमा कंपनी द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, पिछले 20 वर्षों में प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़, तूफान, और सूखा की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। इससे बीमा क्षेत्र पर भारी दबाव पड़ा है, क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के बाद बीमा दावों की संख्या बढ़ती है। इसका परिणाम यह होता है कि बीमा कंपनियों को बड़े पैमाने पर नुकसान होता है, जिससे वित्तीय बाजारों में अस्थिरता का माहौल बनता है।

कृषि और खाद्य सुरक्षाः एफएओ की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण वैश्विक खाद्य उत्पादन में कमी आ सकती है, जिससे खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है। मौसम में हो रहे अनियमित बदलाव और सूखे जैसी आपदाओं के कारण कृषि उत्पादन में गिरावट आ रही है। इससे खाद्य कीमतों में वृद्धि हो रही है, जो वैश्विक व्यापार को प्रभावित कर रही है। यह विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए चिंताजनक है, क्योंकि वहां की अर्थव्यवस्था कृषि पर अत्यधिक निर्भर है।

स्वास्थ्य पर प्रभावः जलवायु परिवर्तन के कारण मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। 'द लांसेट' द्वारा प्रकाशित 2021 की रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण लू, जलजनित रोग, और कुपोषण जैसी समस्याएं बढ़ी। हीटवेव के कारण विशेष रूप से वृद्ध और कमजोर लोग प्रभावित हो रहे हैं। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले स्वास्थ्य संकटों का वित्तीय भार स्वास्थ्य सेवाओं और बीमा उद्योग पर भी बढ़ रहा है।

एक शोधकर्ता के दृष्टिकोण से, यह आवश्यक है कि हम जलवायु परिवर्तन के इन दुष्प्रभावों का वित्तीय मूल्यांकन करें। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक आपदाओं के कारण बुनियादी ढांचे को नुकसान होता है, जिससे सरकारों और निजी क्षेत्र को भारी आर्थिक लागत का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, कृषि और जल संसाधनों में गिरावट से व्यापार और निवेश के अवसरों में भी कमी आती है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

3. रोकथाम के उपाय : जलवायु परिवर्तन की रोकथाम के लिए प्रभावी उपायों को अपनाना आज की सबसे बड़ी प्राथमिकता बन चुकी है। कई अध्ययन और शोध इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जिनके अनुसार निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं :

नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोगः जीवाश्म ईंधनों की बजाय सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत, और जैविक ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। यह ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में सहायक होगा और ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखेगा।

ऊर्जा दक्षताः उद्योगों, घरों और वाहनों में ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना आवश्यक है। ऊर्जा-बचत तकनीकों और उपकरणों का उपयोग, जैसे कि एलईडी बल्ब, ऊर्जा कुशल वाहनों और सौर पैनलों का उपयोग, कार्बन उत्सर्जन को कम करने में सहायक हो सकता है।

वृक्षारोपण और वनों का संरक्षणः वनों की कटाई को रोकने और नए पेड़ लगाने के प्रयास किए जाने चाहिए। वन्य जीवों और जैव विविधता को संरक्षित रखने के लिए वनों का संरक्षण आवश्यक है। यह न केवल कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को कम करता है, बल्कि जलवायु संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होता है।

कचरा प्रबंधन और पुनर्चक्रणः ठोस कचरे के उचित प्रबंधन और पुनर्चक्रण को प्रोत्साहित करना चाहिए। प्लास्टिक और अन्य हानिकारक पदार्थों के पुनर्चक्रण से पर्यावरण को नुकसान से बचाया जा सकता है और यह जलवायु परिवर्तन को धीमा करने में भी मदद करता है।

जलवायु-नियंत्रित निवेशः वित्तीय दृष्टिकोण से, 'ग्रीन फाइनेंस' और 'सस्टेनेबल इन्वेस्टमेंट' जैसे नए मॉडल को अपनाने की आवश्यकता है। इसमें पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं में निवेश करना और पारंपरिक औद्योगिक गतिविधियों की बजाय स्वच्छ ऊर्जा और पर्यावरणीय स्थिरता को प्राथमिकता देना शामिल है।

मेरे दृष्टिकोण से, इन उपायों का न केवल पर्यावरण पर, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी सकारात्मक प्रभाव होगा। उदाहरण के लिए, नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करने से रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे और वित्तीय प्रणाली अधिक स्थिर होगी। इसके अलावा, ग्रीन फाइनेंस और सस्टेनेबल इन्वेस्टमेंट से आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच संतुलन बनाना संभव होगा।

उपसंहार

जलवायु परिवर्तन एक जटिल और बहुआयामी समस्या है, जिसके समाधान के लिए वैश्विक, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। इसके दुष्प्रभाव न केवल पर्यावरण पर, बल्कि मानव जीवन, स्वास्थ्य, और आर्थिक व्यवस्थाओं पर भी गहरा प्रभाव डाल रहे हैं। इससे निपटने के लिए हमें न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि वित्तीय और नीति-निर्माण स्तर पर भी जागरूक और संगठित होकर कदम उठाने होंगे।

एक वित्तीय अनुसंधानकर्ता के रूप में, यह महत्वपूर्ण है कि हम जलवायु परिवर्तन के दीर्घकालिक वित्तीय प्रभावों का मूल्यांकन करें और इसके लिए आवश्यक नीतियां विकसित करें। निवेश और वित्तीय प्रणालियों को इस प्रकार तैयार करना होगा कि वे जलवायु परिवर्तन के खतरों का सामना कर सकें और साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा दे सकें। यदि हम ठोस कदम उठाते हैं, तो यह संभव है कि हम जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम कर सकें और एक स्थायी और स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ सकें।

सुमित कुमार गुप्ता, कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक

जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक चुनौती

प्रस्तावनाः सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध शहर में स्थित भारतीय प्रबंध संस्थान का परिसर 190 एकड़ से अधिक लुभावने लैंडस्केप क्षेत्र में फैला हुआ है। परिसर में शानदार स्थापत्य योजना प्रकृति के सर्वोत्तम स्वरूप को सुनिश्चित करती है। यहां पर स्थित विविध सुविधापूर्ण डिजाइन किये हुए भवन, सुसज्जित लॉन, ऊंचे पेड़ का सुंदर व स्वच्छ दृश्य आईआईएम-लखनऊ परिसर को भारत के सर्वश्रेष्ठ परिसरों में से एक बनाते हैं। संस्थान जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए निरंतर कार्यरत है तथा समय-समय पर भारत सरकार द्वारा जारी अभियानों में योगदान देता है। इसी के तहत दिनांक 23-08-2023 को संस्थान में "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान भी चलाया गया। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हम सभी के प्रयासों से संस्थान विश्व स्तर पर नित्य-प्रतिदिन नई ऊँचाइयों पर पहुंचेगा।

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलावों से है। सूर्य की गतिविधि में बदलाव या बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण हुए बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं, लेकिन 18वीं सदी के दशक से मानवीय गतिविधियाँ जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण रही हैं। जिसमें मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों का जलना शामिल है, जो वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के 75 प्रतिशत से अधिक और सभी कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के लगभग 90 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं। जीवाश्म ईंधनों के जलने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है जो पृथ्वी के चारों ओर एक आवरण की तरह कार्य करता है तथा सूर्य की गर्मी को रोक लेता है जिस कारण तापमान बढ़ जाता है।

जलवायु परिवर्तन के कारणः जलवायु परिवर्तन पहले से ही हो रहा हैः तापमान बढ़ रहा है, सूखा और जंगली आग जैसी घटनाएं अधिक बार होने लगी है, वर्षा का पैटर्न बदल रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं और वैश्विक स्तर पर औसत समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। इसके मुख्य कारण निम्न प्रकार हैं :-

1. **ग्रीनहाउस गैसः** जीवाश्म ईंधन को जलाकर बिजली और गर्मी पैदा करना वैश्विक उत्सर्जन का एक बड़ा कारण है। अधिकांश बिजली अभी भी कोयला, तेल या गैस जलाकर बनाई जाती है, जिससे कार्बन डाइआक्साइड और नाइट्रस आक्साइड पैदा होती हैं - शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसें जो पृथ्वी को ढक लेती हैं और सूरज की गर्मी को रोक लेती हैं। वैश्विक स्तर पर, बिजली का एक चौथाई से थोड़ा ज्यादा हिस्सा पवन, सौर और अन्य नवीकरणीय स्रोतों से आता है, जो जीवाश्म ईंधन के विपरीत, हवा में बहुत कम या बिल्कुल भी ग्रीनहाउस गैस या प्रदूषक उत्सर्जित नहीं करते हैं।

2. **विनिर्माण और उद्योगः** मुख्यतः सीमेंट, लोहा, इस्पात, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्लास्टिक, कपड़े और अन्य सामान बनाने के लिए ऊर्जा जीवाश्म ईंधन को जलाने से उत्पन्न होती है। खनन और अन्य औद्योगिक प्रक्रियाएँ भी गैसें छोड़ती हैं, जैसा कि निर्माण उद्योग करता है। विनिर्माण प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली मशीनें अक्सर कोयले, तेल या गैस पर चलती है और प्लास्टिक जैसी कुछ सामग्री जीवाश्म ईंधन से प्राप्त रसायनों से बनाई जाती हैं। विनिर्माण उद्योग दुनिया भर में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है।

3. **वनों की कटाईः** जब पेड़ों को काटा जाता है, तो वे अपने द्वारा संग्रहित कार्बन को छोड़ देते हैं। हर साल लगभग 12 मिलियन हेक्टेयर जंगल नष्ट हो जाते हैं। चूँकि जंगल कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, इसलिए उन्हें नष्ट करने से प्रकृति की वायुमंडल से उत्सर्जन को दूर रखने की क्षमता भी सीमित हो जाती है। वनों की कटाई, कृषि और अन्य भूमि उपयोग परिवर्तनों के साथ मिलकर, वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लगभग एक चौथाई के लिए जिम्मेदार है।

4. **परिवहन का उपयोगः** ज्यादातर कारें, ट्रक, जहाज और विमान जीवाश्म ईंधन पर चलते हैं। इससे परिवहन ग्रीनहाउस गैसों, ख़ास तौर पर कार्बन-डाइआक्साइड उत्सर्जन में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन जाता है। आंतरिक दहन इंजनों में गैसोलीन जैसे पेट्रोलियम-आधारित उत्पादों के दहन के कारण सड़क वाहनों का सबसे बड़ा हिस्सा होता है। लेकिन जहाजों और विमानों से होने वाले उत्सर्जन में वृद्धि जारी है। वैश्विक ऊर्जा-संबंधी कार्बन-डाइआक्साइड उत्सर्जन में परिवहन का हिस्सा लगभग एक चौथाई है। आने वाले वर्षों में परिवहन के लिए ऊर्जा के उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि की ओर इशारा करते हैं।

5. **उच्च तापमानः** खाद्य उत्पादन से विभिन्न तरीकों से कार्बन डाइआक्साइड, मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन

होता है। जिसमें वनों की कटाई, कृषि और चराई के लिए भूमि की सफाई, गायों और भेड़ों द्वारा पाचन, फसल उगाने के लिए उर्वरकों और खाद का उत्पादन एवं उपयोग, और कृषि उपकरण या मछली पकड़ने वाली नावों को चलाने के लिए ऊर्जा का उपयोग, आमतौर पर जीवाश्म ईंधन के साथ शामिल है। यह सब खाद्य उत्पादन को जलवायु परिवर्तन में एक प्रमुख योगदानकर्ता बनाता है।

6. **शहरीकरणः** वैश्विक स्तर पर, आवासीय और व्यावसायिक इमारतें आधी से ज्यादा बिजली की खपत करती हैं। चूँकि वे हीटिंग और कूलिंग के लिए कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल करना जारी रखते हैं, इसलिए वे गैसों के उत्सर्जन की महत्वपूर्ण मात्रा उत्सर्जित करते हैं। हीटिंग और कूलिंग के लिए बढ़ती ऊर्जा की मांग, एयर-कंडीशनर के बढ़ते स्वामित्व के साथ-साथ प्रकाश व्यवस्था, उपकरणों और कनेक्टेड डिवाइस के लिए बिजली की खपत में वृद्धि ने हाल के वर्षों में इमारतों से ऊर्जा संबंधित कार्बन-डाइऑक्साइड उत्सर्जन में वृद्धि में योगदान दिया है।

7. **विलासिताः** आपका घर और बिजली का उपयोग, आप कैसे घूमते हैं, आप क्या खाते हैं और आप कितना फेंकते हैं, ये सभी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान करते हैं। कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स और प्लास्टिक जैसी वस्तुओं की खपत भी ऐसा ही करती है। वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का एक बड़ा हिस्सा निजी घरों से जुड़ा हुआ है। हमारी जीवनशैली का हमारे ग्रह पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वैश्विक आबादी के सबसे अमीर 1 प्रतिशत संयुक्त रूप से सबसे गरीब 50 प्रतिशत की तुलना में अधिक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभावः जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की पैदावार कम होने से खाद्यान्न समस्या उत्पन्न हो सकती है, साथ ही भूमि निम्नीकरण जैसी समस्याएँ भी सामने आ सकती हैं। जो इस प्रकार हैं :-

1. **बढ़ता तापमानः** ग्रीनहाउस गैसों की सांद्रता बढ़ने के साथ-साथ वैश्विक सतह का तापमान भी बढ़ रहा है। पिछला दशक, 2011-2020, अब तक का सबसे गर्म दशक हो रहा है 1980 के दशक से, हरेक दशक पिछले दशक से ज्यादा गर्म रहा है। लगभग सभी जमीनी इलाकों में ज्यादा गर्म दिन हो रहे हैं और लू चल रही है। ज्यादा तापमान की वजह से गर्मी से जुड़ी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं और बाहर काम करना मुश्किल हो जाता है। जब मौसम ज्यादा गर्म होता है तो जंगल में आग लगने की घटनाएँ ज्यादा आसानी से होती हैं और आग तेजी से फैलती हैं। आर्कटिक में तापमान वैश्विक औसत से कम से कम दोगुना तेजी से बढ़ा है।

2. **भयंकर तूफानः** कई क्षेत्रों में विनाशकारी तूफान अधिक तीव्र और लगातार हो रहे हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, अधिक नमी वाष्पित होती है, जो अत्यधिक वर्षा और बाढ़ को बढ़ाती है, जिससे अधिक विनाशकारी तूफान आते हैं। उष्णकटिबंधीय तूफानों की आवृत्ति और सीमा भी गर्म होते महासागर से प्रभावित होती है। चक्रवात, तूफान और टाइफून समुद्र की सतह पर गर्म पानी पर गति पाते हैं। ऐसे तूफान अक्सर घरों और बस्तियों को नष्ट कर देते हैं, जिससे मौतें और भारी आर्थिक नुकसान होता है।

3. **सूखाः** जलवायु परिवर्तन के कारण जल की उपलब्धता में कमी आ रहा है, जिससे यह अधिक क्षेत्रों में दुर्लभ होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग पहले से ही जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में जल की कमी को और बढ़ा रही है और फसलों को प्रभावित करने वाले कृषि सूखे के बढ़ते जोखिम को जन्म दे रही है, तथा पारिस्थितिकी तंत्र की भेद्यता को बढ़ाने वाले पारिस्थितिकी सूखे को बढ़ा रही है। सूखे से विनाशकारी रेत और धूल के तूफान भी आ सकते हैं जो महाद्वीपों में अरबों टन रेत को बहा सकते हैं। रेगिस्तान फैल रहे हैं, जिससे भोजन उगाने के लिए भूमि कम होती जा रही है। अब बहुत से लोगों को नियमित रूप से पर्याप्त पानी न मिलने के खतरे का सामना करना पड़ रहा है।

4. **गर्म होते और बढ़ते महासागरः** महासागर ग्लोबल वार्मिंग से होने वाली अधिकांश गर्मी को सोख लेता है। पिछले दो दशकों में महासागर के गर्म होने की दर में तेजी से वृद्धि हुई है, जैसे-जैसे महासागर गर्म होते है, उसका आयतन बढ़ता है क्योंकि गर्म होने पर पानी फैलता है। बर्फ की चादरें पिघलने से समुद्र का स्तर भी बढ़ता है, जिससे तटीय और द्वीप समुदायों को खतरा होता है। इसके अलावा, महासागर कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है, जिससे यह वायुमंडल से दूर रहता है। लेकिन अधिक कार्बन डाइऑक्साइड महासागर को अधिक अम्लीय बनाता है, जो समुद्री जीवन और प्रवाल भित्तियों को खतरे में डालता है।

5. **प्रजातियों की हानिः** जलवायु परिवर्तन भूमि और समुद्र में प्रजातियों के अस्तित्व के लिए जोखिम पैदा करता है। तापमान बढ़ने के साथ ये जोखिम और भी बढ़ जाते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया में प्रजातियों की संख्या में भारी गिरावट दर्ज की जा रही है, जो मानव इतिहास में किसी भी अन्य समय की तुलना में कहीं अधिक है। अगले कुछ दशकों में दस लाख प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है। जंगल की आग, चरम मौसम और आक्रामक कीट और बीमारियाँ जलवायु परिवर्तन से संबंधित कई खतरों में से हैं। कुछ प्रजातियाँ स्थानांतरित होकर जीवित रह पाएंगी, लेकिन अन्य नहीं।

6. **भोजन की कमीः** जलवायु में परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि वैश्विक स्तर पर भूख और खराब पोषण में वृद्धि के पीछे के कारणों में से एक है। मत्स्य पालन, फसलें और पशुधन नष्ट हो सकते हैं या कम उत्पादक हो सकते हैं। समुद्र के अधिक अम्लीय होने के साथ, अरबों लोगों को भोजन देने वाले समुद्री संसाधन खतरे में हैं। कई आर्कटिक क्षेत्रों में बर्फ और बर्फ के आवरण में परिवर्तन ने पशुपालन, शिकार और मछली पकड़ने से खाद्य आपूर्ति को बाधित किया है। गर्मी के तनाव से चरने के लिए पानी और घास के मैदान कम हो सकते हैं, जिससे फसल की पैदावार कम हो सकती है और पशुधन प्रभावित हो सकते हैं।

7. **स्वास्थ्य जोखिमः** जलवायु परिवर्तन मानवता के सामने सबसे बड़ा स्वास्थ्य खतरा है। जलवायु प्रभाव पहले से ही वायु प्रदूषण, बीमारी, चरम मौसम की घटनाओं, जबरन विस्थापन, मानसिक स्वास्थ्य पर दबाव और उन जगहों पर बढ़ती भूख और खराब पोषण के माध्यम से स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे में, लोग पर्याप्त भोजन नहीं उगा सकते या नहीं पा सकते। हर साल, पर्यावरणीय कारक लगभग 13 मिलियन लोगों की जान ले लेते हैं। बदलते मौसम के पैटर्न बीमारियों को बढ़ा रहे हैं, और चरम मौसम की घटनाओं से मौतें बढ़ रही हैं और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के लिए इसे सुचारू रखना मुश्किल हो रहा है।

8. **गरीबी और विस्थापनः** जलवायु परिवर्तन उन कारकों को बढ़ाता है जो लोगों को गरीबी में डालते हैं और बनाए रखते हैं। बाढ़ शहरी झुग्गियों को बहा सकती है, घरों और आजीविका को नष्ट कर सकती है। गर्मी फिल्ड की नौकरियों में काम करना मुश्किल बना सकती है। पानी की कमी फसलों को प्रभावित कर सकती है। पिछले दशक (2010-2019) में, मौसम संबंधी घटनाओं ने हर साल औसतन 23.1 मिलियन लोगों को विस्थापित किया, जिससे कई और लोग गरीबी के शिकार हो गए। अधिकांश शरणार्थी उन देशों से आते हैं जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए सबसे कम तैयार हैं।

जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास

1. **जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी):** यह जलवायु परिवर्तन से संबंधित वैज्ञानिक आकलन करने हेतु संयुक्त राष्ट्र का एक निकाय है। जिसमें 195 सदस्य देश हैं। इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, इसके प्रभाव और भविष्य के संभावित जोखिमों के साथ-साथ अनुकूलन तथा जलवायु परिवर्तन को कम करने हेतु नीति निर्माताओं को रणनीति बनाने के लिये नियमित वैज्ञानिक आकलन प्रदान करना है।

2. **संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (यूएनएफसीसीसी):** यह एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है जिसका उद्देश्य वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करना है।

3. **पेरिस समझौताः-** पेरिस समझौता जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। वर्ष 2015 में 30 नवंबर से लेकर 11 दिसंबर तक 195 देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने पेरिस में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिये संभावित नए वैश्विक समझौते पर चर्चा की। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य के साथ संपन्न 32 पृष्ठों एवं 29 लेखों वाले पेरिस समझौते को ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिये एक ऐतिहासिक समझौते के रूप में मान्यता प्राप्त है।

जलवायु परिवर्तन और राष्ट्रीय प्रयास

1. **जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (एनएपीसीसी):** जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना का शुभारंभ वर्ष 2008 में किया गया था। इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपायों के बारे में जागरूक करना है। इस कार्ययोजना में मुख्यतः 8 मिशन शामिल हैंः-

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा दक्षता के लिये राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु कार्यनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

2. **अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए):** अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा से संपन्न देशों का एक संधि आधारित अंतर-सरकारी संगठन (संधि-आधारित अंतरराष्ट्रीय अंतर-सरकारी संगठन) है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत भारत और फ्रांस ने 30 नवंबर, 2015 को पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान की थी। इसका मुख्यालय गुरुग्राम (हरियाणा) में स्थित है।

निष्कर्षः जैसे-जैसे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन पृथ्वी को ढकता है, वे सूर्य की गर्मी को फँसाते हैं। इससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन होता है। दुनिया अब रिकॉर्ड किए गए इतिहास में किसी भी बिंदु से अधिक तेजी से गर्म हो रही है। समय के साथ गर्म तापमान मौसम के पैटर्न को बदल रहा है और प्रकृति के सामान्य संतुलन को बाधित कर रहा है। यह मनुष्यों और पृथ्वी पर जीवन के सभी अन्य रूपों के लिए कई जोखिम पैदा करता है। जलवायु परिवर्तन हमारे समय का निर्णायक मुद्दा है और हम एक निर्णायक मोड़ पर हैं। मौसम के बदलते पैटर्न से लेकर खाद्य उत्पादन को खतरा पैदा करने वाले बढ़ते समुद्री स्तर तक, जिससे विनाशकारी बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव वैश्विक स्तर पर हैं और अभूतपूर्व पैमाने पर हैं। आज कठोर कार्रवाई के बिना, भविष्य में इन प्रभावों के अनुकूल होना अधिक कठिन और महंगा होगा।

सन्दर्भः-

- https://www-un-org/en/climatechange/
- https://www-drishtiias-com/hindi/daily&updates/daily&news&editorials/climate&change&a&global&challenge
- https://www-khayalrakhe-com/2018/01/jalvayu&parivartan&climate&change&hindi-html

सुमित कुमार गुप्ता, कनिष्ठ पुस्तकालय सहायक

हमारी धरती

ये रास्ते जो एक वक्त तक आम के पेड़ों से भरे पड़े थे
भरे मौसम में भी फल उन पर सूखे पड़े थे
उन्हें देखते ही हम दोनों का दिल मुरझा गया
लगा किसी ने हमारे बचपन से स्वाद निकाल लिया
अब तो, वो ठंडी पड़ी सड़क भी गर्म हो चली थी
न जाने दुनिया को बदलने की क्यूं इतनी हड़बड़ी थी

इससे पहले कि कुछ ऐसा हो, जिसे हम बदल नहीं सकते
अब भी वक्त है, तो क्या हम संभल नहीं सकते
हम जो अपने दिलबर की कसमें खाते हैं, किधर जाएंगे
जब ठौर-ठिकाने इश्क से पहले बिखर जाएंगे
आखिर प्यार की हर जीत आबोहवा से ही पूरी है
जमाना वही है, पर अब कहानी को बदलना जरूरी है।

अंकित पाण्डेय, अधीक्षक

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती

जलवायु परिवर्तन पृथ्वी की जलवायु में लंबे समय तक होने वाले परिवर्तनों को कहते हैं। यह परिवर्तन प्राकृतिक या मानवीय कारणों से हो सकते हैं। कहते हैं कि परिवर्तन संसार का नियम है किन्तु जब परिवर्तन नकारात्मक रूप ले ले तो यह हानिकारक हो जाता है और हमारे लिए एक चुनौती बन जाता है, जैसा कि आज जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती बन गया है।

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान, वर्षा, और मौसम के स्वरूप में बदलाव आते हैं, जिसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है अतः इसके लिए वैश्विक स्तर पर समाधानों की आवश्यकता होती है। यह मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (जैसे, कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस) को जलाने के कारण पृथ्वी के वातावरण में तेजी से बढ़ती ग्रीनहाउस गैसों के कारण होता है। जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली समस्याएं किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह पूरे विश्व को प्रभावित करती हैं।

विश्व में जलवायु परिवर्तन की स्थिति गंभीर है और इसके प्रभाव देश के विभिन्न हिस्सों में देखे जा रहे हैं। बढ़ता तापमान, वर्षा के बदलते स्वरूप, भूजल स्तर में गिरावट, पिघलते ग्लेशियर, तीव्र चक्रवात और समुद्र के स्तर में वृद्धि जैसे मुद्दे आजीविका, खाद्य सुरक्षा और अर्थव्यवस्था के लिए बड़े संकट पैदा कर सकते हैं।

तापमान बढ़ रहा है, मौसम रहे हैं बदल, प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं, नए-नए खतरे ला रही अटल।

समुद्री स्तर बढ़ रहे, तटीय क्षेत्र रहे डूब, खाद्य सुरक्षा खतरे में, आर्थिक नुकसान हो रहे खूब,

वनस्पति विनाश हो रहा, जैव विविधता हो रही कम, जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती, इसका सामना कैसे करें हम।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण हैं :

1. **ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जनः** ग्रीनहाउस गैसें ग्रह के वातावरण या जलवायु में परिवर्तन और अंततः भूमंडलीय ऊष्मीकरण के लिए उत्तरदायी होती हैं। इनमें सबसे ज्यादा उत्सर्जन कार्बन डाईआक्साइड, नाइट्रस आक्साइड, मीथेन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन, वाष्प, ओजोन आदि करती हैं। कार्बन डाईआक्साइड का उत्सर्जन पिछले 10-14 सालों में 40 गुणा बढ़ गया है।

2. **वनस्पति विनाश :** वनों की कटाई और जैव विविधता की कमी, जो जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देती है। वन विनाश या वनोन्मूलन का मतलब है, किसी वन क्षेत्र में पेड़ों को काटना या जलाना। वन विनाश से पर्यावरण पर कई तरह से नुकसान होते है। वन्य जीवों का शिकार किया जाता है, जैव विविधता कम होती है।

3. **औद्योगिक गतिविधियाँः** उद्योगों से निकलने वाले प्रदूषक तत्व, जो जलवायु परिवर्तन में योगदान करते हैं। औद्योगिक गतिविधियां वायुमंडल में ऊष्मा को रोकने वाली गैस कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करके जलवायु परिवर्तन में योगदान करती हैं। औद्योगिक गतिविधियां ग्रीनहाउस गैसों, हानिकारक गैसों और धूल के उत्सर्जन को बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन में योगदान देती हैं।

4. **जनसंख्या वृद्धिः** तेजी से बढ़ती जनसंख्या संसाधनों पर दबाव डालकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को और खराब करती है। जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के साथ, वे भू-राजनीतिक संघर्षों को भी बढ़ावा दे सकती हैं क्योंकि देश भोजन की कमी का सामना करेंगे और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है और गर्मी बढ़ती है, वैसे-वैसे अधिक लोग जीवाश्म ईंधन द्वारा संचालित एयर कंडीशनिंग पर निर्भर होंगे, जो आगे चलकर जलवायु परिवर्तन में योगदान देगा।

6. **ऊर्जा की मांग में वृद्धिः** दुनिया भर में ऊर्जा की मांग बढ़ रही है। ऊर्जा की मांग बढ़ने की कुछ वजहें ये हैंः बढ़ती आबादी और बढ़ती जीवनशैली, बढ़ती औद्योगिक और सेवा गतिविधियां, दूरसंचार और नियमित बिजली आपूर्ति, कोविड के बाद अर्थव्यवस्था में नया दौर शुरु हुआ है।

जलवायु परिवर्तन के वैश्विक प्रभाव हैं :

- **तापमान वृद्धि :** पूरे विश्व में तापमान में वृद्धि हो रही है, जिससे मौसम का स्वरूप बदल रहा है।
- **समुद्री स्तर में वृद्धिः** समुद्री स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और जलमग्नता का खतरा बढ़ रहा है।
- **प्राकृतिक आपदाएँः** जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएँ जैसे कि तूफान, सूखा, और बाढ़ बढ़ रही हैं।
- **खाद्य सुरक्षाः** जलवायु परिवर्तन से खाद्य उत्पादन प्रभावित हो रहा है, जिससे खाद्य सुरक्षा का खतरा बढ़ रहा है।
- **आर्थिक प्रभावः** जलवायु परिवर्तन के कारण आर्थिक नुकसान हो रहा है, खासकर विकासशील देशों में।

जलवायु परिवर्तन को यदि कम करना है। मिलकर हम सबको फिर प्रयत्न करना है।।

जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए हमें अपने जीवनशैली में बदलाव लाने होंगे, जैसे कि ऊर्जा की बचत, प्रदूषण कम करना, और वनस्पति का संरक्षण करना होगा। जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है क्योंकि इन समस्याओं का समाधान करने के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग और समन्वय की आवश्यकता होती है, जैसे किः

1. **ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमीः** हालही में भारत ने ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और शमन उपायों के रूप में वैश्विक जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सतत ईंधनों, रसायनों और सामग्रियों तक पहुंच के लिए वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा समुदाय से प्रतिबद्धता का आह्वान किया। मिशन नवाचार के तहत मिशन "एकीकृत जैव-रिफाइनरी" को किफायती लागत पर स्वच्छ ऊर्जा समाधानों को आगे बढ़ाने के लिए लॉन्च किया गया। ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए सतत विमानन ईंधनों सहित सतत जैव ईंधनों में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना होगा।
2. **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोगः** नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत जैसे सूर्य, हवा, पानी, और पृथ्वी की गर्मी, प्रकृति द्वारा अपने-आप पूर्ति होने वाले स्रोत हैं। नवीकरणीय माध्यमों से ऊर्जा पैदा करने के ज्यादातर मामलों में वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसें नहीं छोड़ी जातीं, नवीकरणीय ऊर्जा और विद्युतीकरण से मिलकर ऊर्जा से जुड़े कार्बन उत्सर्जन में 75% की कटौती की जा सकती है। नवीकरणीय ऊर्जा का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन को कम करने में मददगार है क्योंकि इससे ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है।
3. **वनस्पति का संरक्षणः** जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए वनस्पति का संरक्षण करना जरूरी है, क्योंकि पेड़ और अन्य वनस्पतियाँ प्रकाश संश्लेषण के माध्यम से पर्यावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को कम करने में सहायता करती हैं। साथ ही मृदा भी पशुओं और पौधों से मिलने वाले जैविक कार्बन को अवशोषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बांस लगाएं, बांस दुनिया भर में सबसे तेजी से बढ़ने वाला पौधा है। यह कार्बन को तेजी से अवशोषित करता है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी मदद करता है।
4. **जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए अनुकूलन और शमन के उपायः** कार्बन उत्सर्जन कम करना, जलवायु आधारित कृषि को बढ़ावा देना, भूजल का संरक्षण करना, तटों की सुरक्षा के लिए मैंग्रोव लगाना, फसलों में विविधता लाना, प्राकृतिक आपदाओं को रोकने और प्रबंधित करने के लिए समाधान ढूंढना आदि।
5. **वैश्विक स्तर पर सहयोग और समन्वय :** जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग और समन्वय की जरूरत है, क्योंकि यह एक वैश्विक समस्या है।
6. **जलवायु परिवर्तन के बारे में जागरूकता और शिक्षाः** जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए या इसको कम करने के लिए जरुरी है कि इसके प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई जाए, लोगों को इसके प्रति विशेष रूप से शिक्षित किया जाए। क्योंकि जब लोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में जागरूक होंगे तब ही वे इसके खिलाफ एकसाथ खड़े होंगे। लोग जब जलवायु परिवर्तन के खतरे के बारे में जागरूक एवं शिक्षित होंगे, विश्वास मानिये तभी जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से हम सभी सुरक्षित होंगे।

7. **ऊर्जा की बचत और दक्षता में सुधारः** जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए ऊर्जा की बचत और दक्षता में सुधार के लिए ऊर्जा बचाने वाले उपकरणों का प्रयोग, एलईडी प्रकाश व्यवस्था, हीट पंप, पानी की बचत, टपकते नल को मरम्मत करना, जल कुशल शावर हेड, खानपान में बदलाव लाना और नई-नई तकनीकों का इस्तेमाल करना आदि आसानी से किया जा सकता है।

8. **प्रदूषण कम करने के लिए नीतियों का क्रियान्वयनः** वनों की कटाई पर रोक लगाकर वनीकरण करना, जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल कम करना और गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोतों का इस्तेमाल बढ़ाना, स्वच्छ और वैकल्पिक ईंधन जैसे सीएनजी और एलपीजी का इस्तेमाल बढ़ाना, निर्माण और विध्वंस से उत्पन्न अपशिष्ट का प्रबंधन करना आदि प्रदूषण कम करने वाली नीतियों का क्रियान्वयन करके भी हम जलवायु परिवर्तन को कम कर सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता बढ़ाना होगा,
वनस्पति का संरक्षण और वृक्षारोपण करना होगा।
ऊर्जा की बचत और दक्षता में सुधार करना होगा,
नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना होगा।
सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों का समर्थन करना होगा,
तब जाकर निश्चित ही जलवायु परिवर्तन में सुधार होगा।

इन समाधानों को लागू करने से जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सकता है और एक सुरक्षित और स्थायी भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है। संक्षेप में, हम सभी को इस तथ्य का एहसास होना चाहिए कि हमारी पृथ्वी की स्थिति ठीक नहीं है। इसका उपचार बहुत आवश्यक है और हम सभी इसे ठीक करने में मदद कर सकते हैं। वर्तमान पीढ़ी को भविष्य की पीढ़ियों की पीड़ा को रोकने के लिए जलवायु परिवर्तन को कम करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इसलिए, हर छोटा कदम बहुत महत्वपूर्ण है। प्रयास कितना भी छोटा क्यों न हो किन्तु यदि वह जलवायु परिवर्तन को कम करने में सक्षम है या उससे जलवायु परिवर्तन को कम करने में यदि थोड़ी भी मदद मिल रही है तो वह देश हित में एक महत्वपूर्ण, सहायक एवं सराहनीय कदम होगा।

अज़मी सलमान, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)

जलवायु परिवर्तनः एक वैश्विक चुनौती

जलवायु परिवर्तन आज के युग की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है, जो पूरी दुनिया को प्रभावित कर रही है। यह केवल वैज्ञानिकों, पर्यावरण विदों या नीति निर्माताओं का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह हर व्यक्ति के जीवन से जुड़ा हुआ है। मौसम के पैटर्न में आ रहे बदलाव, ग्लेशियरों का पिघलना, और समुद्र के स्तर में हो रही वृद्धि, तब इस बात का संकेत हैं कि पृथ्वी पर एक गंभीर संकट मंडरा रहा है। इस समस्या का प्रभाव न केवल पर्यावरण पर, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर भी पड़ रहा है। अगर इसे समय रहते नहीं सुलझाया गया, तो इसके परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

हमारा वातावरण विभिन्न प्रकार की गैसों से मिलकर बना है, जिनमें से कुछ ग्रीनहाउस गैसें कहलाती हैं। ये गैसें, जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, और नाइट्रस ऑक्साइड, सूर्य से आने वाली ऊष्मा को पृथ्वी पर बनाए रखती हैं। यह प्रक्रिया स्वाभाविक है और पृथ्वी को जीवन के लिए अनुकूल बनाने में मदद करती है। लेकिन जब इन गैसों की मात्रा अधिक हो जाती है, तो यह पृथ्वी के तापमान में असामान्य वृद्धि का कारण बनती है।

1. **औद्योगिक क्रांति और जीवाश्म ईंधनों का उपयोगः** 18वीं शताब्दी में शुरू हुई औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन और ऊर्जा की मांग को बढ़ावा दिया। इस मांग को पूरा करने के लिए कोयला, तेल, और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों का बड़े पैमाने पर उपयोग होने लगा। इन ईंधनों के जलने से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है।
2. **वनों की अंधाधुंध कटाईः** वनों की कटाई जलवायु परिवर्तन का एक और प्रमुख कारण है। पेड़ वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और बदले में ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं। लेकिन जब जंगल काटे जाते हैं, तो न केवल यह प्रक्रिया रुक जाती है, बल्कि उस भूमि पर अन्य गतिविधियाँ, जैसे खेती या निर्माण, और भी अधिक गैसों का उत्सर्जन करती हैं।
3. **शहरीकरण और अनियंत्रित विकासः** तेजी से बढ़ता शहरीकरण, बिना किसी पर्यावरणीय योजनाओं के भी जलवायु परिवर्तन में योगदान देता है। शहरों का विस्तार और निर्माण गतिविधियाँ पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती हैं और ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में बढ़ोतरी करती हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अब स्पष्ट रूप से दिख रहे हैं, और इनका प्रभाव हमारे जीवन के हर पहलू पर पड़ रहा है।

1. **समुद्र का स्तर बढ़नाः** ध्रुवीय बर्फ और ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का स्तर तेजी से बढ़ रहा है। इससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है, जिससे लाखों लोगों के घर और आजीविका खतरे में हैं।
2. **मौसम के पैटर्न में बदलावः** सामान्य मौसम पैटर्न में परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। कहीं असामान्य रूप से अधिक बारिश हो रही है, तो कहीं सूखे को स्थिति बनी हुई है। यह अनिश्चितता कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रही है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर संकट मंडरा रहा है।
3. **पारिस्थितिक संतुलन में गड़बड़ीः** पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए एक स्थिर जलवायु आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन के कारण कई प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं, और इसके परिणामस्वरूप पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन पैदा हो रहा है।
4. **स्वास्थ्य पर प्रभावः** बढ़ते तापमान और मौसम में हो रहे बदलावों के कारण स्वास्थ्य समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। अत्यधिक गर्मी से हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं, जबकि जलवायु परिवर्तन से संबंधित बीमारियों, जैसे मलेरिया और डेंगू, के मामलों में भी वृद्धि हो रही है।

सामाजिक और आर्थिक परिणाम

जलवायु परिवर्तन का असर न केवल पर्यावरण पर पड़ रहा है, बल्कि इसका प्रभाव समाज और अर्थव्यवस्था पर भी गहराई के साथ पड़ा है।

1. **गरीबी और विस्थापनः** जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न आपदाओं के कारण कई लोगों को अपने घर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है। विशेषकर विकासशील देशों में, जहां लोग कृषि पर निर्भर हैं, वहाँ सूखा, बाढ़ और तूफान जैसी आपदाओं से उनकी जीविका का साधन छिन जाता है। इससे गरीबी और विस्थापन की समस्याएँ और गंभीर हो जाती हैं।
2. **अर्थव्यवस्था पर दबावः** जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता में कमी आ रही है, जिससे उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। कृषि, मत्स्य पालन, और पर्यटन जैसे उद्योग विशेष रूप से प्रभावित हो रहे हैं, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ रहा है।
3. **सामाजिक असमानताः** जलवायु परिवर्तन से होने वाले प्रभावों का भार असमान रूप से वितरित हो रहा है। गरीब और कमजोर वर्गों को इसके परिणामस्वरूप अधिक नुकसान उठाना पड़ता है, जबकि धनी देशों और समुदायों के पास इससे निपटने के लिए अधिक संसाधन होते हैं। इससे सामाजिक असमानता और गहरी हो जाती है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रयास

हालांकि जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती है, लेकिन इसे नियंत्रित करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

1. **नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तारः** जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करने के लिए, दुनिया भर में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर, पवन, और जल ऊर्जा का विस्तार किया जा रहा है। ये ऊर्जा स्रोत ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं करते, जिससे जलवायु पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. **वनीकरण और वन विस्तार :** वनों की कटाई को रोकने और नए पेड़ लगाने के प्रयास किए जाने चाहिए। इससे कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सकता है।
3. **अंतरराष्ट्रीय समझौतेः** क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौता जैसे अंतरराष्ट्रीय प्रयास जलवायु परिवर्तन से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये समझौते देशों को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने और सतत विकास की दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
4. **शिक्षा और जागरूकताः** जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। स्कूलों, कॉलेजों, और मीडिया के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए।

जलवायु परिवर्तन केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नहीं है, यह एक ऐसा संकट है जो मानवता के भविष्य को सीधे तौर पर प्रभावित कर सकता है। इस चुनौती से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें सरकारें, उद्योग, और आम नागरिक सभी शामिल हों। प्रत्येक देश, समुदाय और व्यक्ति को इस समस्या के समाधान में अपना योगदान देना होगा। सतत विकास की दिशा में कदम बढ़ाने, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने, और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाने से ही हम इस चुनौती का सामना कर सकते हैं। यदि हम इस समस्या को समय रहते नहीं सुलझाते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप हमारी आने वाली पीढ़ियाँ एक असुरक्षित और अस्थिर दुनिया में जीने के लिए मजबूर होंगी। इसलिए, जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ठोस और सतत प्रयास करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह एक ऐसी चुनौती है, जिसका सामना हम सबको मिलकर करना है, और इसके लिए आज ही कदम उठाने की आवश्यकता है।

ज़ोहरा ख़ातून, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित), पीजीपीएसएम

जलवायु परिवर्तन-एक वैश्विक चुनौती

विश्व भर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्व विदित है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के समक्ष मौजूद सबसे बड़ी चुनौती है एवं इससे निपटना वर्तमान समय की बड़ी आवश्यकता बन गई है। जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह एक ऐसी समस्या है जो न केवल हमारे पर्यावरण को प्रभावित कर रही है बल्कि हमारे स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और समाज को भी प्रभावित करती है।

जलवायु परिवर्तन का विज्ञान : जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य तापमान और मौसम के स्वरूप में दीर्घकालिक बदलाव से है। हालांकि ये परिवर्तन प्राकृतिक हो सकते हैं, वर्तमान रुझान मुख्य रूप से मानव गतिविधि से प्रेरित होते हैं। जलवायु परिवर्तन का प्राथमिक संचालक वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी), विशेष रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ 2), मीथेन (सीएच 2), और नाइट्रस ऑक्साइड (एन2ओ) में वृद्धि है। ये गैसें सूर्य की गर्मी को रोकती हैं, जिससे ग्रीन हाउस प्रभाव पैदा होता है जिससे ग्लोबल वार्मिंग होती है।

जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक प्रमाण प्रचुर हैं। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) के अनुसार, 19वीं सदी के अंत तक पृथ्वी की औसत सतह का तापमान लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है, जिसमें से अधिकांश बढ़ोतरी पिछले कुछ दशकों में हुई है। आईपीसीसी की रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि जीएचजी उत्सर्जन में पर्याप्त कटौती के बिना, वैश्विक तापमान 2030 की शुरुआत में पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है, जिससे गंभीर पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम दुनिया भर में पहले से ही महसूस किए जा रहे हैं। तूफान, बाढ़, सूखा और जंगल की आग जैसी चरम मौसम की घटनाएं अधिक बार और तीव्र हो गई हैं। छोटे द्वीप राष्ट्र और निचले इलाके इन परिवर्तनों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हैं। जलवायु परिवर्तन भी जैव विविधता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है।

अधिक गर्म तापमान – जैसे-जैसे ग्रीनहाउस गैस की सांद्रता बढ़ती है, वैसे-वैसे वैश्विक सतह का तापमान भी बढ़ता है। पिछला दशक, 2011-2020, रिकार्ड स्तर पर सबसे गर्म दशक है। लगभग सभी भूमि क्षेत्रों में अधिक गर्म दिन और लू चली है। उच्च तापमान गर्मी से संबंधित बीमारियों को बढ़ाता है और बाहर काम करना अधिक कठिन बना देता है। जब परिस्थितियाँ अधिक गर्म होती हैं तो जंगल की आग अधिक आसानी से लगती है और अधिक तेजी से फैलती है।

सामाजिक आर्थिक आयाम– जलवायु परिवर्तन न केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा है बल्कि एक गहन सामाजिक-आर्थिक चुनौती भी है। यह सबसे गरीब और सबसे कमजोर आबादी को असमान रूप से प्रभावित करता है, जिससे मौजूदा असमानताएं और बढ़ जाती हैं। वैश्विक जीएचजी उत्सर्जन में सबसे कम योगदान देने के बावजूद, विकासशील देश, विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देश अक्सर जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इन क्षेत्रों में आमतौर पर जलवायु प्रभावों के अनुकूल होने के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी होती है, जिससे वे भोजन और पानी की कमी, स्वास्थ्य संकट और आर्थिक अस्थिरता के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। जलवायु परिवर्तन की आर्थिक लागत चौंका देने वाली है। जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्राकृतिक आपदाएँ, जैसे तूफान, बाढ़ और जंगल की आग, के परिणामस्वरूप हर साल अरबों डॉलर का नुकसान होता है।

कृषि क्षेत्र, जो तापमान और वर्षा में परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, फसल की पैदावार में संभावित गिरावट और खाद्य आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान के साथ महत्वपूर्ण जोखिमों का सामना करता है। इसके अलावा, जलवायु परिवर्तन से वित्तीय संकट, बड़े पैमाने पर प्रवासन और संसाधनों पर संघर्ष शुरू होने की संभावना के साथ वैश्विक आर्थिक स्थिरता को कमजोर करने का खतरा है।

जलवायु परिवर्तन से आरंभ के वैश्विक प्रयास : जलवायु परिवर्तन की वैश्विक प्रकृति को देखते हुए, इससे निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) ने जलवायु समझौतों पर बातचीत करने और उन्हें लागू करने के लिए देशों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2015 के पेरिस समझौते ने वैश्विक जलवायु प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ, जिसमें लगभग हर देश ने ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे, अधिमानतः 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की।

अंतरराष्ट्रीय समझौतों के अलावा, विभिन्न देश, क्षेत्र और शहर उत्सर्जन को कम करने और कम कार्बन अर्थव्यवस्था में संक्रमण के लिए नीतियों और पहलों को लागू कर रहे हैं। इन प्रयासों में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना और हरित प्रौद्योगिकियों में निवेश करना शामिल है। कार्बन उत्सर्जन को कम करने के एक तरीके के रूप में इलेक्ट्रिक वाहनों और सार्वजनिक आवागमन प्रणालियों जैसे टिकाऊ परिवहन की ओर बदलाव भी गति पकड़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने में चुनौतियां : हाल के वर्षों में हुई उपायों में प्रगति के बावजूद भी जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए चुनौतियां अभी भी गंभीर बनी हुई हैं। प्राथमिक बाधाओं में से एक ऊर्जा उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन पर निरंतर निर्भरता है। कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस दुनिया भर में ऊर्जा के प्रमुख स्रोत बने हुए हैं, और उनसे दूर जाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा के बुनियादी ढांचे में पर्याप्त निवेश की आवश्यकता है। साथ ही निहित हितों से राजनीतिक और आर्थिक प्रतिरोध पर काबू पाने की भी आवश्यकता है।

- बड़े पैमाने पर व्यवहार और जीवनशैली में बदलाव की आवश्यकता है। कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए व्यक्तियों और समाजों को अधिक टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता है, जैसे ऊर्जा की खपत को कम करना, अपशिष्ट को कम करना और पौधे-आधारित आहार में बदलाव करना।
- जलवायु प्रभावों के प्रति लचीलापन बनाने के लिए पर्याप्त वित्तीय और तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिसकी कई विकासशील देशों में कमी है।
- अंतरराष्ट्रीय समर्थन और वित्तपोषण तंत्र, जैसे कि ग्रीन क्लाइमेट फंड, इन देशों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने और सतत विकास मार्गों पर संक्रमण में मदद करने के लिए आवश्यक हैं।
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समाज के सभी स्तरों पर सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है। सरकारों को ऐसी नीतियों और विनियमों को लागू करने का नेतृत्व करना चाहिए जो टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा दें और उत्सर्जन को कम करें। नवीन समाधानों को विकसित करने और तैनात करने के साथ-साथ टिकाऊ व्यावसायिक प्रथाओं को अपनाने में व्यवसायों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए जन जागरूकता और शिक्षा भी आवश्यक है। जलवायु विज्ञान, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और उपलब्ध समाधानों की बढ़ती समझ व्यक्तियों को सूचित निर्णय लेने और अपने जीवन में कार्रवाई करने के लिए सशक्त बना सकती है।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है जिसके लिए तत्काल और निरंतर कार्रवाई की आवश्यकता है। वैज्ञानिक प्रमाण स्पष्ट हैः पृथ्वी गर्म हो रही है, और मानवीय गतिविधियां इसका प्राथमिक कारण हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दुनिया भर में पहले से ही महसूस किए जा रहे हैं, जिसका पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन से निपटना न केवल पर्यावरणीय अनिवार्यता है बल्कि नैतिक, सामाजिक और आर्थिक भी है। यह अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर प्रयासों के साथ एक समन्वित वैश्विक प्रतिक्रिया की मांग करता है। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने के लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने की जरूरत है। हमें ऊर्जा की खपत कम करनी चाहिए, प्रदूषण कम करना चाहिए, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। हमें नवीकरण ऊर्जा स्रोतों को अपनाना चाहिए, जैसे कि सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा। सरकारों और व्यक्तियों को मिलकर जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने के लिए काम करना चाहिए। हमें

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करना चाहिए। हमें वैश्विक स्तर पर सहयोग करना चाहिए और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ने के लिए एकजुट होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है, लेकिन हम मिलकर इसका सामना कर सकते हैं। हमें अपने ग्रह की रक्षा करनी होगी और एक सुरक्षित भविष्य के लिए काम करना चाहिए।

धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)

कदम बढाएं : धरती बचाएं

धरती का तापमान बढ़ रहा
प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा
पेड़ों की हरियाली मुरझा रही
सागर की गहराई बढ़ती जा रही।

पिघलते हिमालय, टूटते बर्फ के ताज,
समुद्र भी बढ़ रहा है, अपनी लहरों का राज
सावन की बूंदें भी अब कम आने लगीं
सूखे खेत, जलते वन, दुनिया ये जानने लगी।

हवा में जहर है, सांस लेना हुआ दूभर
शहर की धूल धुआं, बन रहा है कहर।
कहां गई वो ठंडी हवा, वो सुकून भरी रातें
अब तो गर्मी का आलम, दिन और रात जलाते।

जलवायु का परिवर्तन, ये नहीं कोई कहानी है
धरती की पुकार है ये सबकी जिम्मेदारी है
आओ मिलकर लें वचन, ये सबकी जिम्मेदारी है
आओ मिलकर लें वचन, हरियाली फिर से लाएंगे
पेड़ लगाकर, जल बचाकर, धरती को सजाएंगे।

आओ मिलकर उठाएं कदम, समय है हमारे पास
जलवायु को बचाएंगे, ये धरती बनेगी फिर से खास,
इस निर्विकल्प मुश्किल समय में, करें संकल्प यही
धरती को बचाने में, योगदान हो हमारा भी सही।

पवन तिवारी, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन का सीधा संबंध तापमान और मौसम के स्वरूपों में दीर्घकालिक बदलाव से है। सूर्य की गतिविधि में बदलाव या बड़े ज्वालामुखी विस्फोटों के कारण ऐसे बदलाव प्राकृतिक हो सकते हैं। लेकिन 18वीं सदी पहले दशक से, मानव गतिविधियाँ जलवायु परिवर्तन का मुख्य चालक रही हैं, मुख्य रूप से कोयला, तेल और गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण, जीवाश्म ईंधन जलाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन उत्पन्न होता है जो पृथ्वी के चारों ओर लिपटे कंबल की तरह काम करता है, जो सूर्य की गर्मी को फंसाता है और तापमान बढ़ाता है।

जलवायु परिवर्तन का कारण बनने वाली मुख्य ग्रीनहाउस गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन शामिल हैं। उदाहरण के लिए, मोटर कार चलाने के लिए गैसोलीन या किसी इमारत को गर्म करने के लिए कोयले का उपयोग करने उत्सर्जित हैं। भूमि साफ करने और जंगलों को काटने से भी कार्बन डाइऑक्साइड निकलती है। कृषि, तेल और गैस संचालन मीथेन उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं। ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, भवन, कृषि और भूमि उपयोग ग्रीनहाउस गैसों का कारण बनने वाले मुख्य कारकों में से हैं।

हमारे वायुमंडल को और गर्म होने से बचाना अब दुविधा से भरा है। उस वार्मिंग का प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि तापमान कितना अधिक और कितनी तेजी से बढ़ता है। जलवायु परिवर्तन से मौसम का मिजाज बदल जाता है, जिससे गंभीर मौसम की घटनाएं, लू, सूखा और बाढ़ आती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियर और बर्फ की चोटियाँ पहले से ही सिकुड़ रही हैं, जिससे ताजे पानी की उपलब्धता में बदलाव आ रहा है। यह समुद्र के अम्लीकरण में योगदान देता है, मूंगा चट्टानों और अन्य जलीय पारिस्थितिक तंत्रों को नष्ट करता है। यह कुछ पौधों और जानवरों के लिए स्थानों को निर्जन बना देता है, जिससे प्रजातियों का विलुप्त होना और पुनर्वितरण होता है, जिससे विदेशी कीटों और बीमारियों से खाद्य उत्पादन को खतरा होता है। दुनिया में कई लोगों के लिए, जंगलों की आग और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाएं जीवन को तबाह कर देती हैं। जबकि कृषि पर गंभीर प्रभाव जैसे कि मिट्टी की गिरावट और बेमौसम मौसम के कारण अप्रत्याशित और अस्थिर फसल की पैदावार होती है।

इसकी संभावित मानवीय लागत विनाशकारी है। समुद्र के स्तर में वृद्धि से दुनिया भर के तटीय समुदायों और शहरों में लाखों लोगों को खतरा है। भोजन और पानी की कमी और उत्पादक भूमि पर संघर्ष उत्पन्न होगा, जबकि वैश्विक स्वास्थ्य में प्रगति को मलेरिया जैसी संचारी बीमारियों के उन स्थानों तक पहुंचने से रोका जा सकता है जहां वे पहले कभी मौजूद नहीं थे। जलवायु संकट के कई कारक हैं, जिनमें से एक जनसंख्या भी है। तकनीकी समाधान, व्यक्तिगत जीवनशैली में बदलाव, जीवाश्म ईंधन के उपयोग को न्यून करने और वैकल्पिक ऊर्जा विकसित करने की नीतियां और हमारी आर्थिक प्रणालियों में संभावित मूलभूत परिवर्तन सभी महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से विनाशकारी जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए समय-सीमा बहुत कम है। हालाँकि, हम जो भी अन्य परिवर्तन करते हैं, उनका सकारात्मक प्रभाव कम हो जाएगा और हमारी जनसंख्या बढ़ने पर लाखों नए लोगों के उत्सर्जन को जोड़कर इसे पूरी तरह से रद्द भी किया जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन हमारे स्वास्थ्य, भोजन उत्पादन की क्षमता, आवास, सुरक्षा और कार्य को प्रभावित कर सकता है। हममें से कुछ लोग पहले से ही जलवायु प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं, जैसे कि छोटे द्विपीय देशों और अन्य विकासशील देशों में रहने वाले लोग। समुद्र के स्तर में वृद्धि और खारे पानी की घुसपैठ जैसी स्थितियाँ इस हद तक बढ़ गई हैं कि तटीय समुदायों को स्थानांतरित करना पड़ता है, और लंबे समय तक सूखा रहने से लोगों के लिए अकाल का खतरा पैदा हो जाता है। भविष्य में मौसम संबंधी घटनाओं से विस्थापित लोगों की संख्या बढ़ने की आशंका है।

44 देशों का मूल्यांकन करने वाले 2020 के एक शोध के अनुसार, जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले उत्सर्जन ने 1990 और 2019 के बीच अधिक ऊर्जा दक्षता से उत्पन्न उत्सर्जन में कमी का दो-तिहाई हिस्सा मिटा दिया। इस बीच, पुनर्नवीनीकरण जैसे समाधानों को और अधिक लागू करना अधिक कठिन हो सकता है क्योंकि लोगों को भोजन और जमीन की जरूरत है। अपनी ऐतिहासिक 2018 रिपोर्ट में, जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल ने विशेष रूप से पूर्व-औद्योगिक स्तरों से ऊपर ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के महत्वपूर्ण लक्ष्य को हासिल करने के लिए उच्च जनसंख्या वृद्धि को 'प्रमुख बाधा' के रूप में पहचाना। जनसंख्या नियंत्रण कोई स्थायी समाधान नहीं है, लेकिन यह भविष्य में कार्बन उत्सर्जन

में प्रभावी, सरल और स्थायी रूप से कटौती करने में सक्षम है, और यह अन्य समाधानों की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे सकारात्मक कार्यों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो लोगों को सशक्त और जीवन को बेहतर बनाता है।

1. हमारी अधिकांश बिजली और गर्मी कोयले, तेल और गैस से संचालित होती है। अपने हीटिंग और कूलिंग को कम करके, एलईडी लाइट बल्ब और ऊर्जा-कुशल बिजली के उपकरणों को अपना करके, अपने कपड़े ठंडे पानी से धोएं, या ड्रायर का उपयोग करने के बजाय चीजों को सूखने के लिए धूप में लटकाकर कम ऊर्जा का उपयोग करें।
2. दुनिया की सड़कें वाहनों से भरी हुई हैं, जिनमें से अधिकांश डीजल या पेट्रोल आछारित हैं। गाड़ी चलाने के बजाय पैदल चलने या बाइक चलाने से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आएगी और स्वास्थ्य रहने और फिटनेस में मदद मिलेगी। लंबी दूरी के लिए ट्रेन या बस लेने पर विचार करें और जब भी संभव हो कार पूल करें।
3. अधिक सब्जियाँ, फल, साबुत अनाज, फलियाँ, मेवे और बीज, और कम मांस तथा डेयरी खाने से आपके पर्यावरणीय प्रभाव में काफी कमी आ सकती है। पौधे-आधारित खाद्य पदार्थों के उत्पादन से आम तौर पर कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है और कम ऊर्जा, भूमि और पानी की आवश्यकता होती है।
4. हवाई जहाज बड़ी मात्रा में जीवाश्म ईंधन जलाते हैं, जिससे महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है। यह आपके पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए कम उड़ानें लेना उचित विकल्पों में से एक बनाता है। तो वर्चुअली मिलें, ट्रेन लें, या लंबी दूरी की यात्रा को पूरी तरह छोड़ दें।
5. जब आप भोजन फेंकते हैं, तो आप उन संसाधनों और ऊर्जा को भी बर्बाद कर रहे हैं जिनका उपयोग इसे उगाने, उत्पादन करने, पैकेज करने और परिवहन करने के लिए किया गया था। और जब भोजन लैंडफिल में सड़ता है, तो यह मीथेन, एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस पैदा करता है। इसलिए आप जो भी खरीदें उसका उपयोग करें और जो भी बचे उससे खाद बनाएं।
6. इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़े और अन्य वस्तुएं जो हम खरीदते हैं, कच्चे माल के निष्कर्षण से लेकर विनिर्माण और माल को बाजार तक पहुंचाने तक, उत्पादन के प्रत्येक बिंदु पर कार्बन उत्सर्जन का कारण बनते हैं। जलवायु की रक्षा के लिए, कम चीजें खरीदें, सेकेंड-हैंड खरीदारी करें। खरीदे गए सामानों की उसकी मरम्मत करें और रीसाइक्लिंग करें।

मधुरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ सहायक

जलवायु परिवर्तन के कारण एवं दुष्प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व चारों तरफ से वनस्पतियों, जंगलों, प्राकृतिक एवं जीव जन्तुओ आदि से चारों तरफ से घिरा हुआ हैं, जिस पर जलवायु परिवर्तन का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। प्राचीन काल से अनेकों प्रकार के जीव-जन्तु, वनस्पतियों एवं प्राकृतिक संसाधन जंगलों में पाये जाते हैं, किन्तु आधुनिक युग में जलवायु परिवर्तन होने के कारण बहुत-सी प्रजातियों के पशु-पक्षी, जीव-जन्तु, वनस्पतियों एवं प्राकृतिक संसाधन विलुप्त-प्राय हो गये हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण जंगलो को काटना, प्राकृतिक संसाधनो का दोहन, औद्योगीकीकरण का विकास, अत्यधिक मात्रा में मोटरकार वाहनों आदि का प्रयोग हैं। आधुनिक युग में विकास तेजी के साथ हो रहा हैं जिसके कारण नये-नये फैक्ट्रियों एवं कारखानों को स्थापित करने के लिए बड़ी मात्रा में जंगलों का सफाया हो रहा हैं। लोग जंगलो को काटकर बड़े-बड़े उद्योग स्थापित कर रहे हैं जिससे जंगलो में रहने वाले पशु पक्षियों एवं वनस्पतियों को नुकसान हो रहा है और वे विलुप्तप्राय होते जा रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण ही, समय पर बारिश न होने से कृषकों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा हैं। कभी सूख पड़ता है तो कभी अचानक से बाढ़ आ रही है। लोगों को अनेक प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा हैं। बड़े पैमाने पर कोयले का प्रयोग होना और उससे निकलने वाले धुएं जिससे वातावरण में कार्बन डाईआक्साईड की मात्रा बढ़ रही हैं जिससे वातावरण प्रभावित हो रहा हैं। भयंकर आधी-तूफान आ रहे, बादल फट रहे हैं। जिससे वृक्षों और जीव-जन्तुओ को नुकसान हो रहा हैं। यह सब जलवायु परिवर्तन के कारण ही हो रहा हैं। जब-जब मानव ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है तब-तब प्रकृति ने अपने भयंकर रूप को धारण किया हैं। कहीं पर अधिक बारिश हो रही हैं, तो कहीं पर भू-स्खलन, तो कहीं पर भूकम्प, तो कहीं पर सूखा पड़ रहा हैं तो कहीं पर बर्फ ही बर्फ हैं।

मानव अधिक मात्रा में संसाधनों का दोहन कर रहा है जिससे निकलने वाले धुएं और ध्वनि का भी असर वातावरण पर पड़ रहा हैं जिसका उपयोग अधिक से अधिक मात्रा में लोग कर रहे है। आज इस बढ़ती हुई आबादी में लोग प्रकृति का सबसे अधिक नुकसान कर रहे हैं, बड़ी-बड़ी बिल्डिंगों का निर्माण हो रहा हैं। भारी मात्रा में उद्योग-धंधे स्थापित किये जा रहे हैं जिससे अधिक मात्रा में धुएं का उत्सर्जन हो रहा है जो कि हमारे वातावरण को दूषित कर रहा है। सूर्य की आने वाली किरणें पृथ्वी पर उष्मा को छोड़ रही हैं और वह गर्मी इन्हीं सभी कारणों से बाहर नहीं निकल पा रही हैं जिसके कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ गया है। लोगों की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण मानव को अनेक दुष्परिणाम देखने को मिलते रहे हैं। जिससे लोगों की जीवन प्रत्याशा कम हो रही है। इसलिए मनुष्य को प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। प्रकृति में परिवर्तन का प्रमुख कारण जलवायु में परिवर्तन ही है जिसके कारण कहीं पर अधिक गर्मी तो कहीं पर बहुत अधिक ठण्डी तो कहीं पर बहुत अधिक वर्षा हो रही है जिसके कारण पशु पक्षियों, जानवरों और फसलों को नुकसान पहुँच रहा है एवं जन-धन की अत्यधिक हानि हो रही है।

जब-जब मानव ने प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है।
प्रकृति ने भी अपना भयंकर स्वरूप धारण किया है।
चारों तरफ आधी, तूफान, बाढ़ ने हाहाकार मचाया है।
सभी लोगों को माँ प्रकृति ने अपने अन्दर समाया है।
इसलिए मानव तुम संभल जाओ प्रकृति की यह ललकार है।

तृप्ति सिकरीवाल, सहायक

जलवायु परिवर्तन

जलवायु एक लंबे समय में या कुछ दशकों में किसी भौगोलिक स्थान का औसत मौसम होता है और जलवायु परिवर्तन उन्हीं औसत परिस्थितियों में बदलाव से संबंधित है। जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। वर्तमान में इसका प्रभाव संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है। इस परिवर्तन की वजह से पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तन की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन के ऐसे तो बहुत कारण हैं, परंतु कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :

ग्रीनहाउस गैसें : पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस गैसों की एक परत बनी हुई है, इस परत में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं। इस गैसों की परत पृथ्वी की सतह पर तापमान संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक है। वर्तमान मानवीय गतिविधियों के बढ़ने से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हो रही है और इसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है।

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण लोगों के जीवन जीने के तरीकों में काफी परिवर्तन आया है। सड़कों पर वाहनों की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है और जीवन शैली में परिवर्तन के कारण खतरनाक गैसों के उत्सर्जन में भी काफी वृद्धि हुई है।

भूमि के उपयोग में परिवर्तन : जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारक वाणिज्यिक या निजी प्रयोग हेतु वनों की कटाई है। वर्तमान समय में जिस तरह से वृक्षों की कटाई की जा रही हैं वह काफी नुकसानदायक है, क्योंकि पेड़ वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने वाले प्राकृतिक यंत्र के रूप में कार्य करते हैं और उनकी समाप्ति के साथ हम वह प्राकृतिक यंत्र भी खो देंगे।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव : पिछले कुछ दशकों में बाढ़, सूखा और बारिश आदि की अनियमितता काफी बढ़ गई है। यह सभी जलवायु परिवर्तन जनित परिणाम हैं। पिछले 150 वर्षों में वैश्विक औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। पावर प्लांट, ऑटोमोबाइल, वनों की कटाई और अन्य स्रोतों से होने वाला उत्सर्जन पृथ्वी को अपेक्षाकृत काफी तेजी से गर्म कर रहा है। इसके साथ ही गर्मी से संबंधित बीमारियाँ, बढ़ते समुद्र जल स्तर, तूफान की तीव्रता में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कई अन्य खतरनाक परिणामों में वृद्धि हो रही है।

तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ पक्षी प्रजातियों को विलुप्त होने पर मजबूर कर दिया है। कई सूत्रों के अनुसार, पृथ्वी की एक-चौथाई प्रजातियां वर्ष 2050 तक विलुप्त हो सकती हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण भविष्य में कोरोना, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियां और अधिक बढ़ेंगी तथा इन्हें नियंत्रित करना मुश्किल होगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार, पिछले दशक से अब तक हीट वेव्स के कारण लगभग 150000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो चुकी हैं।

जंगलों में आग : जलवायु परिवर्तन के कारण लंबे समय तक चलने वाली हीट वेव्स ने जंगलों में लगने वाली आग के लिये उपयुक्त गर्म और शुष्क परिस्थितियां पैदा की है। साथ ही यह भी सामने आया है कि अमेजन वन में आग लगने की घटना बीते वर्ष से 85 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं।

जलवायु परिवर्तन के इन खतरनाक परिणामों से बचने का एक मात्र उपाय यह है कि दुनिया भर के देश इस मुद्दे पर साथ आएं और पृथ्वी के तापमान को नियंत्रित करने के हर संभव प्रयास करें। हमारे छोटे-छोटे प्रयास जैसे कि पेड़-पौधे लगाना, कार का उपयोग कम करना, ऊर्जा बचाने वाले उपकरणों का प्रयोग करना, इत्यादि जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

अंकित पाण्डेय, अधीक्षक

जलवायु परिवर्तन

तापमान बढ़ रहा है, मौसम रहे हैं बदल

प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं, नए खतरे ला रही अटल

समुद्री स्तर बढ़ रहे, तटीय क्षेत्र रहे डूब

खाद्य सुरक्षा खतरे में, आर्थिक नुकसान हो रहे खूब

वनस्पति विनाश हो रहा, जैव विविधता हो रही कम

जलवायु परिवर्तन वैश्विक चुनौती, सामना कैसे करें हम

पृथ्वी है वेदना में, हम समय निकाल रहे संवेदना में

आओ मिलकर सुरक्षित और स्थायी भविष्य की दिशा में बढ़ें

आओ मिलकर, जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ें

हमें एकजुट होकर, इसका मुकाबला करना होगा,

ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा

नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना होगा,

यह हम सबकी जिम्मेदारी है, हमें इसे निभाना होगा

जलवायु परिवर्तन वैश्विक चुनौती,

फिर कैसे होगी देश की उन्नति

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ जब काम होगा,

विश्वास मानिए सकारात्मक इसका परिणाम होगा।

धीरज सिंह, वरिष्ठ शोध सहायक (प्रणाली)

जलवायु परिवर्तनः एक वैश्विक चुनौती

जलवायु परिवर्तन आज के समय में मानवता के सामने सबसे बड़ी और गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पृथ्वी के वातावरण में परिवर्तन हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप मौसम के पैटर्न, तापमान और पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन देखने को मिल रहा है। यह समस्या स्थानीय नहीं बल्कि वैश्विक है, जिसका असर दुनिया के हर हिस्से में पड़ रहा है। परिवर्तन का सीधा संबंध मानवीय गतिविधियों से है, जिसमें औद्योगिकीकरण शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण

जलवायु परिवर्तन के कई प्रमुख कारण हैं जिनमें मानव गतिविधियों का महत्वपूर्ण योगदान है :

ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जनः मानव गतिविधियों, जैसे जीवाश्म ईंधनों (कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस) का जलना, बिजली उत्पादन, परिवहन और औद्योगिक प्रक्रियाओं के कारण वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों (कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड) की मात्रा में वृद्धि हो रही है। ये गैस वातावरण में गर्मी को फंसाकर प्रकृति की सतह के तापमान में वृद्धि का कारण बन रहे हैं। यही ग्लोबल वार्मिंग का कारण हैं।

वनों की कटाईः वनों की अंधाधुंध कटाई से वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। पेड़ और वनस्पतियां इस गैस को अवशोषित करती हैं और वातावरण को संतुलित रखने में मदद करती हैं। जब वनों को काटा जाता है, तो इस प्राकृतिक कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है।

औद्योगिकीकरणः औद्योगिकीकरण के साथ-साथ ऊर्जा उत्पादन, निर्माण और अन्य औद्योगिक गतिविधियों के कारण बड़े पैमाने पर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। इसके साथ ही, औद्योगिक कचरे और प्रदूषकों के कारण भी वातावरण में असंतुलन पैदा होता है, जो जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा देता है।

कृषि और पशुपालनः आधुनिक कृषि और पशुपालन के तरीकों से भी जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है। मवेशियों से मिथेन गैस का उत्सर्जन, कृषि भूमि के लिए वनों की कटाई और कृषि में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो जलवायु परिवर्तन में योगदान करते हैं।

जनसंख्या वृद्धिः बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण संसाधनों की मांग में वृद्धि हो रही है। इससे ऊर्जा खपत, भूमि उपयोग में परिवर्तन और प्रदूषण में वृद्धि हो रही है। यह जलवायु परिवर्तन को और गंभीर बना रहा है।

शहरीकरणः तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण प्राकृतिक भूमि को कंक्रीट और इमारतों में मानव ढकता जा रहा है। इससे न केवल जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में वृद्धि होती है। शहरी इलाकों में गर्मी का प्रभाव अधिक महसूस किया जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

ग्लोबल वार्मिंग और तापमान वृद्धिः जलवायु परिवर्तन के कारण पृथ्वी का औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है। इसे ही ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। इससे ध्रुवीय बर्फ पिघल रहे है। ग्लेशियर सिकुड़ रहे हैं, और समुद्र का जलस्तर लगातार व धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। यह न केवल तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ा रहा है। बल्कि लाखों लोगों के जीवन और आजीविका को भी खतरे में डाल रहा है।

प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धिः जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा, तूफान, और जंगल की आग की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो रही है। यह न केवल जन-धन की हानि का कारण बन रहा है, बल्कि कृषि, जल संसाधन और

आर्थिक स्थिरता को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है।

पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता पर प्रभावः जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन पैदा हो रहा है। तापमान में वृद्धि और मौसम के पैटर्न में बदलाव के कारण कई प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। कई पौधे और जानवर उन क्षेत्रों में जीवित नहीं रहा पा रहे हैं। जहां वें आवास करते थे, वहां पर जैव विविधता में कमी आ रही है।

कृषि और खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव : बदलते मौसम के कारण कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। अनियमित वर्षा, बढ़ते तापमान और सूखे की बढ़ती घटनाओं के कारण फसलें प्रभावित हो रही हैं। इससे खाद्य सुरक्षा को खतरा पैदा हो रहा है। कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक गर्मी और सूखा कृषि योग्य भूमि को बंजर बना रहा है। इसके कारण खाद्य उत्पादों में भी कमी आ रही है।

स्वास्थ्य पर प्रभावः जलवायु परिवर्तन का मानव स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। अत्यधिक गर्मी के कारण हीट वेव्स से होने वाली बीमारियां, जलजनित बीमारियां, और मलेरिया जैसी संक्रामक बीमारियां तेजी से फैल रहीं हैं। इसके अलावा प्राकृतिक आपदाओं के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

समुद्र का जल स्तर बढ़नाः ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवीय बर्फ और ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र के विस्तार होने से समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। इससे तटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा बढ़ रहा है, जो वहां के निवासियों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहा है। कई छोटे द्वीप वाले राष्ट्र डूबने के खतरे का सामना कर रहे हैं।

मानव प्रवास और संघर्षः जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती प्राकृतिक समस्या आपदाओं और संसाधनों की कमी से कई क्षेत्र रहने के लिहाज से स्थिति कठिन होते जा रहे हैं। लोग मजबूर होकर अपने घर छोड़ने और अन्यत्र प्रवास करने को मजबूर हो रहे हैं। यह प्रवास कई बार सामाजिक और राजनीतिक तनाव का कारण बनता है और संघर्षों को जन्म दे सकता है।

आर्थिक प्रभावः जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्राकृतिक आपदाओं और मौसम के चरम रूपों के कारण अर्थव्यवस्थों पर भारी दबाव पड़ रहा है। कृषि मत्स्य पालन, पर्यटन और अन्य उद्योगों को नुकसान हो रहा है, जिससे वैश्विक और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

समाधान और प्रयासः जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। ये प्रयास न केवल पर्यावरण की रक्षा के लिए जरूरी है। बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोगः परंपरागत जीवाश्म ईंधनों की बजाय सौर, पवन और जल, विद्युत जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये ऊर्जा स्रोत पर्यावरण को प्रदूषित किए बिना बिजली और अन्य आवश्यक ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं। इसके लिए सरकारों और निजी संस्थानों को नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देना चाहिए और इससे संबंधित तकनीकों को सस्ता और सुलभ बनाना चाहिए।

ऊर्जा दक्षता में सुधारः ऊर्जा की खपत को कम करने के लिए ऊर्जा की दक्षता को बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए इमारतों, वाहनों और औद्योगिक प्रक्रियाओं में अधिक ऊर्जा-कुशल तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। उन्नत विद्युत उपकरण, ऊर्जा बचत करने वाले बल्ब और इन्स्यूलेशन तकनीकों का उपयोग करके ऊर्जा की खपत को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

वृक्षारोपण और वनों का संरक्षणः वृक्ष कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाना और मौजूदा वनों का संरक्षण करना जलवायु परिवर्तन को रोकने के महत्वपूर्ण उपाय है। वन संरक्षण से न केवल कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है, बल्कि जैव विविधता का संरक्षण भी होता है।

पर्यावरण के प्रति संवेदना और जागरूकताः लोगों को जलवायु परिवर्तन के खतरों और इसके समाधान के बारे में जागरुक करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए स्कूलों कॉलेजों और सामुदायिक केन्द्रों में पर्यावरण से संबंधित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही, जन जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को पर्यावरण के प्रति उनकी जिम्मेदारियों के बारे में बताया जाना चाहिए, ताकि वे भी अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण अनुकूल व्यवहार अपना सकें।

नीतिगत और कानूनी उपायः सरकारों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए ठोस नीतियां और कानून लागू करने की आवश्यकता है। इसमें ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए उत्सर्जन मानकों को कड़ा करना, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करना उसके लिए सब्सिडी देना, और वन संरक्षण के लिए उत्सर्जन मानकों के लिए कड़ा कानून बनाना शामिल हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, देशों को पेरिस समझौते जैसे वैश्विक समझौते का पालन करना चाहिए, ताकि वैश्विक तापमान में वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखा जा सके।

पर्यावरण अनुकूल कृषिः कृषि में अधिक टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल तरीकों का उपयोग करके भी जलवायु परिवर्तन से निपटा जा सकता है। जैविक खेती, फसल चक्रण और जल संवेदनशील कृषि तकनीकों का उपयोग करके न केवल ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम किया जा सकता है बल्कि मृदा की गुणवत्ता भी बढ़ाई जा सकती है।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है जिसका सामना हमें एकजुट होकर करना होगा। इसका प्रभाव न केवल पर्यावरण को बल्कि मानव समाज और आर्थिक विकास को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। इस संकट से निपटने के लिए हमें तुरंत और समन्वित कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

केवल एकजुट और सतत प्रयासों से ही हम इस वैश्विक चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। पृथ्वी को एक बेहतर, सुरक्षित और स्वस्थ स्थान बना सकते हैं। अगर हम समय रहते ठोस कदम उठाते हैं, तो हम न केवल अपने पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और समृद्ध दुनिया छोड़ सकते हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि हम अपनी जिम्मेदारियों को समझें और इस दिशा में सक्रिय रूप से कार्य करें, ताकि हम एक स्थायी और हरे-भरे भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकें।

तृप्ति सिकरीवाल, सहायक

जैसी करनी, वैसी भरनी

इंसान तुझे तेरे कर्मों की सजा मिल रही है,
जलवायु परिवर्तन की ये मार पड़ रही है।

तू दुखी, परेशान, लाचार है,
तू मजबूर, भयभीत हताश है।

गर्मी का मौसम बदल रहा, शीतलता घट रही है
हरित वनों की छाया छूट रही, जीव-जंतु खाली पेट घूमते हैं
तुझे तो तेरे अपराधों की सजा मिल रही है
जलवायु परिवर्तन की ये जो मार पड़ रही है।

लोभ वश तूने संसार किसी का बिगाड़ा है
नीड़, आशियाना किसी का ठिकाना उजाड़ा है।

बर्फीले शिखर घट रहे है, गंगा की धार सूखी हो रही है
हो अब क्यों बेचैन, जब मुश्किल दौर आया है
उष्णता की वृद्धि ने घेरा है, प्रकृति संतुलन खो रही है
तुझे तो बेजुबानों की बददुआएं मिल रही है
इंसान तुझे तो तेरे कर्मों की सजा मिल रही है
जलवायु परिवर्तन की ये मार पड़ रही है।

जय कुमार ठाकुर, पीएचडी 24001

वर्तमान अवधि में जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय

'हम पृथ्वी को अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं पाते, हम इसे अपनी आने वाली पीढ़ी से उधार लेते हैं।'

भारतीय पौराणिक कथाएँ प्राकृतिक संसाधनों के प्रति गहरी श्रद्धा और पर्यावरण संरक्षण के महत्व को उजागर करती हैं। ये कथाएँ न केवल मनुष्यों और प्रकृति के बीच के संबंध को दर्शाती हैं, बल्कि आधुनिक जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के प्रति भी महत्वपूर्ण संदेश प्रदान करती हैं।

समुद्र मंथन प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग और साझा करने की आवश्यकता पर जोर देती है, यह दर्शाते हुए कि पृथ्वी का शोषण नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से उपयोग होना चाहिए। रामायण में भगवान राम का चरित्र प्राकृतिक संसाधनों और सभी जीवों के प्रति सम्मान का प्रतीक है। जब श्रीराम को वनवास दिया गया, तो उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्वक जीवन व्यतीत किया, यह समझते हुए कि वनस्पति और जीव-जंतुओं का क्या महत्व है। सीता माँ की अपहरण की घटना, जिसके कारण दंडक वन की वनस्पति नष्ट हुई, पर्यावरणीय क्षति के परिणामों का एक चेतावनी भरा संकेत है जो स्थायी प्रथाओं की आवश्यकता को उजागर करती है।

वर्तमान काल में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट के रूप में उभरी है। इस महाप्रलयंकारी संकट निवारण हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। विश्वभर में औद्योगिक क्रांति उपरांत वायुमंडल में ग्रीनहाउस अथवा 'ग्रीनहाउस गैस' या गैसों की मात्रा में वृद्धि ने जलवायु संतुलन में व्यवधान पैदा किया है। इसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग, समुद्र स्तर में वृद्धि, सूखा, बाढ़, और अन्य प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं नियमित हो गयी हैं। विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में यह समस्या और भी गंभीर होती जा रही है। हमें वर्तमान दशक में जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु आधुनिक तकनीकी दृष्टिकोण के समावेश में परम्परागत समाधानों पर भी विचार करना होगा।

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों से होने वाला वायु प्रदूषण, अवैज्ञानिक कृषि पद्धतियां, वन क्षेत्रों का क्षय, और बढ़ती जनसंख्या द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन शामिल हैं। भारत जैसे विकासशील देश भी अब तेजी से शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं, जिससे इस समस्या की जटिलता बढ़ रही है। भारत ने सौर, पवन और जल विद्युत सहित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय सौर मिशन और राष्ट्रीय पवन-सौर हाइब्रिड मिशन जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं। वनीकरण को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम और प्रति पूरक वनीकरण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (सीएएमपीए) जैसी विभिन्न पहल की जा रही हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों को व्यापक रूप से अपनाने के लिए एक सुदृढ़ इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग बुनियादी ढांचे का विकास आवश्यक है। सरकार देशभर में चार्जिंग नेटवर्क के विस्तार पर काम कर रही है। भारत ने सौर पीवी सेल की स्थापना में महत्वपूर्ण प्रगति की है। सरकार ने मेक इन इंडिया पहल के माध्यम से सौर पीवी सेल और मॉड्यूल के लिए घरेलू विनिर्माण क्षमताओं के विकास का समर्थन किया है। भारत में पवन ऊर्जा की विशाल क्षमता है और हमें विभिन्न क्षेत्रों में पवन टरबाइनों की स्थापना को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) मापदंडों की भूमिका : वर्तमान दशक में, कंपनियों को जलवायु परिवर्तन से निपटने में उनकी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए ईएसजी मापदंडों के तहत काम करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। कंपनियों द्वारा पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन, सामाजिक और शासन संबंधित नियमों का पालन, और सतत विकास के प्रति जवाबदेही बढ़ाना, इस दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों में से हैं। उदाहरण के लिए, भारत की प्रमुख कंपनियां अब अपने व्यापारिक निर्णयों में ईएसजी मापदंडों को शामिल कर रही हैं, जिससे जलवायु पर उनके नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।

सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) और जलवायु परिवर्तन : संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) में जलवायु कार्रवाई (क्लाइमेट एक्शन) को एक प्रमुख लक्ष्य के रूप में रखा गया है। एसडीजी 13 के तहत, सभी देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्रवाई करने की आवश्यकता है। भारत ने इस दिशा में अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं, जैसे कि 'राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा मिशन' और 'राष्ट्रीय हरित इंडिया मिशन'। इसके

अलावा, अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में राष्ट्र ने तेजी से कदम बढ़ाए हैं, जिसमें सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग बढ़ाने पर जोर दिया गया है।

संयुक्त राष्ट्र सुधार (सीओपी) सम्मेलनों की भूमिका : जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से हित धारक सम्मेलन (सीओपी) जैसे मंचों पर लिए गए निर्णयों का विश्व भर में जलवायु कार्रवाई पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सीओपी 26 और सीओपी 27 जैसे सम्मेलनों में देशों द्वारा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने, और 2050 तक नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ठोस योजनाएं प्रस्तुत की गई। भारत ने सीओपी 26 में यह वचन दिया कि वह 2070 तक नेट-जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करेगा। यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा, हरित प्रौद्योगिकियों में निवेश, और ऊर्जा दक्षता में सुधार आवश्यक है।

भारत में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए उठाए गए कदम : भारतीय उपमहाद्वीप, विशेष रूप से भारत, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से सीधे प्रभावित हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप कृषि, जल संसाधन, और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं। इस स्थिति से निपटने के लिए भारत सरकार ने कई योजनाएं बनाई हैं, जिनमें प्रमुख हैं :

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (एनएपीसीसी): इसमें आठ प्रमुख मिशन शामिल हैं, जिनमें सौर ऊर्जा मिशन, ऊर्जा दक्षता मिशन, और स्थायी कृषि मिशन जैसे प्रमुख कदम शामिल हैं।

स्वच्छ भारत मिशनः पर्यावरण की रक्षा के लिए कचरे के प्रबंधन और स्वच्छता पर जोर दिया गया है।

उजाला योजनाः ऊर्जा कुशल एलईडी बल्बों का वितरण किया जा रहा है, जिससे ऊर्जा खपत में कमी आ रही है।

स्मार्ट सिटी मिशनः जलवायु लचीलेपन को ध्यान में रखते हुए शहरों का विकास किया जा रहा है, जिसमें हरित भवनों और परिवहन प्रणालियों का विकास हो रहा है।

पर्यावरणीय न्याय और जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले समुदाय आमतौर पर वे होते हैं, जो पहले से ही सामाजिक- आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में जलवायु परिवर्तन के कारण गरीब समुदायों पर अधिक असर पड़ता है। इसके तहत सूखा, बाढ़, और तटीय क्षेत्रों में समुद्र स्तर की वृद्धि जैसी समस्याएं हैं, जो कृषि और रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। इसलिए, जलवायु संतुलन सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे कमजोर वर्गों को इस संकट से बचाया जा सके।

जलवायु परिवर्तन से निपटने में नवाचार और प्रौद्योगिकी की भूमिका : वर्तमान दशक में, नवाचार और प्रौद्योगिकी का उपयोग जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए महत्वपूर्ण होगा। हरित प्रौद्योगिकियां जैसे इलेक्ट्रिक वाहनों का प्रचलन, स्मार्ट ग्रिड्स का निर्माण, और कार्बन कैप्चर और स्टोरेज तकनीकें इसका उदाहरण हैं। भारत में इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं, जैसे कि ई-वाहनों के लिए नीतियों का निर्माण और हरित हाइड्रोजन के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन के अंधकारमय परिणाम

यदि हम वर्तमान दशक में जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपायों को प्रभावी ढंग से लागू नहीं करते हैं, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। भारत जैसे विकासशील देशों में कृषि उत्पादन में कमी, जल संकट, और बार-बार आने वाली प्राकृतिक आपदाएं जन जीवन और अर्थव्यवस्था को बुरी तरह प्रभावित करेंगी।

ग्लोबल वार्मिंगः तापमान में वृद्धि के कारण ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र स्तर का बढ़ना तटीय क्षेत्रों के लिए खतरनाक साबित होगा।

जल संकटः भारत जैसे देशों में जल संसाधनों पर अत्यधिक दबाव होगा, जिससे पीने के पानी की कमी होगी।

खाद्य सुरक्षा पर खतराः कृषि उत्पादन में कमी से खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है, जो सामाजिक अशांति और असंतोष का कारण बनेगा।

जैसा कि हम कहते हैं, दीपक तले अंधेरा उसी तरह अतीत की सबसे परिष्कृत सभ्यता होने के बावजूद भी हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन योजनाओं के कार्यान्वयन में कुछ बाधाएँ जैसे महत्वपूर्ण वितीय संसाधनों की कमी, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन शमन के महत्व के बारे में लोगों के बीच जागरूकता, उद्योगों का प्रतिरोध बड़ी चुनौती है।

निष्कर्ष

भगवान बुद्ध की शिक्षाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रति गहरी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने 'अहिंसा' के सिद्धांत से हमें परिचित कराया तथा सभी जीवों के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का पालन करने की प्रेरणा दी। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वर्तमान दशक में ठोस कदम उठाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर ईएसजी मापदंड, एसडीजी, संयुक्त राष्ट्र के सुधार और सीओपी सम्मेलनों के निर्णयों का प्रभावी कार्यान्वयन आवश्यक है। भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से सतत विकास की दिशा में उठाए गए कदम महत्वपूर्ण हैं। यदि समय पर उचित कदम नहीं उठाए गए, तो इसके परिणामस्वरूप हमें न केवल पर्यावरणीय, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि हम समय रहते सचेत ना हुए, तो वह दिन निकट भविष्य में प्रकट हो जायेगा जब हम शुद्ध हवा हेतु कंधे पर ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर घूमेंगे। अतः जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो हमारे भविष्य को सुरक्षित और स्थायी बना सके।

पृथ्वी च दयितुं सर्वे जनाः समर्पयन्तु कर्माणि, यतः सुखं जीवितुं च।

ज़ोहरा ख़ातून, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित)

धरती का श्रृंगार

धरती की ये पुकार सुनो, पर्यावरण की ललकार सुनो।

बदलती ऋतुओं का अजब हाल, प्रकृति पर पड़ा भारी जाल।

पहले जहां थी हरियाली, अब वहां है सूखी डाली।

पेड़ कटे, जंगल घटे, पानी के बिना नदियां रूठी।

बर्फीली चोटियां पिघल रहीं, समुद्र की लहरें डराने लगीं।

धुआं-धुआं हुआ है आकाश, कहां गया वो नीला प्रकाश।

जीव-जंतु सब हैं परेशान, कहां जाएं, कहां पाएं आराम।

धरती अब बंजर हो रही, विकास की दौड़ में सब खो रही।

अब भी वक्त है, संभल जाएं, धरती को हरा-भरा बनाएं।

जल, जंगल और हवा बचाएं, मिलकर पर्यावरण को सजाएं।

अंजलि दीक्षित, शैक्षणिक सहयोगी (अनुबंधित)

जलवायु परिवर्तन और उससे निबटने हेतु प्रयास

विश्व भर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्व विदित है। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि ये समस्या विश्व स्तर पर एक बहुत ध्यान देने योग्य मुद्दा है एवं इससे निपटना वर्तमान समय की बड़ी आवश्यकता बन गई है। अर्थात बताते हैं कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62 डिग्री फॉरनहाइट (अर्थात् लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस) बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में भी लगभग 8 इंच की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि यह समय जलवायु परिवर्तन की दिशा में गंभीरता से विचार करने का है।

जलवायु परिवर्तन

सामान्यतः जलवायु का आशय किसी दिये गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है। अतः जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे जलवायु परिवर्तन कहते हैं। जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व में भी। यदि वर्तमान संदर्भ में बात करें तो यह इसका प्रभाव लगभग संपूर्ण विश्व में देखने को मिल रहा है। पृथ्वी के समग्र इतिहास में यहां की जलवायु कई बार परिवर्तित हुई है एवं जलवायु परिवर्तन की अनेक घटनाएं सामने आई हैं।

पृथ्वी का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में एक डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ गया है। पृथ्वी के तापमान में यह परिवर्तन संख्या की दृष्टि से काफी कम हो सकता है, परंतु इस प्रकार के किसी भी परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर हो सकता है। जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा, परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ गया है।

जलवायु परिवर्तन के कारण– 'विनाश के कगार पर विकास'

पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस गैस की एक परत बनी हुई है, इस परत में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं। ग्रीनहाउस गैसों की यह परत पृथ्वी की सतह पर तापमान संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक है और विश्लेषकों के अनुसार, यदि यह परत नहीं होगी तो पृथ्वी का तापमान काफी कम हो जाएगा। आधुनिक युग में जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियां बढ़ रही हैं, वैसे–वैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हो रही है और जिसके कारण वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है।

मुख्य ग्रीनहाउस गैसें

कार्बन डाइऑक्साइड : इसे सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस माना जाता है और यह प्राकृतिक व मानवीय दोनों ही कारणों से उत्सर्जित होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार, कार्बन डाइऑक्साइड का सबसे अधिक उत्सर्जन ऊर्जा हेतु जीवाश्म ईंधन को जलाने से होता है। आंकड़े बताते हैं कि औद्योगिक क्रांति के पश्चात वैश्विक स्तर पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

मीथेन : जैव पदार्थों का अपघटन मीथेन का एक बड़ा स्रोत है। बताया जाता है कि मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड से अधिक प्रभावी ग्रीनहाउस गैस है, परंतु वातावरण में इसकी मात्रा कार्बन डाइऑक्साइड की अपेक्षा कम है।

क्लोरोफ्लोरोकार्बन : इसका प्रयोग मुख्यतः रेफ्रिजरेंट और एयर कंडीशनर आदि में किया जाता है एवं ओजोन परत पर इसका काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भूमि के उपयोग में परिवर्तन

वाणिज्यिक या निजी प्रयोग हेतु वनों की कटाई भी जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारक है। पेड़ न सिर्फ हमें फल और छाया देते हैं, बल्कि ये वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड जैसी महत्त्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैस को भी अवशोषित करते हैं। वर्तमान समय में जिस

तरह से वृक्षों की कटाई की जा रही हैं वह काफी चिंतनीय है, क्योंकि पेड़ वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने वाले प्राकृतिक यंत्र के रूप में कार्य करते हैं और उनकी समाप्ति के साथ हम वह प्राकृतिक यंत्र भी खो देंगे। कुछ देशों जैसे- ब्राजील और इंडोनेशिया में निर्वनीकरण ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन का सबसे प्रमुख कारण है।

शहरीकरण : शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण लोगों के जीवन जीने के तौर-तरीकों में काफी परिवर्तन आया है। विश्व भर की सड़कों पर वाहनों की संख्या काफी अधिक हो गई है। जीवन शैली में परिवर्तन ने खतरनाक गैसों के उत्सर्जन में काफी अधिक योगदान दिया है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव

उच्च तापमान : पावर प्लांट, ऑटोमोबाइल कि बढ़ोत्तरी, वनों की कटाई और अन्य स्रोतों से होने वाला ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन पृथ्वी को अपेक्षाकृत काफी तेजी से गर्म कर रहा है। पिछले 150 वर्षों में वैश्विक औसत तापमान लगातार बढ़ रहा है और वर्ष 2024 को सबसे गर्म वर्ष के रूप में रिकार्ड किया गया है। गर्मी से संबंधित मौतों और बीमारियों, बढ़ते समुद्र स्तर, तूफान की तीव्रता में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कई अन्य खतरनाक परिणामों में वृद्धि के लिये बढ़े हुए तापमान को भी एक कारण माना जा सकता है। एक शोध में पाया गया है कि यदि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के विषय को गंभीरता से नहीं लिया गया और इसे कम करने के प्रयास नहीं किये गए तो सदी के अंत तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान तीन से दस डिग्री फारेनहाइट तक बढ़ सकता है।

वर्षा के स्वरूप में बदलाव : पिछले कुछ दशकों में बाढ़, सूखा और बारिश आदि की अनियमितता काफी बढ़ गई है। यह सभी जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप ही हो रहा है। कुछ स्थानों पर बहुत अधिक वर्षा हो रही है, जबकि कुछ स्थानों पर पानी की कमी से सूखे की संभावना बन गई है।

समुद्र जल के स्तर में वृद्धि : वैश्विक स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग के दौरान ग्लेशियर पिघल जाते हैं और समुद्र का जल स्तर ऊपर उठता है जिसके प्रभाव से समुद्र के आस-पास के द्वीपों के डूबने का खतरा भी बढ़ जाता है। मालदीव जैसे छोटे द्वीपीय देशों में रहने वाले लोग पहले से ही वैकल्पिक स्थलों की तलाश में हैं।

वन्यजीव प्रजाति का नुकसान : तापमान में वृद्धि और वनस्पति पैटर्न में बदलाव ने कुछ प्रजाति के पक्षियों को विलुप्त होने के लिये मजबूर कर दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार पृथ्वी की एक चौथाई प्रजातियां वर्ष 2040 तक विलुप्त हो सकती हैं। वर्ष 2008 में ध्रुवीय भालू को उन जानवरों की सूची में जोड़ा गया था जो समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण विलुप्त हो सकते हैं।

जंगलों में आग : जलवायु परिवर्तन के कारण लंबे समय तक चलने वाली हीट वेव्स ने जंगलों में लगने वाली आग के लिये उपयुक्त गर्म और शुष्क परिस्थितियां पैदा की हैं। ब्राजील स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी 2019 से अब तक ब्राजील के अमेजन वन के कुल 74144 बार वनाग्नि का सामना कर चुके हैं। साथ ही यह भी सामने आया है कि अमेजन वन में आग लगने की घटना बीते वर्ष 2018 से 85 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं।

जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा : जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की पैदावार कम होने से खाद्यान्न समस्या उत्पन्न हो सकती है, साथ ही भूमि निम्नीकरण जैसी समस्याएं भी सामने आ सकती हैं। एशिया और अफ्रीका पहले से ही आयातित खाद्य पदार्थों पर निर्भर हैं। ये क्षेत्र तेजी से बढ़ते तापमान के कारण सूखे की चपेट में आ सकते हैं। आईपीसीसी की रिपोर्ट के अनुसार कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में गेहूँ और मक्के जैसी फसलों की पैदावार में पहले से ही गिरावट देखी जा रही है।

वातावरण में कार्बन की मात्रा बढ़ने से फसलों की पोषण गुणवत्ता में कमी आ रही है। उदाहरण के लिये उच्च कार्बन वातावरण के कारण गेहूं की पौष्टिकता में प्रोटीन का 6 प्रतिशत से 13 प्रतिशत, जस्ते का 4 प्रतिशत से 7 प्रतिशत और लोहे का 4 प्रतिशत से 8 प्रतिशत तक की कमी आ रही है। यूरोप में गर्मी की लहर की वजह से फसल की पैदावार गिर रही है। ब्लूमबर्ग एग्रीकल्चर इंडेक्स 9 फसलों का एक मूल्य मापक है जो मई में एक दशक के सबसे निचले स्तर पर आ गया था। इस सूचकांक की अस्थिरता खाद्यान्न सुरक्षा की अस्थिरता को प्रदर्शित करती है।

यूएनएफसीसीसी : यूएनएफसीसीसी कटौती को ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को रोकने के प्रयास के रूप में परिभाषित करता है। नई प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के उत्पादन व उपयोग पर बल तथा पुराने उपकरणों को अधिक ऊर्जा कार्यकुशल बनाना प्रबंधन कार्यप्रणाली व उपभोक्ता व्यवहार में बदलाव कटौती उपायों की उपायदेयता सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं। यूएनएफसीसी के अंतर्गत वर्तमान में जो वित्तीय तंत्र कार्यशील हैं उनके बारे में संक्षिप्त विवरण यहां अपेक्षित है-

वैश्विक पर्यावरण सुविधा (जीएएफ) : इसका गठन वर्ष 1980 में किया गया था। यह विकासशील व संक्रमणशील अर्थव्यवस्थाओं को जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय जल, भूमि अवमूल्यन, ओजोन क्षरण, आर्गेनिक प्रदूषकों के संदर्भ में परियोजनाएं चलाने के लिये वित्तपोषित करता है। यह फेसिलिटी यू.एन. अभिसमय के तहत दो अन्य कोष- लीस्ट डेवलप्ड कंट्रीज फंड और स्पेशल क्लाइमेट चेंज फंड एससीसीएफ को प्रशासित करता है।

अल्पविकसित देशों हेतु कोष : इस कोष का गठन अल्पविकसित देशों को राष्ट्रीय अनुकूलन कार्यक्रम योजना के निर्माण व क्रियान्वयन में सहायता करने के लिये किया गया था। एनएपीए के जरिए अल्प विकसित राष्ट्रों के अनुकूलन कार्यक्रम योजना की वरीयता की पहचान की जाती है। इस कोष के तहत अल्प विकसित देशों को कृषि, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, जलवायु सूचना सेवाएं, जल संसाधन प्रबंधन, तटीय क्षेत्र प्रबंधन, आपदा प्रबंधन आदि नजरिये से मूल्यांकित किया जाता है।

विशेष जलवायु परिवर्तन हेतु कोष : इस कोष का गठन यूएनएफसीसीसी के तहत वर्ष 2001 में किया गया था। इसे अनुकूलन तकनीकी हस्तांतरण, क्षमता निर्माण, ऊर्जा, परिवहन, उद्योग, कृषि वानिकी और अपशिष्ट प्रबंधन एवं आर्थिक विविधीकरण से संबंधित परियोजनाओं के वित्तीयन के लिये गठित किया गया था। यह जीवाश्म ईंधन से प्राप्त आय पर अत्यधिक निर्भर देशों में आर्थिक विविधीकरण व जलवायु परिवर्तन राहत हेतु अनुदान देता है।

अनुकूलन वित्त : इस कोष का गठन भी वर्ष 2001 में किया गया था। इसका उद्देश्य 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल के साझेदार विकासशील देशों में ठोस परियोजनाओं व कार्यक्रमों का वित्तपोषण करना था।

ऐसे राष्ट्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है जो जलवायु परिवर्तन के गंभीर खतरों का सामना कर रहे हैं। इस कोष को वित्त क्लीन डेवलपमेंट मेकेनिज्म सीडीएम से प्राप्त होती है। एक सीडीएम प्रोजेक्ट गतिविधि के लिये जारी सर्टीफाइड एमीशन रिडक्शन का 2 प्रतिशत इस कोष में जाता है।

हरित जलवायु कोष : यह यूएनएफसीसीसी के तहत एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्था है। वर्ष 2009 में कोपेनहेगन में हुए संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में हरित जलवायु कोष के गठन का प्रस्ताव किया गया था जिसे 2011 में डरबन में हुए सम्मेलन में स्वीकार कर लिया गया। यह कोष विकासशील देशों को जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिये सहायता राशि उपलब्ध कराता है।

कोपेनहेगेन समझौते में विकसित देश इस बात पर सहमत हुए थे कि वर्ष 2020 तक लोक व निजी वित्त के रूप में हरित जलवायु कोष के तहत विकासशील देशों को 100 बिलियन डॉलर उपलब्ध कराया जाएगा। वहीं 19 वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन वारसा में 2016 तक 70 बिलियन डॉलर देने का लक्ष्य तय किया गया जिसे विकासशील राष्ट्रों ने अस्वीकार किया था।

एक तरफ जहां विकसित देश पृथ्वी की धारणीय शक्ति की सीमा को नजरंदाज कर प्राकृतिक संसाधनों को उपभोग, विलास, संवृद्धि का माध्यम मानते हैं, वहीं कृषि प्रधान विकासशील देशों में पृथ्वी व प्राकृतिक संसाधनों को जीवन-समर्थनकारी प्रणाली के रूप में देखा जाता है। विकसित देश विकासशील देशों के लिये वित्तीय दायित्व का बोझ उठाने के प्रति अनिच्छुक रहे हैं। इस सम्मेलन में जलवायु वित्तीयन के विविध आयामों पर सकारात्मक कार्यवाही करने की मंशा व्यक्त की गई है लेकिन विकसित व विकासशील देशों में एक सुस्पष्ट साझी समझ का विकसित होना किसी भी सफलता की प्राप्ति के लिये आवश्यक है। समस्या की पहचान आकलन बेहतर समन्वयन व प्रबंधन आदि से जुड़ी चुनौतियों की निगरानी आवश्यक है। विचारणीय है कि वर्ष 2007 में जलवायु वित्तीयन समीक्षा रिपोर्ट में यूएनएफसीसीसी के तत्त्वावधान में स्पष्ट किया गया था कि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों अनुकूलन व कटौती उपायों के लिये आवश्यक धनराशि व निवेश 2030 तक वैश्विक सकल उत्पाद के 0.3 से 0.5 प्रतिशत के बराबर होगा जबकि वैश्विक निवेश के 2 से लगभग 3 प्रतिशत की आवश्यकता होगी। इस परिप्रेक्ष्य में अंतरराष्ट्रीय समुदाय से जलवायु वित्तीयन पर एक सद्भाव पूर्ण पहल किये जाने की अपेक्षा एक वैध मांग है।

पेरिस समझौता : पेरिस जलवायु समझौते में यह लक्ष्य तय किया गया था कि इस शताब्दी के अंत तक वैश्विक तापमान को 2 डिग्री सेल्सियस के नीचे रखने की हर संभव कोशिश की जाएगी। इसका कारण यह बताया गया था कि वैश्विक तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने पर समुद्र का स्तर बढ़ने लगेगा मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा और जल व भोजन का अभाव भी हो सकता है। इसके अंतर्गत उत्सर्जन में कमी लाने का लक्ष्य तय करके जल्द ही इसे प्राप्त करने की प्रतिबद्धता तो जाहिर की गई थी परन्तु इसका मार्ग तय नहीं किया गया था। इसका तात्पर्य यह है देश इस बात से अवगत ही नहीं हैं कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में उन्हें क्या करना होगा। दरअसल सभी देशों में कार्बन उत्सर्जन स्तर अलग-अलग होता है अतः सभी को अपने देश में होने वाले उत्सर्जन के आधार पर ही उसमें कटौती करनी होगी।

एनडीसी के लक्ष्यों को प्राप्त करना : पेरिस समझौते के तहत भारत द्वारा 2021 से 2030 तक के लिये आठ लक्ष्यों की एनडीसी की रूपरेखा प्रस्तुत की गई, जिसके अंतर्गत 2004 के स्तर से 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता में 33 से 35 प्रतिशत की कमी करने, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और ग्रीन क्लाइमेट फंड से कम लागत वाली अंतरराष्ट्रीय वित्त व्यवस्था की सहायता से वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से लगभग 40 प्रतिशत संचयी बिजली उत्पादन क्षमता हासिल करना है।

2030 तक अतिरिक्त वन और वृक्ष आच्छादन के माध्यम से 2.5 से 3 अरब टन कार्बन डाइआक्साइड के बराबर का अतिरिक्त कार्बन सिंक बनाना शामिल है। इसके अन्य लक्ष्य टिकाऊ जीवनशैली से संबंधित हैं। इनमें जलवायु अनुकूल विकास पथ, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, जलवायु परिवर्तन वित्त और क्षमता निर्माण तथा प्रौद्योगिकी जैसे पक्षों को शामिल किया गया है।

एन.डी.सी. क्या है : एन.डी.सी. राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों का बिना शर्त क्रियान्वयन और तुलनात्मक कार्यवाही के परिणामस्वरूप पूर्व औद्योगिक स्तरों के सापेक्ष वर्ष 2100 तक तापमान में लगभग 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होगी जबकि यदि राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों का सशर्त कार्यान्वयन किया जाएगा तो इसमें कम-से-कम 1 डिग्री सेल्सियस से भी कम की कमी आएगी। जीवाश्म ईंधन और सीमेंट उत्पादन का ग्रीनहाउस गैसों में 70 प्रतिशत योगदान होता है। रिपोर्ट में 2030 के लक्षित उत्सर्जन स्तर और 208 से 1 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अपनाए जाने वाले मार्गों के बीच विस्तृत अंतराल है। वर्ष 2030 के लिये सशर्त और शर्त रहित एनडीसी के पूर्ण क्रियान्वयन द्वारा तापमान में 200 की बढ़ोतरी से 2 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन अनुमानित है।

अन्य महत्त्वपूर्ण पहल : इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये भारत सरकार द्वारा एनएपीसीसी का क्रियान्वयन किया जा रहा है। 30 जून 2008 को जारी की गई जलवायु परिवर्तन संबंधी राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने और भारत के विकास के पथ की पारिस्थितिकीय वहनीयता में वृद्धि करने के लिये सौर ऊर्जा, संवर्धित ऊर्जा दक्षता, वहनीय प्रयास, जल, हिमालयी पार-प्रणाली को बनाए रखने, हरित भारत, वहनीय कृषि और जलवायु परिवर्तन हेतु कार्यनीतिक ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्रों में आठ राष्ट्रीय मिशनों की रूपरेखा तैयार की गई है। इसके अलावा 32 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा एसएपीसीसी पर राज्य कार्य योजना तैयार की गई है जो एनएपीसीसी के उद्देश्यों के ही अनुरूप है। इसके अतिरिक्त भारत सरकार पर्यावरणीय दृष्टि से कमजोर क्षेत्रों में अनुकूलन कार्यों को लागू करने के लिये एक समर्पित राष्ट्रीय अनुकूलन कोष भी लागू कर रही है।

जलवायु परिवर्तन और भारत के प्रयास

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना : जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना का शुभारंभ वर्ष 2008 में किया गया था। इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपायों के बारे में जागरूक करना है।

इस कार्ययोजना में मुख्यतः 8 मिशन शामिल हैं :

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा दक्षता के लिये राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन

- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

इसके अलावा भारत के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा एसएपीसीसी पर राज्य कार्ययोजना तैयार की गई है जो तय किये गए उद्देश्यों के ही अनुरूप है।

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन : अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा से संपन्न देशों का एक संधि आधारित अंतर-सरकारी संगठन है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत भारत और फ्रांस ने 30 नवंबर 2014 को पेरिस जलवायु सम्मेलन के दौरान की थी। इसका मुख्यालय गुरुग्राम, हरियाणा में है। इसके प्रमुख उद्देश्यों में वैश्विक स्तर पर 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता प्राप्त करना और 2030 तक सौर ऊर्जा में निवेश के लिये लगभग 1000 बिलियन डॉलर की राशि को जुटाना शामिल है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली बैठक का आयोजन नई दिल्ली में किया गया था। हममें से बहुत लोग, जलवायु परिवर्तन की वजह से जंगल की आग, चक्रवात और बाढ़ की बढ़ती घटनाओं को काबू में करने की अपनी अक्षमता का रोना रोते हैं। माना जाता है कि जीवाश्म ईंधन इस्तेमाल कर प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों को रोकना मुश्किल है। सरकारें उन्हें नियंत्रित करेंगी नहीं, और उत्सर्जन में कटौती के लक्ष्य कभी पूरे नहीं हो पाएंगे। हालांकि वैश्विक तापमान को भड़काने वाली ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जनों को सीमित करने के लिए कई सारी चीजें ऐसी है जो हम व्यक्तिगत तौर पर अथवा सामूहिक रूप से कर सकते हैं।

1-विमान और पेट्रोल के वाहन छोड़िए और बस, ट्रेन या साइकिल से चलिए : परिवहन से दुनिया का 20 प्रतिशत उत्सर्जन निकलता है। सड़क यातायात से सबसे बुरी स्थिति बनती है। परिवहन को कार्बन मुक्त करने के लिए उत्सर्जनों में कटौती का एक आसान तरीका है, पेट्रोल से चलने वाली कारों के बदले ट्रेन, साइकिल, ई-वाहन का इस्तेमाल करें और जहां तक संभव हो पैदल चलकर आना-जाना करें। यानी सबसे शून्य उत्सर्जन वाला ट्रांसपोर्ट शहरों में, ई-स्कूटर से लेकर ई-बसों तक बिजली से चलने वाले परिवहन विकल्प मौजूद हैं और वे एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने तक एक कम उत्सर्जन मार्ग बनाते हैं। इलेक्ट्रिक स्कूटर की तुलना में एक पेट्रोल कार दस गुना ज्यादा कार्बन का उत्सर्जन करती है। इसमें उत्पादन से लेकर कबाड़ के निपटारे तक से जुड़ा उत्सर्जन भी शामिल है। विमान से कभी सफर नहीं करने वाली दुनिया की करीब 10 फीसदी आबादी के लिए विमान के बदले ट्रेनों से आवाजाही का भी एक बड़ा असर पड़ सकता है। यूरोपीय शहरों के बीच एक आम रेल सफर उसी दूरी की उड़ान के मुकाबले 90 फीसदी कम सीओटू उत्सर्जित करता है।

2- मांस नहीं, फल सब्जी और अनाज खाइये : मीट और डेयरी उत्पाद, 15 फीसदी वैश्विक ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन का जिम्मेदार है। जैव विविधता का नुकसान, मिट्टी का दूषित हो जाना और प्रदूषण जो है सो अलग है। इस साल जब जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय पैनल (आईपीसीसी) ने कहा था कि ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए उत्सर्जनों को 2030 तक आधा करना होगा। उसने इस बात पर भी जोर दिया था कि पौधा आधारित प्रोटीन की अधिकता वाले और मीट और डेयरी रहित आहार में, ग्रीनहाउस गैसों की कटौती करने की सबसे ज्यादा क्षमता है। हालांकि अभी तक पौधे सिर्फ 2 फीसदी प्रोटीन देते हैं। बोस्टन कन्सलटिंग ग्रुप के मुताबिक वर्ष 2035 तक इसके 11 फीसदी तक बढ़ जाने की संभावना है, ये और तेज भी हो सकता है अगर हममें से ज्यादातर लोग मांस और डेयरी उत्पादों की अपनी मांग में कटौती कर दें।

3-हरित ऊर्जा और जहां संभव है वहां अक्षय ऊर्जा का इस्तेमाल कीजिए : ऊर्जा के लिए जीवाश्म ईंधनों को जलाना, ग्लोबल ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जनों का सबसे बड़ा स्रोत है। साफ, अक्षय स्रोत जैसे पवन ऊर्जा या सौर ऊर्जा से हरित ऊर्जा हासिल करने का विकल्प बढ़िया है। यह जलवायु तबाह करने वाले कार्बन के मुख्य स्रोत को खत्म कर सकता है। ग्राहक पहले ही अंतर पैदा कर

चुके हैं। यूरोपीय संघ में वर्ष 2019 से, अक्षय ऊर्जा उत्पादन वर्ष 2005 की तुलना में दोगुना हो चुका है, 34 फीसदी बिजली उसी से आती है। इसका मतलब है कि यूरोपीय संघ की अधिकांश बिजली कोयले से पैदा नहीं की जाती है। कोयला उत्सर्जन के लिए सबसे बड़े जिम्मेदार जीवाश्म ईंधन है। एक घर या मकान या अपार्टमेंट में रहने वाले लोग भी अपनी छतों पर सौर ऊर्जा लगा सकते हैं या गैस हीटिंग के बदले, जहां संभव हो, इलेक्ट्रिक हीट पंप लगा सकते हैं। कुछ समुदाय तो अपने आसपास, विशिष्ट रूप से अक्षय ऊर्जा पर ही निर्भर रहने के लिए आपसी सहयोग कर रहे हैं।

4-लाइट बंद और हीटिंग कम कीजिए : हीटिंग को कम करना या बंद करना जैसी सामान्य सी चीज भी बहुत सारी ऊर्जा बचा सकती है। रूसी गैस पर देश की निर्भरता से पैदा हुए ऊर्जा संकट से जूझ रही जर्मन सरकार इसीलिए इन सर्दियों में सरकारी इमारतों में हीटिंग के तापमान को 19 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करेगी। रात में कम्प्यूटर बंद करना और उपयोग में नहीं आ रहे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को अनप्लग कर जलवायु को सोखने वाली ऊर्जा को हटाना भी जलवायु बदलाव को रोकने वाली एक कार्रवाई है जिसे हम आज के दौर में हासिल कर सकते हैं। इससे भी ज्यादा आसान है कि जब कमरे में ना हों तो लाइट बंद कर दें। ऊर्जा की उच्च्व बचत वाले उपकरणों का इस्तेमाल, जैसे कि गैस के चूल्हों के बदले इंडक्शन भी इस दिशा में एक कदम है। इससे भी अच्छा है कि आप सरकार से स्मारकों और इमारतों में रात भर जलने वाली लाइटें बंद करने की मांग करें। जर्मन राजधानी बर्लिन में हाल में ये नीति लागू कर दी गई है।

5-खाना बेकार ना जाने दें : दुनिया का एक तिहाई भोजन फेंक दिया जाता है। अगर उत्पादन, परिवहन और उपयोग का आकलन किया जाए तो खाने का ये नुकसान और कचरा एक बहुत बड़ा कार्बन उत्सर्जक है। कचरा ठिकानों में फेंका जाने वाला खाना मीथेन पैदा करता है, वे छोटी अवधि में एक बड़े नुकसान वाली ग्रीनहाउस गैस है। अमेरिका में, सालाना भोजन नुकसान और खाद्य कचरे से 17 करोड़ मीट्रिक टन कार्बन डाइऑक्साइड के बराबर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन होता है और इसमें कचरा ठिकानों के उत्सर्जन शामिल नहीं हैं। कुल मिलाकर ये कोयले से चलने वाले 42 ऊर्जा संयंत्रों के सालाना उत्सर्जनों के बराबर है। इसीलिए फ्रिज में रखी हर चीज हम न खा सकें, तो उसे कम से कम खाद में डाल दीजिए जो बगीचे को उर्वर बनाएगी या बायोगैस में इस्तेमाल कर लीजिए। इस बीच सुपर बाजारों को अतिरिक्त भोजन न फेंकने के लिए दबाव डालें। बचे भोजन को फूड बैंकों या दान संस्थाओं को दे दीजिए। रेस्तरां को कहिए कि वो नहीं खाये गये भोजन के लिए 'डॉगी बैग्स' दें। ये दोनों उपाय हाल में स्पेन में पारित हुए फूड वेस्ट कानून में शामिल हैं।

6- पेड़ लगाइये - वातावरण को बचाइए : पेड़ एक बहुत जरूरी कार्बन सिंक हैं, फिर भी जंगल बड़े पैमाने पर काटे जा रहे हैं। मिसाल के लिए अमेजन जंगल की कटाई में पिछले साल 20 फीसदी की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई थी। पहले से कहीं ज्यादा, इस समय पेड़ लगाना मतलब वायुमंडल में सीओटू को कम करना है। व्यक्तिगत तौर पर ये सबसे अच्छा उपाय है। पेड़ ना सिर्फ हवा को साफ करते हैं, जैवविविधता को बढ़ाते हैं और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हैं बल्कि वे ऊर्जा भी बचाते हैं। खासकर शहरों में ये देखा जा सकता है जहां सड़कों पर लगे ज्यादा से ज्यादा पेड़ ठंडक पहुंचाते हैं और एयरकंडिशनिंग की जरूरत में कटौती करते हैं। ये कार्बन मुक्त गैर-लाभकारी उपाय है। इसी तरह सर्दियों मे, पेड़ हवा से महफूज रखने वाले शेल्टर होम की तरह काम करते हैं और इस तरह हीटिंग की कीमतों में 25 फीसदी तक की कमी ले आते हैं।

7- प्लास्टिक या पॉलिथीन का परित्याग : हम दिन के शुरू होने से रात को सोने तक सारे कामों में पॉलिथीन का प्रयोग करते है फिर चाहे सब्जी लाना हो या फिर कपड़े खरीदना हो हम सभी जगह से पॉलिथीन लाते हैं। पॉलिथीन का अधिक प्रयोग करते हैं जो कि एक बहुत बड़ा कारक हैं हमारे पर्यावरण को दूषित करने का। तो यदि हमें अपने ग्रह को बचाना है तो हमें पन्नी को छोड़ना होगा।

तो अंत में अपनी कलम को विराम देते हुए मैं बस यही कहूंगी कि …

चलिए सभी इस धरती को रहने योग्य बनाये,
अपने पर्यावरण को प्रदूषण रहित बनाये,
करें नियमों का पालन और अपनी वसुंधरा को जल,
पेड़ और पक्षियों से समृद्ध बनाये।

प्रो. गिरीश बालासुब्रमण्यम

चंद्रशिला की चढ़ाई

भारतीय प्रबंध संस्थान लखनऊ के छात्र एवं संकाय सदस्य गण नई ऊंचाइयां छूने के लिए ख्याति प्राप्त हैं। अप्रैल 2024 के ग्रीष्म अवकाश में संकाय के कुछ सदस्यों और उनके परिवार जनों ने चंद्रशीला पर्वत की सफल चढ़ाई कर एक नई ऊंचाई अर्जित की। संकाय के सदस्य और उनके परिजनों सहित इस यात्रा में कुल 21 लोगों ने भाग लिया जिसमें सबसे कम उम्र के पर्वतारोही 8 वर्ष के थे और सबसे वरिष्ठ अग्रज 58 वर्ष के थे, जो विषम परिस्थितियों के बावजूद भी सभी यात्रियों के साथ चंद्रशीला की चोटी तक पहुंचने में सफल रहें।

चंद्रशीला पर्वत देवभूमि उत्तराखंड राज्य में स्थित है। इस पर्वत की चोटी से हिमालय पर्वत शृंखला की कई प्रसिद्ध चोटियां दृष्टिगोचर होती हैं, जैसे- नंदा देवी, बंदरपूंछ, केदार गंगा, चौखंभा आदि। चंद्रशीला का उल्लेख स्कन्द पुराण के केदार खंड में प्राप्त होता है।

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार दक्ष प्रजापति ने अपनी सत्ताईस बेटियों का विवाह चंद्रमा से कराया। ये सत्ताईस बेटियां सत्ताईस स्त्री नक्षत्र हैं और अभिजीत नामक एक पुरुष नक्षत्र भी है। लेकिन चंद्र केवल रोहिणी से प्यार करते थे। ऐसे में बाकी स्त्री नक्षत्रों ने अपने पिता से शिकायत की कि चंद्र उनके साथ पति का कर्तव्य नहीं निभाते। दक्ष प्रजापति के डांटने के बाद भी चंद्र ने रोहिणी का साथ नहीं छोड़ा और बाकी पत्नियों की अवहेलना करते रहे। तब चंद्र पर क्रोधित होकर दक्ष प्रजापति ने उन्हें क्षय रोग का शाप दिया। क्षय रोग के कारण सोम या चंद्रमा का तेज धीरे-धीरे कम होता गया। इस शाप से मुक्ति के लिए चंद्र देव ने भगवान शिव की आराधना की। महादेव उनकी तपस्या से प्रसन्न हुए और उन्हें वरदान दिया कि प्रत्येक शुक्ल पक्ष में चंद्र देव अपना सौन्दर्य और शुभ्रता अर्जित करेंगे। इस वरदान के पश्चात चंद्र देव कृष्ण पक्ष में तिरोहित हो जाते हैं जबकि शुक्ल पक्ष में उज्ज्वल होते हैं। कदाचित यही घटना हिन्दू पंचांग में मास गणना को दर्शाती है। उसके बाद इस रोग से मुक्ति पाने के लिए चंद्रमा ने कुछ समय के लिए चंद्रशिला की इस पहाड़ी पर भी शिवजी का ध्यान किया था। उसके बाद से ही इस शिला का नाम चंद्रशिला रखा गया।

संकाय के सदस्यों और उनके परिजनों के यात्रा की तैयारी के संदर्भ में एक सुभाषित का उल्लेख करना चाहूंगा –

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका। आगच्छन् वैनतेयोपि पदमेकं न गच्छति।।

इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार है – धीरे-धीरे चलती हुई चींटी कई सहस्र योजन चल सकती है, किन्तु गरुड़ अपनी जगह से नहीं हिले तो एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता। यात्रा में सभी सदस्यों ने सर्वप्रथम अपने आरोग्य पर ध्यान दिया और नियमित व्यायाम करना प्रारंभ किया - लगभग 1 पक्ष पूरा (2 सप्ताह)। हालांकि ग्रीष्मावकाश में इस यात्रा का आयोजन संभव हुआ। वहीं, हिमालय की पर्वत शृंखलाओं में शीत का प्रकोप व्याप्त था। सभी सदस्यों ने यात्रा हेतु गरम कपड़ों की खरीददारी की। संकाय के सदस्यों के लिए इस यात्रा का आयोजन इंडिया हाइक नामक संस्था ने किया। इसी संस्था से अन्य कुछ सामग्री जैसा कि जूते, ट्रैक पोल, रक्सैक इत्यादि किराए पर लिए गए। इंडिया हाइक संस्था के चार सदस्य इस यात्रा में हमारा सहयोग कर रहे थे। हमारी इस रोमांचकारी यात्रा का नेतृत्व ऊर्जा नाम की, एक किशोरी कर रही थी। अपने नाम के अनुरूप ऊर्जा जी ने पूरे यात्रा के दौरान सदस्यों का मनोबल ऊंचा रखा और पूरी टोली में ऊर्जा के संचार को बनाए रखा।

संकाय के कुछ सदस्य, हरिद्वार की पुण्य नगरी में एकत्र हुए। हर की पौड़ी एवं गंगा जी के दर्शन के बाद हिमालय शृंखला के प्रवेश द्वार एवं योग नगरी ऋषिकेश की ओर प्रस्थान हुआ। अगले दिन प्रातः बस से रुद्रप्रयाग में स्थित सारी गांव की ओर हम सभी ने कूप किया। सारी गांव में बेस कैंप था, जहां हमारा परिचय इंडिया हाइक्स के अन्य साथियों से हुआ, विशेषकर हमारे 4 सहयोगी जिनमें हमारा नेतृत्व कर रही ऊर्जा जी भी थीं। ऋषिकेश से सारी गांव तक का मार्ग रमणीय दृश्यों से भरपूर था। हमने दो महत्वपूर्ण संगम- रुद्र प्रयाग - अलकनंदा एवं मंदाकिनी का संगम है और, देव प्रयाग - अलकनंदा और भागीरथी का संगम है -

जो गंगाजी के रूप में आगे बहती हैं। मार्ग में सभी सदस्यों ने धारी देवी जी के दर्शन किए एवं आशीर्वाद भी लिए। मध्याहन भोजन के पश्चात सारी गांव स्थित शिविर में सभी यात्री पहुंचे। कुछ देर विश्राम के पश्चात, सभी यात्रियों ने अपने-अपने किराये के सामान समेटें। इंडिया हाइक्स के साथियों ने हमें चंद्रशीला के यात्रा का विस्तृत विवरण दिया। हमारे रहने की व्यवस्था सारी गांव के शिविर में की गई।

अगले दिन प्रातः जलपान के पश्चात, सभी यात्रियों ने पहले पड़ाव - देवरियाताल की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में स्थानीय जीव-जन्तुओं एवं स्थानीय लोगों की जीवन शैली से भी अवगत हुए। बिच्छू घास, फर्न, बुरांस, टीक, स्थानीय भिंडी के साथ ही स्थानीय गिरगिट, एवं बड़ी आकार की गोह जैसे जीव-जन्तु दृष्टिगोचर हुए। अपराह्न तक देव भूमि के बीहड़ वन के रमणीय दृश्यों का आनंद लेते हुए सभी यात्री अगले शिविर तक पहुंचे। उल्लेखनीय है कि देवरियाताल का उल्लेख महाभारत के वनपर्व में है। पांडवों ने अपने वनवास के दौरान कुछ समय हिमालय की शृंखला में बिताए थे। पांडव एवं पांचाली जब वन से गुजर रहे थे तब सभी को बहुत जोरों की प्यास लगी। युधिष्ठिर ने एक-एक करके अपने अनुज - सहदेव, नकुल, अर्जुन और अंत में भीमसेन को जल की तलाश में भेजा। सभी इस झील तक तो आए, किन्तु एक यक्ष के प्रश्न का जवाब न देने के कारण मूर्छित हो गए। अंत में युधिष्ठिर अपने अनुजों की खोज में झील तक पहुंचे और उन्हें अचेत पड़े हुए देख यह समझ गए कि सरोवर में कुछ मायावी शक्ति है। महाभारत की प्रसिद्ध उक्ति - यक्ष प्रश्न, इसी स्थान की देन है। ऐसी मान्यता है कि इसी सरोवर पर वह घटना घटित हुई थी। पांडवों के अग्रज युधिष्ठिर ने यक्ष के 127 प्रश्नों का सही उत्तर दिये जिससे उनके अनुजों की चेतना लौट आई। यक्ष ने एक अतिरिक्त प्रश्न युधिष्ठिर से किया कि यदि वे अपने भ्राताओं में किसी एक को जीवित करने का चुनाव करना हो तो वे किसको चुनेंगे। युधिष्ठिर ने नकुल को चुना क्योंकि उनके अनुसार माता कुंती का एक पुत्र मैं जीवित हूं और माता माद्री का भी एक पुत्र जीवित होना चाहिए। इस उत्तर से प्रसन्न होकर और युधिष्ठिर की निष्पक्षता को देख यक्ष ने युधिष्ठिर को धर्मराज की उपाधि दी। आधुनिक काल में कई गोताखोरों ने इस झील की गहराई को मापने का असफल प्रयास किया है। ऐसी मान्यता है कि इस झील का जल, ऋतु के विपरीत ग्रीष्म में ठंडा और शीत में गरम रहता है। स्थानीय लोगों ने भी इस बात की पुष्टि कि जाड़ों में भी यह झील जमती नहीं है।

पुराणों के इस अद्भुत कथा और अलौकिक अनुभूति के साथ हम अगले शिविर की ओर कूच किए - बनियाकुण्ड। इंडिया हाइक्स संस्था के मार्ग में धेयोरियाताल झील से एक और शिविर शामिल था और वहीं से बनियाकुण्ड को जाना था। किन्तु संकाय के सदस्यों के लिए यह अतिरिक्त बदलाव किया गया कि देवरिया ताल से सीधे बनियाकुण्ड की ओर प्रस्थान किया जाए। बनियाकुण्ड शिविर में सदस्यों की मुलाकात दूसरे यात्रियों से हुई जो चंद्रशीला की चढ़ाई में लगे थे। बनियाकुण्ड में इंडिया हाइक्स के साथियों ने शिविर लगाने का दक्ष प्रदर्शन किया। इसके पश्चात सदस्यों ने कुछ समय विश्राम किया। सायं जलपान के साथ, इंडिया हाइक्स के साथियों ने शिखर की तैयारी से अवगत कराया। मध्यरात्रि को सभी सदस्य शिखर की चढ़ाई के लिए आतुर थे। बनियाकुण्ड से च पटा का रास्ता कुछ मिनटों का था। चॉपटा के लिए हम 21 सदस्यों की टोली ने चढ़ाई शुरू की। चॉपटा से लगभग 3 किमी की दूरी पर पांच केदार का एक महत्वपूर्ण मंदिर - तुंगनाथ - जो विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित शिव मंदिर है। तुंगनाथ मंदिर का उल्लेख भी पुराणों में मिलता है। ऐसी मान्यता है की महाभारत के युद्ध के पश्चात, महादेव पांडवों से बहुत अप्रसन्न थे। इसके कारण पांडवों के राज्य में कई विपदा और दुर्घटनाएं घटित हुई। अपने गुरु के आदेशानुसार, पांडवों ने महादेव की आराधना शुरू की और महादेव की नगरी काशी में गए। किन्तु महादेव उनसे छिपे रहें। महादेव जब काशी से अंतर्ध्यान हो गए, तो पांडवों ने गुप्त काशी की ओर ध्यान केंद्रित किया। ऐसी मान्यता है कि गुप्त काशी में नंदी महाराज के भेस में महादेव को भीमसेन ने देखा। तुरंत ही भीमसेन ने नंदी महाराज की पूंछ को पकड़ लिया। किन्तु महादेव भूमि में समा गए। ऐसा कहा जाता है कि महादेव के अंग पांच अलग-अलग स्थानों पर प्राप्त हुए - जो आधुनिक समय में पांच केदार के तीर्थ से प्रसिद्ध है। यह पांच केदार हैं - श्री केदारनाथ धाम (जहां नंदी महाराज का कूबड़ प्रकट हुआ - जो एक ज्योतिर्लिंग भी है), मध्यमेश्वर (जहां नाभि समेत मध्य भाग प्रकट हुआ), रुद्रनाथ (जहां मुख प्रकट हुआ), कलपेश्वर (जहां महादेव की जटाएं प्रकट हुई) और तुंगनाथ (जहां महादेव की भुजायें प्रकट हुई)। अतः मान्यता के अनुसार तुंगनाथ में महादेव की भुजाओं की आराधना की जाती है।

हालांकि कहानियां रोचक थीं, और चढ़ाई धीरे-धीरे कठिन होती जा रही थी। तुंगनाथ मंदिर तक मार्ग में कुछ पक्की सड़कें मिली। तुंगनाथ के आगे लगभग 2 किमी कच्ची सड़क थी और चढ़ाई भी बहुत कठिन थी। तुंगनाथ मंदिर लगभग 3000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। हमारा लक्ष्य था कि सूर्योदय का आनंद चंद्रशीला की चोटी पर लिया जाए। ऊंचाई के साथ ठंड भी बढ़ रही थी। तुंगनाथ पर सदस्यों ने थोड़ा विराम किया, और शिखर की ओर अग्रसर हुए। कई सदस्यों का मनोबल पस्त हो रहा था। भीषण ठंड और थकान के चलते कुछ क्षण ऐसा प्रतीत हुआ कि शिखर तक न पहुंच पाए। किन्तु इंडिया हाइक्स के हमारे साथियों ने हमारा मनोबल बनाए रखा। ऊर्जा जो हमारी टोली का नेतृत्व कर रही थी - अपने नाम के अनुरूप सभी सदस्यों को साथ लेकर चलीं। सूर्य की पहली किरण जब केदार गंगा पर्वत पर गिरी, और उसके पश्चात नंदा देवी और चौखंभा पर - इस रमणीय दृश्य को देख, सदस्यों के जान में जान आई। सबसे अनुज सदस्य ने भी शिखर की चढ़ाई सफलतापूर्वक पूरी की। उसके पीछे एक-एक करके सारे सदस्य शिखर पर पहुंचे। आखिरकार संकाय के सभी सदस्य और उनके परिजन चंद्रशीला के शिखर पर थें जिन्होंने रमणीय हिमालय शृंखला का आनंद लिया। हमारे साथ कई अन्य यात्री भी थे। सभी शिखर पर पहुंचकर हर्षित थें। शिखर पर पहुंचने पर सदस्यों ने उस रमणीय दृश्यों के छायाचित्र लिए। इंडिया हाइक्स के हमारे साथी ने एक अद्भुत कहानी सुनाई। दुनिया की सबसे उंची चोटी माउंट एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ाई का सर्वप्रथम सफल प्रयास न्यूजीलैंड के निवासी एडमंड हिलेरी एवं नेपाली शेर्पा तेनजिंग नोरगे ने किया था। जब एडमंड हिलेरी शिखर पर पहुंचने का जश्न मन रहे थे तो उन्होंने देखा कि तेनजिंग नोरगे प्रार्थना में लीन हैं। पूछने पर तेनजिंग नोरगे ने कहा कि इस से पहले तेनजिंग नोरगे ने 3 असफल प्रयास किए थे। इस प्रयास की सफलता में प्रकृति और ईश्वर का बहुत बड़ा योगदान है।

इसी भाव को व्यक्त किया गया है संस्कृत के इस श्लोक में :

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।।

संकाय के सभी सदस्य प्रकृति एवं ईश्वर के आभारी थे कि सभी सदस्यों ने सफलतापूर्वक चंद्रशीला की चढ़ाई की। प्रातः 7 बजे सभी सदस्यों ने वापसी का रुख किया। चढ़ाई का जश्न बुरांस के शरबत एवं मैगी और पराठों के साथ मनाया गया। सभी सदस्य, बिना किसी खरोंच के सकुशल लौट आए। हालांकि सभी लोग बहुत थके हुए थे, किन्तु सभी चंद्रशीला पर्वत एवं प्रकृति के प्रति कृतज्ञ थें। तुंगनाथ महादेव ने हम पर कृपा बनाए रखी, किन्तु कपाट बंद होने के कारण उनके दर्शन नहीं हो पाए। सारे सदस्य सारी गांव के शिविर में थकान से चूर विश्राम करते हुए अविस्मरणीय यादों के साथ अपनी सफलता पर आनंदित थे। इस सफल यात्रा का एक और परिणाम यह रहा कि संकाय सदस्यों में आपसी स्नेह प्रगाढ़ हुआ और एक दूसरे को जानने का सुंदर अवसर भी प्राप्त हुआ।

अंकुर सिंह, कनिष्ठ सहायक

धरा है मां का आंचल

आने वाले दिन दुनिया में, हैरानी वाले दिन होंगे
धरा पर संकट के बादल, संघर्ष यहां प्रतिपल होंगे
नहीं मिलेगा साफ जल, नहीं अन्न और फल होंगे
जलवायु परिवर्तन के कारण, ताप बहुत विकल होंगे
चारों ओर अनल होंगे, लपटों में विश्व प्राणी होंगे
कही रेगिस्तान धरा पर, कहीं नहीं नदी नीर होंगे
नहीं रहेंगे जीव जगत में, भरे नित विष प्याले होंगे
प्रदूषण बढ़ रहा विश्व में, मौसम के मिजाज विकल होंगे
कही गर्मी विकल सी, कही हांड़ कांपते सर्द रात होंगे
बेमौसम बरसेंगे बादल, आंधी अंध करते होंगे
तूफानों का दौर जगत में, जन धन पूर्ण क्षति होगी
ग्लेशियर पिघल रहे दुनिया के, ओजोन के छिद्र बड़े होंगे
प्राकृतिक आपदा घेरेगी, नहीं नीर जल थल होंगे
जल जंगल जमीन का दोहन, जलवायु बिगाड़ रहे होंगे
वातानुकूलित यंत्र और कंप्यूटर, नहीं बचाते प्राण होंगे
जलवायु का दोहन बंद करो, तब सजा मुक्त होंगे
पराबैगनी किरणें बरसाते सूर्य, नित्य यहां भीषण ताप होंगे
नई-नई बीमारी के कारण, लोग गवाते प्राण होंगे
जैव विविधता खत्म हो रही, कई जीव विलुप्त हो रहे होंगे
उनका रहेगा मान जगत में, जो नित सजग रहे होंगे
कल को सोचो समझो, जीवन रक्षक हवा में विष होंगे
जल जीवन है इसे बचाओ, पेड़ को मित्र बनाओ
ऐसा होगा कल हमारा, शेष अपना जीवन बचाओ
आने वाले दिन दुनिया में, हैरानी वाले दिन होंगे
धरा पर संकट के बादल, संघर्ष यहां प्रतिपल होंगे
मानव हो मानवता का मूल मंत्र समझो, धरा मां का आंचल
जब धरा साफ सुंदर कोमल, धरती का माथा हरे भरे होंगे
तब जाकर बचेंगे प्राणी के प्राण, नित निर्मल शुद्ध हृदय होंगे।

रामचन्द्र, वरि. पुस्त. व सूचना प्रोफेशनल (अनुबंधित)

जलवायु परिवर्तन

पानी-पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से
आवश्यकता ने आविष्कार किया, प्रकृति की इस गोद में
खोज बदलती गई है कहानी के पन्नों में
पानी-पानी हो गया है देश मेरा ,पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से
कोई हमें बताता है जलवायु बदलती है, ओजोन के इन छिद्रों से
हिमनद विलुप्त होते इंसानों के इन कर्मों से
पानी-पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से
धूप बदलती है पखवाड़ों में, सूरज की इन किरणों से
बिन मौसम बारिश होती है, हमारी गांव की गलियों में
पानी-पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से
सूरज निकलता है और कांपता है, प्रकृति की गलियों में
सूरज की विवशता देखी, पराबैगनी किरणों में
पानी-पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से
विज्ञान गणित भूल जाओगे, भूगोल के अंधेरे में
अभी सुधर जाओ नहीं, पानी न होगा आंखों में
पानी-पानी हो गया है देश मेरा, पानी की इन बूंदों से
मेरे देश की नदिया भर गई है, पानी की इन बूंदों से।

राम नेवाज, अधीक्षक

बदलता मौसम

समय से वर्षा समय से गर्मी, समय से सर्दी जब आती है।
अच्छा मौसम तब होता है, जलवायु अनुकूल कहलाती है।।
समय से जब ऋतुएं आतीं, तब समय से फसल लहलहाती है।
ये जब अनियमित हो जातीं, जलवायु परिवर्तन कहलाती है।।

यह सब होता है कैसे, आओ इसका पता लगाएं।
सूरज की जब किरणें आतीं, वापस न जाकर धरती गरमायें।।
जब-जब धरा गर्माती है, सारे मौसम व ऋतुएं टल जातीं हैं।
ऐसे होता है मौसमी बदलाव, जलवायु परिवर्तन कहलाती है।।

जब-जब जलवायु बदलती है, सब जन दंश इसका झेलते हैं।
फिर भी नहीं देते ध्यान इस पर, भौतिक सुख ही खोजते हैं।।
मौसम में जब होता परिवर्तन, खामियाजा झेलते हैं सबजन।
यदि न रूके ग्रीन गैस उत्सर्जन, हो जाता है जलवायु परिवर्तन।।

मानव की यह जिम्मेदारी, जितनी जरूरत उतना वृक्ष लगाएं।
कार्बन डाई ऑक्साइड करें कम, पर्यावरण को स्वच्छ बनाएं।।
उद्योग लगाएं पर ध्यान रहे, ग्रीन गैस का कम करें उत्सर्जन।
वातावरण को शुद्ध बनायें, और रोकें जलवायु परिवर्तन।।

एम. पद्मावती, सहायक (अनुबंधित)

जल

अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीरो की हर एक बूंदों से
जलवायु हमारी बदल रही, ओजोन के इन छिद्रों से
ग्लेशियर विलुप्त हो रहे है, हम इंसानों के ही कृत्यों से
अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीरो की हर एक बूंदों से
धुंध पड़ रही पखवाड़ों में, मार्तण्ड की जलती किरणों से
बे मौसम बरस रहे मेघ, रेगिस्तानों की गलियों में
अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीर की हर एक बूंदों से
मार्तण्ड उदय और सिहरता है, प्रकृति के ही आंचल में
मार्तण्ड विवशता भी देखी, इन पराबैगनी किरणों में
अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीरो की हर एक बूंदों से
आधुनिकता भूल जाओगे, भूगोल के अंधेरों में
अभी जाग जाओ वरना, नीर न होगा नैनों में
अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीरो की हर एक बूंदों से
पेड़ लगाओ धरा हरी बनाओ, प्राण हमारे हाथों में
जलवायु परिवर्तन होगा तो, रहेगा कुछ न बातों में
अंभ-अंभ हो गयी सृष्टि, अम्भो की हर एक बूंदों से
विश्व की नदियां भर गयी है, नीरो की हर एक बूंदों से।

अंभ- जल, मार्तण्ड - सूर्य

पवन तिवारी, कार्यालय सहायक (अनुबंधित)

आओ! पेड़ लगाएं

बदल रही इस दुनिया की, उलझी हुई कहानी है
वायु में जहर घुला पड़ा है, पी रहे गंदा पानी है
जलवायु परिवर्तन की घटनाएं, मनुष्य की ही देन है
जल संकट का यह खतरा, सबके ऊपर मंडराया है
अल्प मति मानव ने फिर भी, अपना उद्योग बढ़ाया है
ताप वृद्धि ने देखो कैसे, हिमाद्रि को पिघलाया है
सागर के नीचे की हलचल, उठती है ले उफान तक
वक्त के पहिये संग ये, जाएगी हर एक मकान तक
पेड़ पौधों का अस्तित्व भी, अलग-थलग सा हो रहा है
मृदा अपरदन के कारण, सब मूल्य मर्दन हो रहा है
मौसम के इस उठा पटक ने, कृषि कार्य को घेरा है
घट रहा उत्पादन खेतों में, खो रहे विहंग बसेरा है
कंप्यूटर युग का आखिर, कैसा ये संताप है
धूप में ज्यादा गर्मी है, वायु में अत्यधिक ताप है
वातानुकूलक ने जकड़ा है, धरा के हर एक प्राणी को
जिससे है बदला जलवायु ताप, जन-जन को हैरानी है
जलवायु परिवर्तन की स्थिति से, मानव प्रव्रजन में वृद्धि होगी
वो कैसे भरेंगे पेट कुटुंब का, कैसे उनकी समृद्धि होगी
पेड़ लगाएं जग हरा बनाएं, ये संकल्प हमारा होगा
जलवायु परिवर्तन में भी अब, परिवर्तन लाना होगा
अभी वक्त जो बचा हुआ है, सावधानी हमें बरतनी होगी
सब बातों के ऊपर हमको, अपनी प्रकृति रखनी होगी
बदल रही इस दुनिया की, उलझी हुई कहानी है
वायु में जहर घुला पड़ा है, पी रहे गंदा पानी है।

अज़मी सलमान, कार्यक्रम सहायक (अनुबंधित)

धरती का करुण क्रंदन

धरती की गोद थी कभी, हरी-भरी, फूलों से सजी,
पेड़ों की छांव में हम थे, सुकून से दिन रात कटी।
नदियों की धाराएं थीं मस्त, पर्वत की चोटियां थीं स्वच्छ,
धरती का हर कोना जैसे, सुरम्य, सुंदर और वृष्टि।
फिर एक दिन आई ये आग, लालच की थी ये पहली आह,
काट दिए हमने वो पेड़, जो देते थे हमें जीवन का मेड़।
शहर की चकाचौंध में खो गए, प्रकृति से हम दूर हो गए,
आसमान में धुआं भर दिया, जीवन को हमने जहर कर दिया।
समय के साथ ये जख्म गहरे हुए, धरती के घाव और भी गहरे हुए,
ग्लेशियर पिघले, सागर बढ़े, सूखा, बाढ़ के संकट चढ़े।
बादल बरसने लगे अनायास, कहीं अधिक कहीं बिल्कुल कम,
फसलें सूखने लगीं बिन पानी, मौसम की बदल गई कहानी।
पक्षी जो करते थे गीत, अब खामोश हैं, नहीं कोई प्रीत,
जंगल जो हरे थे सदा, अब राख के ढेरों में सिमट गए।
धरती ने अब पुकार उठाई, कब तक सहूंगी ये विनाश की आंधी,
अब तो जागो, ओ मानव प्राणी, वरना खो दोगे ये सृष्टि की कहानी।
हर बूंद जो बचेगी अब, वही कल की आस बनेगी,
हर पेड़ जो लगाओगे तुम, वही धरती की सांस बनेगी।
आओ मिलकर करें प्रयास, धरती को दें एक नया विश्वास,
कदम - कदम पर करें हम ध्यान, ताकि न हो और नुकसान।
प्रकृति की गोद में फिर से, हरियाली का रंग भरें,
जलवायु को फिर से करें संतुलित, धरती को फिर से सजीव करें।
हमारी ये जिम्मेदारी है, धरती को फिर से हंसाना है,
मिलकर चलें हम इस डगर नए कल का सपना सजाना है।
हर सुबह हो हरी-भरी, हर शाम को शीतल हवा,
ये सपना सच करने का वक्त है, अब न हो कोई भी चूक यहां।
आओ धरती को फिर से सजाएं, इसे प्यार और ममता से सजाएं,
जलवायु का परिवर्तन रोकें, धरती फिर जीवन का गीत गाएं।

आशुतोष झा, पीएडी 24014

हवा हूं, मैं हवा, अब बसंती कहां मैं

हवा हूं मैं हवा मैं
अब बसंती कहां मैं।
सुनो बात मेरी
अब दुखदायी हवा हूं।
बड़ी विकृत हुई मैं
अब मुसीबत अजब हूं,
सभी को खटकती
मैं दूषित हवा हूं।

हवा हूं, हवा मैं
अब कहां ही हवा हूं।

जहां से चली मैं
अब कहां लौट जाऊं
ये शहर, ये बस्ती
ये नदी, ये पोखर
सभी देख आई
क्या ही पेड़ कोई
क्यों ही पेड़ कोई
क्यों ही चिड़ियां उड़ाई,
मार डाली सभी को
मैं कहर बन के आई,
अब झुलसेगी सरसों,
अब मुरझाएगी बेला।
अब पहर दो पहर क्या
अब हर पहर का ये खेला
बनी आग अब मैं,
जहर की मैं बेला।
हवा हूं हवा मैं
अब बसंती कहां मैं।

मुझे देखते ही
अब क्यों है शरमाई
दुखियारी दिशाएं
अब क्यों न मुस्कराए
भरी धूप में
अब क्या दूषित हवा हूं।
किसने बनाई ये कैसी हवा हूं
हवा हूं, हवा मैं
अब बसंती कहां मैं।

रजत कुमार दलाई, पीजीपीएसएम 09030

समय का एक क्षण

हम आकस्मिक दृश्यों से कितनी तस्वीरें बुनते हैं
कल देखो तो लगता है आज भी उसी का चित्रण हो
परंतु क्या अभिन्न दिनों का महीनों और महीनों का
सालों में तब्दील हो जाना परंपरागत है हां शायद।

मैं जिस नदी को कल मुस्कुराया छोड़ आया था
आज उसमे मेरी कमी की आंसुओं से बाढ़ आ चुकी है
मैंने जिसके किनारे लिखी थी कविताएं और कहानियां
वो सब इकाइयां डूब चुकीं, मेरे सात समंदर पार होने पर।

मैं अपनी पीठ पर बनाता हूं विश्व का नक्शा
और तुम्हें देता हूं कलम आंकने को
उन शहरों के स्थान जहां त्रासदी हो
बड़ी ख़बरें, छोटे किस्से और बीच की कहानियां
अख़बार से आंख और आंख से आईने तक उतर आती हैं
तुम आंकती हो वो सारे क्षेत्र जहां मेरी पीठ दुख रही हो
और बड़े अचंभे की बात है त्रासदी भी वहीं हो रही है।

मेरी कविताएं जो नदियों में बह गईं
या जिन्हें आसमान निगल गया
उनके मुताबिक चांद, तारे और सूरज
दैनिक कर्मचारी हैं
जो अपने समय के मुताबिक चलते हैं
और कविताओं का आविष्कार
बारूद से पुराना है।

समय का लिखा कौन टाल सकता है
का जवाब मिलता था कहीं उन्हीं पंक्तियों में
की अगर पत्थर की लकीर हवाओं से मिट सकती है
तो पत्थर, प्रेम, प्रेरणा, करुणा, व्यथा भी क्षणिक है
और द्वेष, दुख, दुविधा और विद्वंश भी
तुम, हम, मेरा, तुम्हारा, हम सबका संसार भी क्षणिक है।

असल में समय परमात्मा की लिखी
पहली एवं आखरी कविता है
जिसमे हर क्षण एक पंक्ति है
और हम सब केवल पत्र।

मेजर प्रणव पंत, डीजीएमपी

हलाहल

शिव को विलक्षण जान कर, विश्व संचारी मान कर
आह्वान करता हूं तेरा, विश्व वाटिका में, सैर करने को तू आ
कभी ये विश्व तेरा विशुद्ध दर्पण था,
लयमई प्रकृति का पूर्ण समर्पण था
आज इसकी हालत देख, क्यों पलायन कर गया
तेरा ही अंश ये मानव, दुराचारी हो गया,
आसुरी सम्पदा में खो गया
प्रेममयी पवित्र गंगा, शोकमयी हो गई
आदमी की अधम चेष्टा, उसे विषाक्त कर गई
अमृत सा जल अब, पल-पल दम तोड़ रहा
आज उसकी हालत देख, समुद्र भी रो रहा
मां गंगा की करुण पुकार और चितकार
उसकी दारुण अवस्था देख मैं लाचार
आह्वान करता हूं तेरा-
हलाहल पीने शिव, तू अब इस भू धरा पर आ
हरी भरी वसुंधरा और, विशाल पर्वत है खड़ा
मानव की कुटिल बुद्धि से, वो भी सहमा और डरा
वनस्पति का आवरण क्यों नोच डाला,
स्वार्थ वश अपनी ही माँ को दांव पर लगा डाला
उसी मातृ भूमि को छल रहा,
आज धरती के कण-कण में विष वो दिया
उस की ऐसी हालत देख, पर्वत भी रो दिया
विषाक्त हुई धरती, अब जहर उगल रही
पोषक तत्वों की स्वामिनी आज जल रही
कराहती माँ की सुन रहा करुण पुकार
उसकी नग्न अवस्था देख मैं लाचार
आह्वान करता हूं तेरा-
हलाहल पीने शिव, तू अब इस भू धरा पर आ।
प्राण शक्ति देने वाली, प्राणहीन स्वयं हो गई
अपने गुणों को त्याग, दुराचारिणी बन गई
प्रदूषण का आलिंगन हो रहा है जहां
मानव की अधमता का प्रमाण है वहां
खुली स्वच्छ हवा में, विष ही विष घुल रहा
अपनी मृत अवस्था देख, पवन देव भी रो रहे
मैं वेदना से ग्रस्त, दूषित प्राण वायु से त्रस्त
आह्वान करता हूं तेरा-
हलाहल पीने शिव तू अब इस भू धरा पर आ।
विकारों से ग्रस्त मानव, बन रहा है दानव
दुनिया को छल रहा, कुटिलता से उसका अंतस भी जल रहा
बाहर ही नहीं, भीतर भी, विष ही विष समाया है
सद्गुणों से दूर, आज अवगुण ही जिसका सरमाया है
विषाक्त वातावरण से, अब स्वयं को कैसे बचाएगा
स्वार्थ बुद्धि के पाश में बंधता चला जाएगा।
हे नीलकंठ! आज तेरी हम सभी को है जरूरत
पहले भी तूने विष का पान किया था
सबको जीवन दान दिया था,
आज हम सब का जीवन देख
कैसे तू चुप रहा जाएगा,
मेरी एक करुण पुकार पर तू दौड़ा चला आएगा।
इसी विश्वास से,
आह्वान करता हूं तेरा-
हलाहल पीने शिव तू अब इस भू धरा पर आ।

अभिलाषा शंखधर (पत्नी-अमित शंकधर, वित्त व लेखा अधिकारी)

बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं

कभी खुद की तलाश में तो कभी कुछ पा लेने की चाह में,
छोड़ अपना घरौंदा उड़ने को खुले आसमान में,
न जाने कब इतने बड़े हो जाते हैं, बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

सपनों को पूरा करने तो कभी मंजिल पा लेने की चाह में,
जिम्मेदारियों को निभाने तो कभी अपनी पहचान बनाने की आस में,
ना जाने कब इतने बड़े हो जाते हैं, बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

कभी मां-बाप तो कभी परिवार की खुशी की लालसा में,
ना जाने कितना दर्द सीने में दबाए और छुपाए आंसू पलकों में,
न जाने की कब इतने बड़े हो जाते हैं, बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

कभी सफलता तो कभी भविष्य निर्माण की अभिलाषा में,
कांधे पर सारा बोझ लिए और छुपा के गम को मुस्कुराहट में,
ना जाने कब इतने बड़े हो जाते हैं, बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

बुलंदियों को छूने और ऊंचाइयों को पाने की ख्वाहिशों में,
छोड़ दोस्त, परिवार, रिश्ते-नाते निकल पड़ते हैं किसी सुबह या शाम में,
ना जाने कब इतने बड़े हो जाते हैं बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

कभी देश प्रेम तो कभी भारत मां की रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान करने में,
छोड़ बिलखता मां, बहन और बापू को, शायद कभी वापस न आने की उम्मीद में,
ना जाने कब इतने बड़े हो जाते हैं बेटी ही नहीं बेटे भी विदा हो जाते हैं।

आयोजन व गतिविधियां

75वां गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2024

गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर, भारतीय प्रबन्ध संस्थान की निदेशक, प्रोफेसर अर्चना शुक्ला ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और भारतीय होने पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे हमारे महान राष्ट्र के बारे में दुनिया को परिचित कराने का कार्य करें। उन्होंने कहा, 'वसुधैव कुटुम्बकम वह आदर्श वाक्य है जिसके लिए हमारा देश हमेशा से जाना जाता है। यह आप पर निर्भर है, इस देश के युवाओं पर कि आप दुनिया भर की अच्छी चीजों को आत्मसात करें और भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का सपना साकार करें।'

इस गणतंत्र दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए पूरे समुदाय ने उत्साह प्रदर्शित किया।

नोएडा परिसर

26 जनवरी, 2024 को भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ, नोएडा परिसर में भारत का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। डीन प्रो. नीरजा पांडे ने परिसर में ध्वज फहराया, जिसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद, खेलकूद प्रतियोगिता 'पराक्रम 2024' के विजेताओं को पदक और पुरस्कार वितरित किए गए। इस अवसर पर अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिसमें संकाय, कर्मचारी और अधिकारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

मैनफेस्ट-वर्चस्व के उपलक्ष्य में सिटी रन

4 फरवरी, 2024

मैनफेस्ट-वर्चस्व के उपलक्ष्य में, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने 4 फरवरी को लोहिया पार्क, गोमती रिवरफ्रंट पर आयोजित स्वच्छ भारत मिशन द्वारा प्रस्तुत और महिंद्रा सोलराइज द्वारा संचालित लखनऊ सिटी रन 2024 की मेजबानी की। 'स्वच्छता के लिए दौड़' शीर्षक के तहत आयोजित इस कार्यक्रम ने स्वच्छ पर्यावरण के प्रति समर्पण के साथ स्वास्थ्य के प्रति उत्साह भरने का कार्य किया। स्वच्छ भारत मिशन, किरण फाउंडेशन, डेकाथलॉन और एक्सिस बैंक जैसे उल्लेखनीय भागीदारों ने इस पहल में साझेदारी की। इस दौड़ में शहर के उत्साही धावकों ने प्रतिभागिता की।

कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथियों जैसे- श्री बी.डी. पॉलसन, अतिरिक्त महानिदेशक (एडीजी), यातायात और सड़क सुरक्षा, लखनऊ श्री सौमित्र शेखर, आईईसी अधिकारी, स्वच्छ भारत मिशन, श्री अभिलेख रस्तोगी, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक यूपीयूके क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख, प्रो. अर्चना शुक्ला, निदेशक, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के साथ प्रो. प्रियंका शर्मा, डीन, छात्र मामले और अध्यक्ष, प्लेसमेंट ने प्रतिभागिता की। निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला ने प्रतिभागियों को स्वस्थ जीवनचर्या अपनाने और जीवन को पूरे उत्साह के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैनफेस्ट-वर्चस्व का शानदार आयोजन

9-11 फरवरी, 2024

तीन दिनों तक चलने वाले जीवंत छात्र उत्सव- मैनफेस्ट-वर्चस्व 2023-24 की शुरूआत उत्साह के साथ शानदार तरीके से हुआ।

निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला ने प्रसिद्ध भारतीय जल संरक्षक और पर्यावरणविद् श्री राजेंद्र सिंह के साथ मिलकर 'भारत के जल पुरुष' शीर्षक कार्यक्रम का उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम संस्थान की प्राकृतिक संसाधनों की सततता के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक सिद्ध हुआ। देश भर के कॉलेजों से आए 30,000 से अधिक प्रतिभागी छात्रों के साथ, इस उत्सव में रचनात्मकता, नवाचार और उत्साही प्रतिस्पर्धा की यात्रा शुरू की।

दूसरा दिन

मैनफेस्ट-वर्चस्व 2023-24 का दूसरा दिन ऊर्जा से भरपूर रहा। इसकी शुरुआत बौद्धिक चर्चा, कड़ी प्रतिस्पर्धा और जीवंत मनोरंजन के उत्साहजनक मिश्रण के साथ हुई। दिनांरभ यंग लीडर्स प्रोग्राम से हुई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित नेतृत्वकर्ता शामिल हुए। उल्लेखनीय वक्ताओं में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और फ्यूचर ऑफ ह्यूमैनिटी इंस्टीट्यूट के निदेशक निक बोस्ट्रोम, इनसेडो इंक के सह-संस्थापक और सीईओ- नितिन सेठ और भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के सम्मानित पूर्व छात्र और आईएएस अधिकारी श्री आर्मस्ट्रांग पाम शामिल हुए। अपने आकर्षक भाषण के दौरान प्रो. निक बोस्ट्रोम ने जोर देकर कहा, 'सूचना की आंधी की संभावना से पहले, हम इंसान विस्फोटक से खेलने वाले छोटे बच्चों की तरह हैं... सुपरइंटेलिजेंस एक चुनौती है जिसके लिए हम अभी तैयार नहीं हैं और लंबे समय तक तैयार नहीं होंगे।' इसके साथ ही, रचनात्मकता ने इजहार, वाइब्स और इन्फर्नो जैसी जीवंत नृत्य प्रतियोगिताओं के साथ मंच पर जगह बनाई, जिनके निर्णायक मंडल में तरुण कोहली और मोहना श्रीवास्तव जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे। अभिनेता अपारशक्ति खुराना ने अंतरनाद, फीचर फिल्म प्रतियोगिता में स्टार पावर की मौजूदगी दर्ज करायी। स्टेयरवे टू हेल में बैंड ने संगीत के प्रति दीवानगी और यूपीएसआरटीसी केस प्रतियोगिता, रिडिया ने प्रतिभागियों की रणनीतिक कौशल का परीक्षण किया। जैसे-जैसे शाम ढलती गई, बहुप्रतीक्षित बैंड नाइट की शुरुआत हुई, जिसमें टी.आर.ए.पी. की धुनें और संस्थान के अपने बैंड 3.4 का जोरदार मनमोहक प्रदर्शन हुआ। मैनफेस्ट-वर्चस्व के दूसरे दिन ने भी एक अमिट छाप छोड़ी, इसकी गूंज सूरज के डूबने के बाद भी लंबे समय तक गूंजती रही।

तीसरा दिन

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के मैनफेस्ट-वर्चस्व 2023-24 का तीसरा दिन जुनून और सौहार्द की प्रतिध्वनि से भरा था। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने अपने वर्चुअल संबोधन में राष्ट्रीय विकास के लिए 'अमृत काल' के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने आने वाले वर्षों में भारत की दिशा तय करने वाले नेतृत्वकर्ताओं और नवोन्मेषकों को तैयार करने में भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ जैसे शैक्षणिक संस्थानों के महत्वपूर्ण योगदान पर भी प्रकाश डाला। श्री आर. गोपालकृष्णन और श्री मुरुगावेल जानकीरमन जैसी प्रसिद्ध हस्तियों द्वारा नेतृत्व संबंधी वार्ता ज्ञान से भरपूर रही, जबकि जश्न, सुर, ड्यूक्स डान्स और 13 खेल विधाओं जैसे आयोजनों में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का आयोजन किया गया। मॉडल यूएन में 250 से अधिक युवाओं ने महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। गायक जुबिन नौटियाल ने अपने मनमोहक प्रदर्शन से जादू बिखेरा और एक अविस्मरणीय संगीतमय अनुभव के साथ ग्रैंड फिनाले का समापन किया।

नॉस्टेल्जिया कार्यक्रम का सफल आयोजन

13 फरवरी, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ नोएडा परिसर में नॉस्टेल्जिया 2024 पूरे उत्साह के साथ पूर्व छात्रों के साथ मनाया गया। दीप प्रज्ज्वलन समारोह से लेकर खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों तक, यह एक अविस्मरणीय यात्रा रही है। डीन प्रो. नीरजा पांडे ने एआई के दौर में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व पर जोर दिया। पूर्व छात्र मामलों के अध्यक्ष प्रो. यश दौलतानी ने पूर्व छात्रों के सौहार्दपूर्ण माहौल के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रो. प्रकाश सिंह के साथ कक्षा में वापसी के सत्र और मिलन समारोह ने अकादमिक पुरानी यादें ताजा कर दीं। रस्साकशी और म्यूजिकल चेयर जैसी गतिविधियों ने रिश्तों को सुदृढ़ किया और स्काई लालटेन कार्यक्रम ने साझा सपनों और आकांक्षाओं का प्रतीक बनाया।

कार्यक्रम के रात्रि का समापन मंत्रमुग्ध कर देने वाले अलाव के साथ हुआ, जहां यादों को संजोया गया। संस्थान ने नॉस्टेल्जिया 2024 में भाग लेने वाले सभी पूर्व छात्रों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त किया, जिन्होंने इसे एक शानदार व सफल कार्यक्रम बनाया।

शत-प्रतिशत सफल प्लेसमेंट अभियान

18 फरवरी, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने पीजीपी 38 और एबीएम 19 बैच के लिए अपने अंतिम प्लेसमेंट 2024 का समापन किया, जिसमें 576 छात्रों के लिए 634 ऑफर हासिल किए। प्लेसमेंट प्रक्रिया में एबीजी, एक्सेंचर, अदानी ग्रुप, बैन एंड कंपनी, बीसीजी, डेलोइट, जियो फाइनेंशियल सर्विसेज, कियर्नी, मैकिन्से, माइक्रोसॉफ्ट, प्रॉक्टर एंड गैंबल, पीडब्ल्यूसी, शेल, वीजा, टारगेट, टीएएस जैसे शीर्ष भर्तीकर्ताओं ने भाग लिया।

38 वर्षों की इस शानदार विरासत के इतिहास में सबसे बड़े बैच के लिए 100% प्लेसमेंट स्वयं में एक मील का पत्थर है। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने क्रमशः 30 एलपीए (लाख प्रति वर्ष) और 27 एलपीए का औसत और माध्य सीटीसी सफलतापूर्वक प्राप्त किया। इसमें उच्चतम घरेलू और अंतरराष्ट्रीय सीटीसी 65 एलपीए और 1.23 सीपीए तक पहुंच गया। इस प्लेसमेंट प्रक्रिया में भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ में 250 से अधिक भर्तीकर्ताओं ने भागीदारी की। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी कार्यक्षेत्रों में बड़ी संख्या में प्रस्ताव प्राप्त हुए।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम टीम के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम

7 मार्च, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ द्वारा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और स्कूल ऑफ पॉलिसी एंड गवर्नेंस (एसपीजी) के सहयोग से नीति निर्माताओं के लिए 'एमएसएमई के न्यायपूर्ण परिवर्तन' को सक्षम बनाने के लिए कार्यशाला और क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रो. क्षितिज अवस्थी और प्रो. प्रियांशु गुप्ता की अगवाई में विशेष रूप से तैयार किए गए इस कार्यक्रम में 8 राज्यों के नीति निर्माताओं और यूएनडीपी सदस्यों ने भाग लिया। यूएनडीपी टीम ने निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला से भेंट किया और प्रमुख मुद्दों पर वैचारिक चर्चा की।

38वां दीक्षांत समारोह

16 मार्च, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने अपना 38वां दीक्षांत समारोह सफलतापूर्वक संपन्न किया। इसमें 785 श्रेष्ठ स्नातकों को सम्मानित किया गया। संस्थान ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड की अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक सुश्री मल्लिका श्रीनिवासन के प्रति ह्दय से आभारी हैं, जिन्होंने मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (एमबीए) - 504 छात्र, कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (एमबीए-एबीएम) - 56 छात्र, प्रबंधन में डॉक्टरल कार्यक्रम (पीएचडी) - 18 छात्र, प्रबंधन में कार्यकारी फेलो कार्यक्रम (पीएचडी) - 6 छात्र, सतत प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (एमबीए-एसएम) - 41 छात्र, कार्यकारी अधिकारियों के लिए प्रबंधन में अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम - 106 छात्र, कार्यकारी अधिकारियों के लिए प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम - 54 छात्रों ने संबंधित उपाधियां प्राप्त कीं।

बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्ष श्री नटराजन चंद्रशेकरन ने भावी नेतृत्वकर्ताओं को तैयार करने के लिए भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की प्रतिबद्धता को बल प्रदान किया। निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला ने स्नातकों को शुभकामनाएं और बधाई दीं और उन्हें संस्थान के मूल्यों को, अपनी भविष्य की यात्रा में आगे ले जाने के लिए प्रेरित किया।

ईएफएमडी इंडिया संगोष्ठी

23 अप्रैल, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ द्वारा 'सीमाओं से परेः ईएफएमडी वैश्विक मान्यता के माध्यम से भारतीय बिजनेस स्कूलों की दृश्यता में वृद्धि' विषय पर ईएफएमडी इंडिया संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारतीय बिजनेस स्कूलों को वैश्विक स्तर पर मान्यता दिलाने के उद्देश्य से, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ का लक्ष्य एक ऐसा परिदृश्य तैयार करना है, जहां प्रबंधन शिक्षा वैश्विक प्रगति को आगे बढ़ाए। इस कार्यक्रम की सफलता ने सभी सदस्यों को उद्देश्य के प्राप्ति को लेकर आश्वस्त किया।

स्पिक मैके क्लब के संस्थापक को सम्मान

15 मई, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्पिक मैके के संस्थापक और पद्म श्री पुरस्कार विजेता प्रोफेसर किरण सेठ और स्पिक मैके, लखनऊ चैप्टर के समन्वयक श्री प्रदीप नारायण का स्वागत किया। यह छात्रों और समुदाय के सदस्यों को भारतीय शास्त्रीय कला विधाओं, योग, ध्यान, संस्कृति और विरासत के विविध पहलुओं से परिचित कराने के लिए एक आंदोलन के रूप में स्पिक मैके के प्रति भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की प्रतिबद्धता और विश्वास को सुदृढ़ करता है।

इस बैठक की अगवाई भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक प्रोफेसर अर्चना शुक्ला के साथ-साथ डीन कार्यक्रम, प्रोफेसर विकास श्रीवास्तव, छात्र मामलों की अध्यक्ष- डा. प्रियंका शर्मा और प्रोफेसर सुशील कुमार ने की। समूह ने उन विभिन्न प्रारूपों के कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श किया गया, जिन्हें भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ में स्पिक मैके के तत्वावधान में बड़े समुदाय की भागीदारी के साथ आयोजित किया जा सकता है। इस बैठक की प्राप्तियों को स्पिक मैके के आने वाले कार्यक्रमों में देखा जा सकता है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण अभियान

5 जून, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने परिसर में वृक्षारोपण अभियान चलाकर विश्व पर्यावरण दिवस मनाया। यह पहल पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को पुष्ट करती है जो हरित भविष्य में योगदान को सुनिश्चित करता है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने संकाय, अधिकारी, कर्मचारी और समुदाय के सदस्यों के साथ-साथ वृक्षारोपण किया, जो हरे-भरे परिसर के हरित आवरण को और बढ़ाने के लिए संस्थान के सामूहिक प्रयासों का प्रतीक है। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ पर्यावरण और सततता को बढ़ावा देने और पारिस्थितिक जागरूकता की एक सुदृढ़ भावना विकसित करने के लिए अपनी स्थायी पहलों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

संस्थान के रक्तदान अभियान को सम्मान

14 जून, 2024

विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर, किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) ने नियमित रक्तदान शिविरों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए 'रक्तदान को सम्मान' कार्यक्रम में भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ को सम्मानित किया। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला के मार्गदर्शन में आवासीय चिकित्साधिकारी- डॉ. एस.पी. सिंह, छात्र मामले कार्यालय और समर्पित छात्र टीम 'भविष्य' ने केजीएमयू के सहयोग से पिछले वर्ष नियमित रक्तदान शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया। उत्तर प्रदेश की माननीय राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल द्वारा श्री मयंकेश्वर शरण सिंह, माननीय संसदीय कार्य, चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री और प्रो. सोनिया नित्यानंद, कुलपति, केजीएमयू की उपस्थिति में प्रो. प्रियंका शर्मा ने भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की ओर से यह पुरस्कार प्राप्त किया।

संस्थान के हिन्दी प्रचार-प्रसार को नराकास से सम्मान

20 जून, 2024

संस्थान की राजभाषा पत्रिका, 'पलाश' को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय-2 द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया है। लखनऊ स्थित केंद्र सरकार के 65 कार्यालयों की छमाही राजभाषा प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा बैठक में यह सम्मान दिया गया।

साथ ही, राजभाषा के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए संस्थान के हिंदी अनुभाग को स्मृति चिन्ह से भी सम्मानित किया गया जिसे हिन्दी अधिकारी- एम.के. सिंह के साथ अनुवादक-विश्वनाथ सिंह ने प्राप्त किया।

योग सत्र का आयोजन

21 जून, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने 21 जून 2024 को 'स्वयं एवं समाज के लिए योग' विषय पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इस कार्यक्रम में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शांत वातावरण में योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने अपने संबोधन में समग्र जीवन शैली के रूप में योग के सकारात्मक लाभों की वैश्विक मान्यता पर प्रकाश डाला। उन्होंने मन, शरीर और बुद्धि के स्तर पर सामंजस्य बनाने, समग्र कल्याण और आंतरिक शांति को बढ़ावा देने की इसकी शक्ति पर बल दिया।

शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने में योग के महत्व को दर्शाने के लिए संस्थान ने 15 जून 2024 को 'महिला सशक्तिकरण के लिए योग' के तहत योगाभ्यास प्रतियोगिता का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन को पुरस्कार और भागीदारी प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया गया। संस्थान ने 15 मई से 20 जून 2024 तक परिसर में दैनिक योग अभ्यास सत्र भी आयोजित किए, जिससे एक स्वस्थ और अधिक सामंजस्यपूर्ण शिक्षण वातावरण विकसित करने के उद्देश्य को बल मिला।

स्वास्थ्य सेवाएं व एकीकृत डेटा पर पैनल चर्चा

19 जुलाई, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने हाल ही में विकसित भारत@2047 श्रृंखला के तहत एक पैनल चर्चा आयोजन किया, जिसका विषय 'नवाचार के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा और कल्याण को बढ़ावा' था। पैनल ने एकीकृत स्वास्थ्य डेटा के महत्व, वैश्विक सहयोग का लाभ उठाने और परिचालन दक्षता के लिए अभिनव रणनीतियों पर जोर दिया।

श्री जे.के. दादू, सेवानिवृत्त आईएएसय प्रो. एस. वेंकट, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ, श्री हिमांशु जोशी, निदेशक, नीति आयोग डॉ. प्रीति नंदा सिब्बल, सीईओ और संस्थापक, मेडिस्कूल हेल्थ सर्विसेज और प्रो. क्षितिज अवस्थी, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ सहित प्रतिष्ठित पैनलिस्टों ने भारत में स्वास्थ्य सेवा के भविष्य को आकार देने के लिए प्रौद्योगिकी और सार्वजनिक नीति जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। जैसा कि हमारा देश वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनने की दिशा में प्रयासरत है। ऐसे में, सामाजिक समानता के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

40 वां स्थापना दिवस समारोह

22 जुलाई, 2024

संस्थान ने 40वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने रविवार, 21 जुलाई 2024 को क्रॉस कंट्री रन, तैराकी, पावरलिफ्टिंग, टेबल टेनिस, शतरंज, कैरम और बैडमिंटन सहित कई खेल स्पर्धाओं का आयोजन किया। इन आयोजनों में, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ समुदाय के सदस्यों ने अपनी खेल भावना और सौहार्द का प्रदर्शन किया।

40वें स्थापना दिवस के अवसर पर, भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने संकाय, अधिकारियों व कर्मचारियों और छात्रों के साथ मिलकर परिसर में वृक्षारोपण किया। संस्थान पर्यावरणीय दायित्वों की संस्कृति को विकसित करने और सभी के लिए हरित भविष्य सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने अपना 40वां स्थापना दिवस समारोह के समापन दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उत्कृष्टता, नवाचार और विकास के चार दशकों के प्रतीक के रूप में संस्थान की प्राप्तियों का सक्षम प्रदर्शन हुआ। संस्थान की इस उल्लेखनीय यात्रा को सम्मानित अतिथियों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों एक साथ एकत्र होकर मनाया। सभी ने संस्थान की इस शानदार यात्रा का सम्मान किया। भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने संस्थान के विकास पर विचार करते हुए कहा कि भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ का जीवंत समुदाय हमारी सुदृढ़ नींव का प्रमाण है। सामूहिक प्रयास से, हम 20-25 व्यक्तियों के एक छोटे समूह से एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में विकसित हुए हैं। स्थिरता और सुदृढ़ बुनियादी ढांचे के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के साथ, हम नई ऊंचाइयों को छूने और नवाचार और अनुसंधान में अग्रणी बने रहने के लिए तैयार हैं। समारोह में भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की 40 वर्षों की यात्रा पर प्रकाश डाला गया, जिसमें हमारे समुदाय की उपलब्धियों और आशाजनक भविष्य को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम का समापन एक जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम और 25 वर्षों की समर्पित सेवा प्रदाता कर्मचारियों के लिए सम्मान समारोह के साथ हुआ, जिसने भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ समुदाय को एक हर्षोल्लास पूर्ण उत्सव में एकजुट किया।

30 जुलाई, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के 40वें स्थापना दिवस समारोह के हिस्से के रूप में, इनसेडो इंक के सह-संस्थापक और सीईओ तथा 1996 बैच के प्रतिष्ठित पूर्व छात्र श्री नितिन सेठ के आतिथ्य का सौभाग्य मिला। श्री सेठ ने 'डिजिटल और एआई युग में सफलता के लिए कालातीत मंत्र' पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। अपने अनुभव साझा करते हुए, श्री सेठ ने कहा, 'हम अब डिजिटल और एआई युग में हैं, जहां डिजिटल, डेटा और एआई परिवर्तनकारी बदलाव ला रही है। कार्य की प्रकृति पर, एआई के प्रभाव का व्यक्तियों और संगठनों दोनों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है। इन बदलावों को प्रभावी ढंग से आत्मसात करने के लिए, व्यवसाय के नए नियमों को समझना और सफलता के प्रमुख कारकों की पहचान करना आवश्यक है। कालातीत ज्ञान और अत्याधुनिक तकनीक के बीच तालमेल को अपनाना इस विकसित डिजिटल परिदृश्य में स्थायी सफलता प्राप्त करने की कुंजी है। 'नेतृत्व और एआई के भविष्य पर उनकी वैचारिक अंतर्दष्टि ने सभी को प्रेरित किया, जो उत्कृष्टता और विकास के लिए भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

निवेशक सम्मेलन 2.0

6 अगस्त, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के उद्योग ऊष्मायन केन्द्र (एंटरप्राइज इन्क्यूबेशन सेंटर) ने हाल ही में, आईआईएम लखनऊ नोएडा परिसर में निवेशक सम्मेलन 2.0 का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में सार्वजनिक उपक्रमों, उद्योगों, क रपोरेट्स, एंजेल निवेशकों और देश की विभिन्न वीसी फर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस केंद्र ने पिछले दो वर्षों में 100 से अधिक व्यवसायों के मूल्यांकन को बढ़ाकर 2200 करोड़ रुपये से अधिक कर, सहयोग करने में अपनी सफलता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में ग्राफीसैड्स के सहयोग से इन्क्यूबेशन प्रोग्राम 101 और मीडिया टेक एक्सेलरेशन प्रोग्राम का शुभारंभ शामिल था, जो इस वित्तीय वर्ष में 100 से अधिक स्टार्टअप्स को सहयोग प्रदान कर रहा है। पैनल चर्चाओं में ओएनजीसी के श्री सत्यन कुमार, ऑयल इंडिया के श्री किशोर कुमार दास, एनआईईएसबीयूडी की डॉ. पूनम सिन्हा, नाबार्ड के डॉ. विनोद कुमार और एक्जिम बैंक के श्री सुजीत भाले जैसे उल्लेखनीय वक्ता शामिल थे। ओटीपी वेंचर्स के संस्थापक और प्रबंध भागीदार श्री सुहैल समीर ने एक बेहतरीन सत्र में स्टार्टअप्स के लिए कार्यनीतिक मार्गदर्शन दिया। आयोजन की सफलता और उदार निवेश प्रतिबद्धताएं, स्टार्टअप और निवेशकों के लिए समान रूप से स्थायी विकास को महत्व प्रदान करती हैं।

पूर्व छात्र मिलन समारोह

13 अगस्त, 2024

आईआईएम लखनऊ ने पूर्व छात्र मिलन कार्यक्रम को मुंबई में आयोजित किया। इस समारोह ने हमारे पूर्व छात्रों के बीच स्थायी संबंधों को सुदृढ़ किया, तथा यादगार क्षणों और साझा अनुभवों को याद करने का अवसर प्रदान किया। इस कार्यक्रम में हमारे उल्लेखनीय पूर्व छात्रों की उपस्थिति ने शोभा बढ़ाई, जिनमें श्री अंजन सेन, श्री सूरज कृष्णस्वामी, श्री समीर नेमावरकर, श्री सुमित अग्रवाल और सुश्री अदिति गर्ग शामिल थे।

प्रो. प्रियंका शर्मा, अध्यक्ष, छात्र मामले और प्लेसमेंट, आईआईएम लखनऊय प्रो. विनीत चौहान, आईआईएम लखनऊ पूर्व छात्र संघ के अध्यक्ष और आईआईएम लखनऊ के अभ्यागत सह आचार्य (विजिटिंग एसोसिएट प्रोफेसर), और श्री गिरीश देशपांडे, पूर्व छात्र, 1993 बैच, आईआईएम लखनऊ, इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह कार्यक्रम जुड़ने, एक-दूसरे को सहयोग करने और आईआईएम लखनऊ की विरासत को आगे बढ़ाने के अनेक अवसर प्रदान किए।

राष्ट्र-विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस आयोजन

14 अगस्त, 2024

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर, आईआईएम लखनऊ ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाया, जिसमें विभाजन के दौरान लाखों लोगों द्वारा झेली गई कठिनाइयों और संघर्षों को याद किया गया। संस्थान की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने अपने बचपन की यादें साझा कीं, तथा आज के भारत को परिभाषित करने वाली समृद्ध विविधताओं पर प्रकाश डाला।

संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कर्नल संजीव बख्शी (सेवानिवृत्त) ने कई लोगों द्वारा झेले गए दर्दनाक पलायन और पीड़ा के बारे में चर्चा की, तथा हमें हमारे राष्ट्र पर इसके गहरे प्रभाव का स्मरण किया। नोएडा परिसर में भी इस अवसर पर समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभाजन की भयावहता और हमारे इतिहास से उभरी स्थायी शक्ति और एकता को दर्शाया गया।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्वतंत्रता दिवस को उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया। इस अवसर पर, संस्थान की निदेशक- प्रो. अर्चना शुक्ला ने ध्वजारोहण किया और अपने संबोधन में राष्ट्र पर अपने गौरव बोध को व्यक्त किया।

संस्थान समुदाय प्रगति के साझा दृष्टिकोण की भावना को अपनाते हुए एक साथ दिखा। हम राष्ट्रीय गौरव के इस दिन को मनाते हुए यह भी स्मरण रखते हैं कि आईआईएम लखनऊ एकता, लचीलापन और नवाचार के मूल्यों से प्रेरित है। साथ ही, हम विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं। इस सुअवसर पर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें समुदाय ने बड़ी संख्या में उत्साह के साथ प्रतिभागिता की।

पूर्व छात्र सम्मेलनः संवाद

20 अगस्त, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने संवाद 2024 – प्रमुख पूर्वछात्र सम्मेलन (फ्लैगशिप एलुमनाई कॉन्क्लेव) का आयोजन किया गया। इसके तहत नेटवर्किंग, शिक्षण और अगली पीढ़ी के नेतृत्वकर्ताओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम में उद्यमिता पर एक व्यावहारिक पैनल शामिल था। इस कार्यक्रम में सुश्री तानिया बिस्वास, सह-संस्थापक, सुताय श्री देव बत्रा, सह-संस्थापक, लिक्सेल एंड फ्लेमिंगोय और सुश्री निहारिका जालान, संस्थापक, इंडीकोल्ड शामिल थीं। कार्यक्रम का संचालन सैलरीसे के संस्थापक कार्यालय श्री अभिषेक सिंह ने किया।

इसके बाद, मार्केटिंग पर एक पैनल आयोजित किया गया। इसका संचालन श्री मौसम दत्ता, मुख्य खाता प्रबंधक, आईटीसी ने किया, जिसमें श्री वेंकटाद्री रंगनाथन, सीसीओ, टाटा केमिकल्सय श्री मोहित गोरिसारिया, सह-संस्थापक, सैलरीसेय और सुश्री तान्या जैन, एंटरप्राइज बिजनेस की प्रमुख, अमेजन लंदन शामिल थीं।

इस अवसर पर विशेष आकर्षण पूर्वछात्र पॉडकास्ट श्रृंखला का शुभारंभ किया गया। यह एक नई पहल था, जिसका उद्देश्य सम्मेलन के बाद भी, संवाद जारी रखना और पूर्व छात्र समुदाय के भीतर निरंतर सीखने और जुड़ाव की भावना को बढ़ावा देना था।

संस्थान के पूर्व छात्र मामलों के अध्यक्ष प्रोफेसर यश दौलतानी ने पूर्व छात्रों की अमूल्य अंतर्दृष्टि और सक्रिय भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया, जो संस्थान के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आईआईएम लखनऊ भविष्य के कार्यक्रमों में, अपने सम्मानित पूर्व छात्रों के साथ सहयोग करने, निरंतर जुड़ाव और साझेदारी को बढ़ावा देने के लिए सदैव तत्पर है।

प्रभावी लोकतंत्र हेतु सुदृढ़ राज्यः व्याख्यान आयोजन

24 अगस्त, 2024

आईआईएम लखनऊ ने उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय के सहयोग से कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सैन डिएगो में टाटा चांसलर के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, डॉ. कार्तिक मुरलीधरन द्वारा एक आकर्षक सत्र का आयोजन किया। 'प्रभावी लोकतंत्र के लिए राज्य की क्षमता वृद्धि' शीर्षक का यह व्याख्यान शासन और राज्य विकास की सूक्ष्म बिन्दुओं पर गहन चर्चा का माध्यम बना। इस व्याख्यान में, डॉ. मुरलीधरन की व्यापक शोधपरक नई पुस्तक 'भारत के विकास को गति प्रदान करनाः प्रभावी शासन के लिए राज्य-नेतृत्व मार्गदर्शिका' का संदर्भ दिया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ, लोक नीति हेतु केन्द्र (सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी) के अध्यक्ष प्रोफेसर क्षितिज अवस्थी द्वारा उत्साही स्वागत संबोधन से किया गया। इसके बाद, आईआईएम लखनऊ के डीन संकाय, प्रोफेसर अजय गर्ग द्वारा अतिथियों का अभिनंदन किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्री, श्री असीम अरुण ने वक्ता का परिचय देते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण मंत्रालय के प्रधान सचिव डॉ. हरिओम, विधान सभा के विभिन्न सदस्य और उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

स्वच्छता पखवाड़ा आयोजन

2 सितम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्वच्छता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता के अंतर्गत स्वच्छता पखवाड़ा 2024 मनाया।

संस्थान की निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला ने कार्यस्थल में स्वच्छता के महत्व पर बल दिया और स्वच्छ तथा हरित वातावरण के प्रत्यक्ष व सकारात्मक परिणामों पर प्रकाश डाला। इस संबोधन से संस्थान की स्थिरता और कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता ऊर्जान्वित हुई। संकाय सदस्यों, छात्रों, अधिकारियों और कर्मचारियों सहित सभी समुदाय के सदस्यों ने इस अवसर पर, अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ और हरा-भरा रखने का संकल्प लिया।

पूर्व छात्र रात्रि-भोज आयोजन

11 सितम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने बेंगलुरु में पूर्व छात्रों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया। इस कार्यक्रम ने वर्ष 1997 से 2024 तक के स्नातकों को एकत्र करने का कार्य किया। इस कार्यक्रम में, सार्थक संवाद के साथ ही, अंतर्दृष्टि का आदान-प्रदान किया गया और उल्लेखनीय उपलब्धियों का उत्सव मनाया गया।

इस रात्रि भोज आयोजन में, हमारे उल्लेखनीय पूर्व छात्रः श्री अजितेश पुरी, सुश्री अंकिता सिंह, श्री जीए श्रीवत्सधर शर्मा, श्री गोपाल स्वामीनाथन, श्री मुरलीधर एस, श्री प्रदीप कृष्ण, श्री रतीश त्रेहन आदि ने सहभागिता की। प्रो. विकास श्रीवास्तव, डीन कार्यक्रम और प्रो. प्रियंका शर्मा, अध्यक्ष, छात्र विषयक कार्यक्रम एवं प्लेसमेंट, आईआईएम लखनऊ ने इस यादगार कार्यक्रम के आयोजन और क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दी पखवाड़ा आयोजन

14 सितम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ राजभाषा से संबंधित नीतियों के अनुपालन के लिए सदैव तत्पर रहता है। इसी क्रम में, संस्थान द्वारा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्गत वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप वर्ष पर्यन्त विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता रहता है।

इसी क्रम में, हिन्दी पखवाड़ा-2024 (14-29 सितम्बर तक) का आयोजन प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी उत्साह के साथ किया गया। हिन्दी पखवाड़े के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कविता और निबंध लेखन प्रतियोगिता में कर्मचारियों और अधिकारियों के साथ ही, संकाय सदस्यों तथा छात्रों द्वारा उत्साह के साथ प्रतिभागिता की गई। इसके साथ ही, हिन्दी पखवाड़े के लोकप्रिय कार्यक्रम सांस्थानिक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में, प्रतिभागियों ने ऊर्जा के साथ काव्य पाठ किया और कवि/कवयित्रियों को उत्साहित करने का भी कार्य किया गया।

‘स्वच्छता ही सेवा’ पखवाड़ा

20 सितम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ द्वारा 17 सितंबर से 1 अक्टूबर 2024 तक ‘स्वच्छता ही सेवा’ (एसएचएस) पखवाड़ा मनाया गया, जिसका शीर्षक ‘स्वभाव स्वच्छता - संस्कार स्वच्छता’ था।

संस्थान संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा प्रदान कर, पर्यावरण संबंधी दायित्वों के अनुरूप स्वच्छ और हरित परिसर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पहल 2 अक्टूबर, 2024 को स्वच्छ भारत दिवस के साथ समाप्त हुई। इस कार्यक्रम ने स्वच्छता के साथ ही, अधिक दायित्वपूर्ण भविष्य के लिए आईआईएम लखनऊ के समर्पण को सुदृढ़ किया।

स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) पखवाड़े के एक हिस्से के रूप में, आईआईएम लखनऊ ने सफाई कर्मियों के लिए विशेष टीकाकरण शिविर का आयोजन किया। इस टीकाकरण अभियान ने यह सुनिश्चित किया कि उन्हें आवश्यक स्वास्थ्य रक्षक टीके लगे। उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई क्योंकि स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण के प्रति उनका योगदान श्रेष्ठ है जिसकी सराहना महत्वपूर्ण है।

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने स्वच्छता ही सेवा (एसएचएस) पखवाड़े के तहत सरकारी प्राथमिक विद्यालय, बख्शी-का-तालाब परिसर में स्थित सफाई लक्ष्य इकाई (सीटीयू) में सफाई अभियान चलाया। हमारे सफाई मित्रों ने स्थानीय निवासियों, शिक्षकों और छात्रों के साथ मिलकर एक सफाई योग्य स्थान को चिह्नित किया, जिसे स्वच्छता लक्षित इकाई (सफाई लक्ष्य इकाई) के रूप में नामित किया गया और सावधानीपूर्वक और योजना के साथ इसकी सफाई की गई।

स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन पर समझौता ज्ञापन

23 सितम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ को स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन के क्षेत्र में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के साथ अपने सहयोग की घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस साझेदारी का उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नेतृत्व की तत्काल आवश्यकता को संबोधित करते हुए प्रबंधन सिद्धांतों को अत्याधुनिक चिकित्सा प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करना है।

दोनों संस्थानों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों की उपस्थिति में आईआईएम लखनऊ की निदेशक- प्रोफेसर अर्चना शुक्ला और आईआईटी कानपुर के निदेशक प्रोफेसर मनिंद्र अग्रवाल ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह पहल, स्वास्थ्य सेवा उद्योग की उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए छात्रों को तैयार करने की आईआईएम लखनऊ की प्रतिबद्धता की पुष्टि करती है।

‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान

7 अक्टूबर, 2024

माननीय प्रधानमंत्री जी के विश्व पर्यावरण दिवस पहल के समर्थन में, संस्थान ने ‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान का आयोजन किया गया। इस सार्थक वृक्षारोपण अभियान के माध्यम से, हमने पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

पेड़-पौधे रोपकर, हम एक हरे-भरे भविष्य में निवेश कर रहे हैं और अपने ग्रह की रक्षा के लिए सक्रिय कदम उठा रहे हैं। प्रकृति का पोषण करने और एक स्वस्थ, अधिक टिकाऊ कल बनाने के लिए कदम बढ़ाएं। आपस में सहयोग करें और अपने आसपास को साफ-सुथरा रखें और हरियाली से युक्त बनाने के इस संदेश के साथ, संस्थान के उद्देश्य सुस्पष्ट है।

शिक्षा के साथ औद्योगिक अनुभव

9 अक्टूबर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने टाटा केमिकल्स के प्रतिष्ठित अधिकारियों के साथ एक ज्ञानवर्धक संवाद सत्र का आयोजन किया, जिसमें आर. मुकुंदन, सीईओ और एमडी, और वी. रंगनाथन, सीसीओ जैसे प्रतिष्ठित पूर्व छात्र शामिल थे।

हमारे सम्मानित संकायों की उपस्थिति से चर्चा समृद्ध हुई, जिसमें प्रो. आशुतोष कुमार सिन्हा, रणनीतिक प्रबंधन समूह प्रो. प्रियंका शर्मा, अध्यक्ष, छात्र मामले और प्लेसमेंट प्रो. पुष्पेंद्र प्रियदर्शी, अध्यक्ष, पीएचडी कार्यक्रम प्रो. सौम्या सुब्रमण्यम, अध्यक्ष, वित्त और लेखा विभाग प्रो. सुरेश कुमार जाखड़, अध्यक्ष, पीजीपी श्री विनीत सिंह चौहान, अध्यक्ष, आईआईएम लखनऊ पूर्व छात्र संघ और प्रो. यश दौलतानी, अध्यक्ष, पूर्व छात्र मामले शामिल थे।

इस संवाद में उभरते उद्योग रुझान, अभिनव ऊष्मायन (इनक्यूबेशन) कार्यनीतियों और आपसी विकास के उद्देश्य से भविष्य के सहयोग के अवसरों सहित कई विषयों को शामिल किया गया। अंतर्दष्टि के आदान-प्रदान ने उद्योग के दिग्गजों और अकादमी के बीच सुदृढ़ संबंध स्थापित किए।

सफलता का उत्सवः सफल प्लेसमेंट अभियान

14 अक्टूबर, 2024

संस्थान अपने प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (पीजीपी) के 40वें बैच और कृषि व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम (पीजीपी -एबीएम) के 21वें बैच के लिए ग्रीष्मकालीन नियोजन (प्लेसमेंट) के सफल समापन की घोषणा करते हुए रोमांचित है। इस वर्ष, हमारे प्रतिभाशाली छात्रों को उनकी परिश्रम और समर्पण को दर्शाते हुए 570 से अधिक नौकरियों के प्रस्ताव विभिन्न कंपनियों द्वारा दिए गए।

वैश्विक भर्तीकर्ता ने परामर्श, वित्त और उत्पाद प्रबंधन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अगली पीढ़ी के नेतृत्वकर्ताओं को खोजने के लिए संस्थान का चयन किया। इस नौकरी अभियान में हमारे छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, औसत देय मासिक 1.43 लाख रुपये प्रति माह तक पहुंच गया, जबकि कुल प्रस्तावों का औसत 1.5 लाख रुपये रहा। उच्चतम घरेलू मासिक देय 3.95 लाख रुपये था, और शीर्ष अंतरराष्ट्रीय प्रस्ताव 1.75 लाख रुपये प्रति माह था, जो छात्रों की क्षमताओं की बढ़ती मान्यता का प्रमाण है।

हमें अपने प्लेसमेंट नेटवर्क में विभिन्न नए भर्तीकर्ताओं का स्वागत करते हुए हर्ष हुआ। यह पिछले कुछ वर्षों में हमारे द्वारा बनाए गए संबंधों को और सुदृढ़ करता है कि नए भर्ती कर्ता संस्थान से जुड़ने में तत्पर हैं। हमारे पुराने साझेदारों ने भी आईआईएम लखनऊ पर अपना भरोसा बनाए रखा है, जो संस्थान में विकसित प्रतिभा की गुणवत्ता को दर्शाता है। ये उल्लेखनीय प्लेसमेंट न केवल संख्या को दर्शाते हैं, बल्कि छात्रों के सपनों और आकांक्षाओं को भी दर्शाते हैं क्योंकि वे अपने करियर की रोमांचकारी नई यात्रा पर निकले हैं। प्रत्येक सफल प्लेसमेंट के साथ, आईआईएम लखनऊ प्रतिभा को विकसित करने और व्यवसाय के भविष्य को आकार देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

वेदांता मैराथन : आईआईएम लखनऊ की प्रतिभागिता

23 अक्टूबर, 2024

आईआईएम लखनऊ धावक क्लब ने 20 अक्टूबर, 2024 को नई दिल्ली के जेएलएन स्टेडियम में आयोजित वेदांता हाफ मैराथन में प्रतिभागिता की। 36,000 से अधिक धावक प्रतिभागियों के साथ, यह आयोजन भारत में सबसे बड़ी मैराथन में से एक है।

शोभित पुंडीर और अनूप नायर, जिन्होंने आईआईएम लखनऊ के प्रो. वेंकटरामनैया सद्दीकुटी के साथ 21 किलोमीटर की दौड़ पूरी की। 10 किलोमीटर की श्रेणी के धावक प्रतिभागियों में सागर कुलकर्णी, कनिष्क कार्तिकेय, अवधेश झा, मोनेश सिन्हा, नंदेश रावत, दीपक कुमार और सुदर्शन जैन शामिल थे। आईआईएम लखनऊ का धावक क्लब स्वास्थ्य, सेहत और सौहार्द को बढ़ावा देने, छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को शारीरिक स्वास्थ्य और सामूहिक कार्य के लिए एकजुट करने के लिए प्रतिबद्ध है।

नीदरलैंड में शैक्षणिक सत्र कार्यक्रम

29 अक्टूबर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के सतत प्रबंधन में पीजीपी के दूसरे वर्ष के छात्र समूह ने नीदरलैंड के मास्ट्रिच स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में दो सप्ताह का अंतरराष्ट्रीय दौरा सत्र कार्यक्रम पूरा किया। इस अनुभव ने सतत व्यावसायिक प्रथाओं, वित्त और स्मार्ट सिटी विकास पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की। इस शैक्षणिक दौरे से, वैश्विक स्थिरता से जुड़ी चुनौतियों के बारे में यूरोपीय दृष्टिकोण के प्रति छात्रों की समझ में वृद्धि हुई।

शैक्षणिक सत्रों के अतिरिक्त, अन्य कार्यक्रम में नेडलिन और गुलपेनर ब्रेवरी जैसी कंपनियों के दौरे शामिल थे। इन यात्राओं ने दिखाया कि कैसे डच कंपनियां प्रभावी रूप से सर्कुलर इकोन मी प्रथाओं और स्थानीय सोर्सिंग कार्यनीतियों को लागू कर रही हैं, जो सतत संचालन और सामुदायिक जुड़ाव की दृष्टि से मानक स्थापित कर रही हैं। यह अंतरराष्ट्रीय दौरा सत्र सीखने, परिचय स्थापित करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक मूल्यवान मंच के रूप में कार्य करता है। प्रतिभागियों की सतत प्रबंधन की इस शैक्षणिक यात्रा ने छात्रों के अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने का कार्य किया।

केस प्रतियोगिता : विन्जो बोस में सौमेन मुखर्जी को दूसरा स्थान

30 अक्टूबर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के छात्रः तुषार गौतम और सौमेन मुखर्जी की उपलब्धि पर गर्व करता है जिन्होंने ऑनलाइन गेमिंग क्षेत्र पर केंद्रित भारत की सबसे बड़ी केस प्रतियोगिता विन्जो बोस में राष्ट्रीय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता ने, छात्रों को तेजी से बढ़ते गेमिंग उद्योग की वास्तविक चुनौतियों से निपटने के लिए एक उल्लेखनीय मंच प्रदान किया। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसे माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में अपने मन की बात संबोधन में, इसकी परिवर्तनकारी क्षमता के लिए चिह्नित किया है।

100,000 से अधिक कुशल पेशेवरों और विशाल उपभोक्ता आधार के साथ, भारत का ऑनलाइन गेमिंग उद्योग एक अविश्वसनीय अवसर प्रस्तुत करता है।

संस्थान में टेडेक्स व्याख्यान

18 नवम्बर, 2024

आईआईएम लखनऊ ने हाल ही में 'मानव संभावनाओं की प्रतिध्वनि' शीर्षक के तहत टेडेक्स की व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया, जिसमें नवाचार, लचीलापन और विरासत को आकार देने वाली विविध यात्राओं की खोज की गई। इस कार्यक्रम में, कई आकर्षक व्याख्यान सत्र शामिल थे - डॉन ऑफ आइडियाज (विचारों का सूर्योदय), वेव्स ऑफ चेंज (परिवर्तन की लहर) और लिगेसी इन एक्शन (कार्य में संलग्न विरासत) - जिनमें से प्रत्येक सत्र ने अद्वितीय अनुभवों की परिवर्तनकारी ऊर्जा को प्रदर्शित किया।

रॉ के पूर्व प्रमुख आलोक जोशी ने रणनीतिक दूरदर्शिता पर अंतर्दष्टि प्रदान की, जबकि भारत की पहली महिला जासूस रजनी पंडित ने अपनी प्रेरक यात्रा साझा की। वहीं, ज्वेलबॉक्स की संस्थापक विदिता कोचर ने नवाचार को आगे बढ़ाने के लिए प्रारंभ करने की मानसिकता को अपनाने से संबंधित जीवंत दृष्टिकोण के साथ सत्र का समापन किया।

वेव्स ऑफ चेंज में, मिस एलीट इंडिया 2016, आकांक्षा चौधरी ने अपने पेशे के साथ जुनून को संतुलित करने के अनुभव साझा किया। इसके बाद 'सोलर गांधी' चेतन सोलंकी ने जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई के लिए सशक्त आह्वान किया, जिसमें स्थायी समाधानों की आवश्यकता पर बल दिया गया।

समापन सत्र, लिगेसी इन एक्शन में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली सबसे कम उम्र की भारतीय महिला पर्वतारोही पूर्णा मालवथ ने प्रतिभागिता की, जिनकी कहानी ने श्रोताओं को बाधाओं से मुक्त होने के लिए प्रेरित किया। गायिका व अभिनेत्री संजीता भट्टाचार्य ने जीवंत संगीत के साथ अपनी वार्ता को संयोजित कर कार्यक्रम को स्मरणीय बना दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान के माध्यम से यह बताया कि कैसे सहानुभूति और साझा परंपराएं मानवता को एकजुट करती हैं।

इस मंच पर ये व्याख्यान श्रृंखलाएं दृष्टि, साहस और कार्रवाई का जीवंत उत्सव सिद्ध हुई, जिसने प्रतिभागियों को नए विचारों और परिवर्तनकारी पहलों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

ईवाई पार्थेनन में विजय

2 दिसम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने प्रतिष्ठित क्वेस्ट ईवाई - ईवाई पार्थेनन केस प्रतियोगिता जीतने पर पीजीपी छात्रोंः विराज संचेती, एल श्रुति और उत्कर्ष दीप को बधाई दी, जिन्होंने देश के शीर्ष बी-स्कूलों को पीछे छोड़ दिया।

उनकी कार्यनीतिक सोच और समस्या-समाधान कौशल ने उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार और एक लाख रुपए का नकद पुरस्कार दिलाया। यह उपलब्धि उनके समर्पण का प्रमाण है जो आईआईएम लखनऊ की उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्ट करता है।

रिलायंस टीयूपी सीजन एक्स में जीत

4 दिसम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के पीजीपी के छात्र अमृत सिंह, सौमिल अग्रवाल, भुवनेश कुमार मौर्य और नरेंद्र कुमार कनेरिया की टीम लखनवी रिलायंस टीयूपी सीजन एक्स में विजेता घोषित हुए हैं।

देश की 11,700 से ज़्यादा टीमों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए, संस्थान की टीम ने उच्च रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं का प्रदर्शन किया और 6 लाख का पुरस्कार अपने नाम किया। यह उपलब्धि उनके अभिनव विचार और एकजुट कार्य को दर्शाती है।

दिव्यांग सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार

5 दिसम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ के 2018 बैच के पूर्व छात्र आशुतोष को 3 दिसंबर, 2024 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देश की माननीय राष्ट्रपति- श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया। शिक्षा, कला, संस्कृति और पेशेवर बैंकिंग के क्षेत्र में आशुतोष की असाधारण यात्रा, समावेशिता को बढ़ावा देने के उनके अटूट दृढ़ संकल्प सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

नॉस्टेल्जिया 2024 कार्यक्रम

21 दिसम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने नॉस्टेल्जिया 2024 कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जिसमें 300 से अधिक प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों को आपसी मेलजोल के लिए परिसर में स्वागत किया गया। पहला दिन, उत्सव में एक समारोह के साथ प्रारंभ हुआ, जिसमें आकर्षक सांस्कृतिक प्रदर्शन और परिसर भ्रमण शामिल थे। शाम का समापन लालटेन और दीपों की प्रतीकात्मक रोशनी के साथ हुआ जो एकता, ज्ञान और पूर्व छात्रों और उनके पूर्व शिक्षण संस्थान के बीच स्थायी बंधन का प्रतीक है।

संस्थान की निदेशक प्रो. अर्चना शुक्ला ने पूर्व छात्रों की उपलब्धियों का हर्ष व्यक्त करते हुए, उद्योगों पर उनके प्रभाव की सराहना की और इसे जारी रखने पर बल दिया। पूर्व छात्र मामलों के अध्यक्ष प्रो. यश दौलतानी ने 14,000 से अधिक स्नातकों को एकजुट करने में कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। पूर्व छात्र संघ के अध्यक्ष प्रो. विनीत एस. चौहान ने पूर्व छात्र संघ की प्रेरक विकास यात्रा पर अपने विचार साझा किए।

स्वस्थ भारत सप्ताह

24 दिसम्बर, 2024

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ ने शिक्षा मंत्रालय के स्वस्थ भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप स्वस्थ भारत (फिट इंडिया) सप्ताह का छठा संस्करण मनाया गया। इस पहल ने प्रतिभागियों को स्वास्थ्य चुनौतियों, जागरूकता सत्रों और सहयोगी गतिविधियों के माध्यम से जोड़ने का कार्य किया, जिसका उद्देश्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का समापन संस्थान समुदाय द्वारा अपने दैनिक जीवन में व्यायाम को शामिल करने और स्वास्थ्य की संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रति समर्पण की पुष्टि करने के साथ हुआ।

वर्ष 2024 के दौरान सेवानिवृत्ति गैर-संकाय कर्मचारियों की सूची निम्नानुसार है :

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री महेश चन्द्र शुक्ल	वरिष्ठ, प्रशासनिक अधिकारी
2.	श्री भोला दत्त पांडे	कनिष्ठ सहायक ग्रेड-II
3.	श्री राजीव पांडे	प्रधान वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (जीए)
4.	श्री हरजीत सिंह	एसी ऑपरेटर-सह-मैकेनिक ग्रेड-I (अपग्रेड)
5.	श्री कुर्बान अली	कार्यालय परिचर
6.	सुश्री सविता तिवारी	वरिष्ठ अधीक्षक
7.	सुश्री रजनी गुप्ता	प्रशासनिक अधिकारी
8.	श्री रवीन्द्र कुमार	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
9.	श्री श्रीकृष्ण	माली, ग्रेड 1
10.	श्री अब्दुल मजीद	वरिष्ठ ड्राइवर ग्रेड 1 (अपग्रेड)
11.	सुश्री राशि देवनंदन	सीनियर ड्राफ्ट्समैन, ग्रेड 1
12.	श्री बाबू लाल	अधीक्षक
13.	श्री सुनील कुमार अग्निहोत्री*	सहायक
14.	सुश्री सुचित्रा भटनागर*	प्रशासनिक अधिकारी
15.	श्री अपेन्दर सिंह दुग्ताल*	सहायक
16	श्री कृष्ण मोहन*	कनिष्ठ अभियंता (विद्युत)
17.	सुश्री अंशिका गुप्ता*	कनिष्ठ सहायक ग्रेड-I

*त्यागपत्र

भारतीय प्रबन्ध संस्थान लखनऊ

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT LUCKNOW